field के आधारपर मैंने 'प्रेमकान्त लिखनेका साहस किया है। यों तो हिन्दीमें उपन्यासोंकी बेहद भरमार है, पर शिक्षा-जनक गार्हस्थ्य तथा सामाजिक उपन्योंकी संख्या बहुत कम है। उपन्यास ही ऐसे सुगम और रोचक साधन हैं जिनके द्वारा अच्छे अच्छे आदर्श आसानीसे पाठकोंके हृदय-पटलपर अङ्कित किये जा सकते हैं, और उनका प्रभाव भी स्थायी हो सकता है। मूल पुस्तकमें विलायती जन-समाज और गृहस्थाश्रमका बड़ा मनोरञ्जक चित्र खींचा गया है, पर, यदि उसका अविकल अनुवाद हिन्दी पाठकोंको भेंट किया जाता, तो उनको कुछ भी रोचक न लगता, क्योंकि देश-देशके आदर्श, प्रथा तथा रीति-रवाज जुदा जुदा होते हैं। इसी कारण से मैंने ... केवल आधार मानकर प्रस्तुत पुस्तकको लिखा है। यद्यपि मैं इसे भारतीय पोशाकमें अपने सहृदय पाठकोंके सामने पेश करता हूँ, पर विदेशी झलक इससे बिलकुल ही दूर नहीं हो सकी है। भारतवासियोंकी चित्त-वृत्तिको जिनकेई अरुचिकर लगनेकी सम्भावना नहीं थी, ऐसे स्थल इसमें जैसेके तैसे रहने दिये गये हैं।

अगर यह बिलकुल ही भारतीय साचेमें ढाला जाता, तो इसकी मौलिक गुण—सम्पत्ति नष्ट हो गई होती। इसमें कितने ही स्थल ऐसे थे जो अनुवादके अयोग्य थे, या अनुवादमें परिणत होनेसे जिनमें रोचकताकी मात्रा जरा न रहती—और बहुतसी बातें ऐसी थीं जिनका हमारे समाजमें उपहास किया जाना सम्भव था—इन सबका समावेश नहीं किया गया है। सब पात्रोंकी रहन-सहन, व्यवहार, बात-चीत हिन्दुस्थानी ढङ्गपर बदल दी गई है। जो कुछ लिखा गया है उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। मूल-पुस्तकके चित्ताकर्षक कथानकसे प्रेरित होकर ही मैंने यह अनधिकार चेष्टा की है। यदि इससे घड़ी भर भी पाठकोंका मनोरञ्जन होगा तो मेरी मिहनत वसूल हो जायगी।

आगरा,
२१-१-२०

लेखक।

प्रेमकान्त ।



पहला अध्याय ।

मेरा नाम प्रेमकान्त है। मैं जातिका ब्राह्मण हूँ, और पेशा पुरोहिताई, पंडिताई या जो कुछ समझिए। मैं हूँ तो देहाती, पर पढ़े-लिखे लोगोंमें बैठने उठनेके कारण शहरोंमें मेरी उतनी बेइज्जती नहीं होती जितनी और देहातियोंकी होती है। आज मैं आपको अपनी कुछ रामकहानी सुनानेको तैयार हुआ हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अगर मैं कोई बात ऐसी कह बैठूँ जिसे यूरोपीय सभ्यता-सागरमें नहाया हुआ आधुनिक भारतीय समाज उचित न समझे तो वह मुझे एक उजड्ड देहाती ही समझकर क्षमा करे।

हमेशासे मेरी राय थी कि जिस भले मानसने अपना विवाह करके एक बड़े कुनबेका पालन किया

उसने देश-सेवा की, पर जो अकेला रहकर सिर्फ मर्दु मशुमारीकी वातें मारा किया उसने कुछ न किया। अतएव मुझे भी अपना व्याह करनेकी सूझी और मैंने ऐसी कन्या तलाश की जिसमें सुन्दरताके साथ साथ वहुतसे गुण भी थे। उसका स्वभाव वहुत अच्छा था और आचरणमें तो गावकी वहुत कम लिया उसकी वरावरी कर सकती थीं। हिन्दीकी कितावें वह खासी तौरसे पढ लेती थी और अचार डालने या मुरब्बा तैयार करने और रसोई वनाने में तो उससे वढ़कर कोई था ही नहीं। उसे इस वातका वडा घमंड था कि वह वडी किफायत से घरका खर्च चलाती है, पर यह सव होते हुए भी हमारे धन इकट्ठा न हो सका।

हमारा जो एक दूसरेके साथ घनिष्ठ प्रेम था वह उम्रके साथ ही साथ वढता जाता था। असलमें कोई ऐसी वात ही न थी जिससे हम आपसमें नाराज रहते या दुनिया हमें वुरी लगती। हमारा मकान वडा हवादार था और सव पडोसी खूव मिलनसार थे। साल भरमें वरावर ऐसी वातें

हुआ करती थीं जिनसे देहातमें सबका मन बहलता था और तबीयत हरीभरी रहती थी। हम अकसर अपने पडोसियोंसे मिलने आया करते थे और जो गरीब थे उनकी मदद किया करते थे। न तो हमें कभी लडाई-झगडेका डर हुआ और न किसी बातसे कभी हमारा जी उकताया।

हमारा मकान सडकके किनारे था, इसलिए अकसर हमारे यहा मुसाफिर आकर ठहरा करते थे। अच्छे भोजनोंके लिए हमारे घरका बडा नाम था और इसमें जरा भी झूठ नहीं है कि मैंने कभी किसीसे अपने यहा के भोजनोंकी बुराई नहीं सुनी। हमारे चालीस पुश्त तकके भाई-बंदोंको भी अपना नाता याद था और वे अकसर हमसे मिलने आया करते थे। उनमेंसे बहुतसे तो अन्धे लूले और लंगडे थे। उनकी भाई-बंदीके कारण हमारी कुछ प्रतिष्ठा नहीं बढती थी तथापि तारा यही कहा करती थी कि उनके आनेसे हमारी कोई हानि नही क्योंकि वे हमारे कुनबेके हैं। इस प्रकार हमारे आस-पास बडे धनी तो नही पर बडे मौजी आदमी सदा बने रहते थे, क्योंकि यह मानी हुई बात है कि

मेहमान जितना जियादा गरीब होगा उतना ही मिहमानदारी से खुश होगा। मैं तो उनको देखकर सचमुच बहुत प्रसन्न होता था। कभी कभी हमारे यहाँ कोई बुरे स्वभाव का मेहमान भी आजाता था जिसके ठहरने से हमें तकलीफ होती थी। ऐसा मेहमान जब जाने लगता तब, उससे पीछा छुडानेके लिए, हम उसे कोई चीज उधार जरूर दे देते थे। इससे हमारे चित्तको पूरा सतोष हो जाता था, क्योंकि वह कभी उसे लौटाने न आता था। जिन मेहमानोंसे हमें तकलीफ होती थी, उनसे हमने इसी तरकीब से पीछा छुडा लिया पर हमारे घराने की यह बदनामी कभी न होने पाई कि हमने किसी आए गए को घरसे बाहर निकाल दिया हो।

इस प्रकार बहुत वर्षों तक हम सुख-पूर्वक रहे पर कभी कभी छोटे छोटे झगडे तो हमारे पीछे लग ही जाया करते थे। मदरसेके लडके अकसर हमारे बागीचेमेंसे फल चुरा ले जाया करते थे और बिल्ली दूध औंधा जाया करती थी। कभी कभी कथा सुननेमें जिजमान सो जाया करता था और उसकी स्त्री, तारा के हाथ जोडनेपर, सिर्फ सिर हिला दिया करती थी।

लेकिन इन वातोंसे चिढने की हमारी आदत वहुत जल्दी छूट गई और हमें इनका अभ्यास पड गया।

अपने वाल-वच्चोंको मैंने वडी मिहनतसे पढना लिखना सिखाया था। वे वडे आदमियोंके लडकोंके समान मरियल नहीं थे। उनका शरीर वडा सुडौल और नीरोग था। लडके मजवूत और चालाक थे तथा लडकिया सुन्दरी और सुशीला थीं। वुढापेमे मुझे उनसे वहुत कुछ आशा थी। जव कभी में उनके वीच में वैठता तव राधिकारमण की कहानी कहे विना मुझसे नही रहा जाता। एक वार जव वादशाह इस प्रान्तमे होकर दौरा कर रहे थे तव सव मुसाहिव वडी २ चीजें लेकर उनसे मिलने पहुँचे पर राधिकारमणने केवल अपने वत्तीस वाल-वच्चोंको लाकर वादशाहकी भेंट किया, क्योंकि उनसे अधिक कीमती उसके पास था ही क्या ? इसी प्रकार यद्यपि मेरे छ ही वालक थे तो भी मैं समझता था कि मैंने अपने देश को यह वडी कीमती भेंट दी है, जिसके लिए देश पर मेरा अहसान है। हमारे सवसे वडे लडके का नाम कामिनी-किशोर रखा गया, क्योंकि उसका चाचा डेढ हजार रुपया छोड गया

था इसलिए मैंने उसकी रुचिके अनुसार ही बडे लडके का नाम-करण किया। फिर एक लडकी हुई। उसका नाम, उसकी चाची की रुचिके अनुसार, मैं गिरिजा रखना चाहता था लेकिन तारा उन दिनों उपन्यास पढा करती थी इसलिए उसने जबरदस्ती उस लडकी का नाम प्रभा रख दिया। कुछ दिन पीछे एक लडकी और हुई। मेरी बडी इच्छा थी कि इसका नाम गिरिजा रखूँ पर हमारी एक नातेदार बुढिया इसे बहुत प्यार करने लगी और उसने इसका नाम सुधा रख दिया। इस प्रकार हमारे यहाँ दो औपन्यासिक नाम हो गए। हमारे दूसरे लडके का नाम कुमुद-किशोर हुआ तथा आठ वर्षके बाद दो लडके और हुए।

जब बाल-बच्चे मेरे पास आकर बैठते तब मेरे आनन्द की सीमा न रहती, ताराके घमड का तो कहना ही क्या? जब कोई आया गया आदमी कहता—"पण्डिताइनजी, तुम्हारे बच्चे तो इस देहातमें सबसे सुन्दर हैं"—तब वह यही जबाब दिया करती—"जैसे परमेश्वरने बनाए वैसे हैं। अगर उनका चाल चलन अच्छा होगा तो वे सुन्दर हैं,

क्योंकि सुन्दर तो वही है जिसका चरित्र सुन्दर हो।" यों कहकर वह सबको बुलाकर पास बैठा देती थी। सच बात तो यह है कि सब बच्चे वास्तवमें सुन्दर थे। सिर्फ ऊपरी सुन्दरताको मैं इतना तुच्छ समझता हूँ कि यदि इसका जिक्र सर्व-साधारणमें न होता तो मैं इसे कहता भी नहीं। प्रभा बडी स्पष्टवादिनी, गभीर और नेक थी। सुधा बडी सुकुमार, विनीत और चचल थी। जब मैं गभीर होता था तब प्रभा मुझसे बातचीत किया करती थी। जब मेरा जी खेलमें होता था तब सुधा मेरे साथ खिलवाड किया करती थी। मेरा इरादा बडे लडके से कोई पढने लिखने का रोजगार करानेका था इसलिए उसे मैंने मदरसे में पढनेको भेज दिया था। कुमुदसे मैं कोई व्यापार कराया चाहता था इसलिए उसे घरपर ही थोडी बहुत शिक्षा सब तरहकी देदी थी। लेकिन उन्हें अब तक ससार का जराभी अनुभव न हुआ था। हाँ, एक बात तो जरूर है कि उनमें आपस में बडा मेल था और सभी उदार, सीधे-सादे तथा मिलनसार थे।

दूसरा अध्याय ।

घरका का प्रबन्ध तारा करती थी तथा बाहर का काम-काज और पूजा-पाठ मैं करता था। मुझे व्याज से ३५० रुपए की सालाना आमदनी थी। ये रूपये मैं विधवाओं और अनाथोंको बाँट देता था, क्योंकि मेरी अलग आमदनी घरके खर्चके लिये काफी थी, तथा अपाहज और मुहताजों की सेवा करनेसे मेरे अन्त करणमें बडा सन्तोष होता था। अपने गाँव के सब आदमियोंको मैं खूब जानता था, और जिनका विवाह होचुका था उनसे सयम-शील बनने के लिए तथा जो कुँआरे थे उनसे विवाह करने के लिए सदा अनुरोध किया करता था।

विवाह एक ऐसा विषय था जिसपर मैं हमेशा खुशीसे बातचीत किया करता था और इसके लाभों को समझानेके लिए मैंने कई किताबें भी लिखी थीं। लेकिन एक विशेष सिद्धान्तका मैं विशेष

रूपसे समर्थन करता था। ईश्वरदासके साथ मेरी भी यही राय थी कि एकसे अधिक विवाह करना कदापि उचित नहीं। मनुष्यको एक-पत्नी-व्रती होना चाहिये।

इस विषय पर मैंने कई कितावें भी छपवाईं थी पर वे बिकीं नहीं। इससे मालूम हुआ कि उन्हें थोड़े ही भाग्यवानोंने पढा। बहुत से आदमियोंने इस सिद्धान्त को ठीक न समझा, पर मेरा विश्वास है कि इस विषयपर उन्होंने मेरे समान विशेष विचार नहीं किया। जितना ही अधिक विचार मैं इसपर करता था उतना ही अधिक महत्व-पूर्ण यह मुझे लगता था। इस सिद्धान्त के अनुसार वर्ताव करनेमें तो मैं ईश्वरदाससे भी कुछ आगे बढ गया था। ईश्वरदासने अपनी मरी हुई स्त्रीकी तसवीर लटका रखी थी और उसके नीचे लिख रखा था —"ईश्वर दास की अकेली स्त्री"—पर मैंने अपनी जीती जागती स्त्रीका ही एक चित्र बनवा लिया था और उसके नीचे उसकी बुद्धिमानी, किफायतशारी और आज्ञाकारिता की तारीफ लिख दी थी। तसवीर में चौखटा लगवा कर मैंने उसे अपने कमरे में

टाँग दिया था। इससे कई काम निकले—, स्त्रीको अपने धर्मकी शिक्षा मिली, अच्छे अच्छे काम करने की ओर उसका मन झुका और उसे इस बात का खयाल हो गया कि एक न एक दिन मरना जरूर है।

इन्हीं दिनों हमारा कामिनी अपना पढना समाप्त कर घरको वापस आया। उसका विवाह हमारे गाँवके ही पं० नारायणदासके यहा निश्चित हुआ। नारायणदास कही परदेस में नौकर थे। अठारह वर्ष वाद गाँवको वापस आए थे और खूब रुपया पैदा करके लाए थे। इससे आशा थी कि दहेजमें अपनी लडकी को अच्छा धन देंगे। पर धन तो कोई चीज ही नहीं था। ताराकी राय थी कि उनकी लडकी ललिता, हमारी लडकियोंको छोड, गावकी अन्य सब लडकियोंसे सुन्दर और चतुर है। लडका अपनी पढाई खतम कर ही चुका था, इसलिए वे विवाह करने को राजी होगए, और दोनों कुटुम्बों में ऐसा मेल रहने लगा जैसा विवाह के पहले रहा करता है। इस प्रकार कुछ महीने वीत गए तब विवाह के लिए एक दिन नियत किया गया।

ब्याहकी तैयारी में तारा और लडकियाँ जितनी जुटी रहती थीं उसे मैं कहा नहीं चाहता, पर मेरा ध्यान तो अपनी एक पुस्तक के पूरा करने में लगा हुआ था जिसे मैं अपने सिद्धान्त के समर्थन में लिख रहा था, और जल्दी ही प्रकाशित कराया चाहता था। इस पुस्तक की रचना-शैली भी अच्छी थी और इसमें दलीलें भी बडी मजबूत दी गई थीं। मैंने सोचा कि नारायणदास भी इस सिद्धान्तका समर्थन करेंगे, इसलिये बडे घमड से पुस्तक मैंने उन्हें दिखलाई। लेकिन पीछे मुझे मालूम हुआ कि उनकी राय इससे बिलकुल उलटी है, और इसमे कुछ कारण भी है। कारण यह कि वे उस समय अपना चतुर्थ विवाह करनेका विचार कर रहे थे। इस सबबसे उनसे मेरा दिल खट्टा होगया और कुछ कहासुनी भी हो गई जिससे मुझे यह खयाल होगया कि वे सम्बन्ध तोड देंगे, पर हमने यह निश्चय किया कि विवाह करनेके पहले एक दिन इस विषयपर सबके सामने बहस होनी चाहिये।

आखिर बहस हुई। उन्होंने मुझे नास्तिक बताया और मैंने उनको। इसी दरमियान में जब

बहस बहुत तेजी और जोश से हो रही थी, मेरे एक नातेदारने मुझे बुलाया और चिन्ता-पूर्वक कहा—"जबतक लडके का विवाह न होजाय तब तक के लिए तो कमसे कम बहस मुलतवी कर दो।"

मैंने कहा—"नहीं, सच बातको मैं कैसे छोड सकता हूँ? मैं नारायणदासका चतुर्थ विवाह कदापि न होने दूँगा। जैसे आज इस सिद्धान्तको छोडनेके लिये तुम कह रहे हो वैसे ही कल तुम कहोगे कि अपना सब धन भी छोड बैठो।" इसपर मेरे नातेदारने उत्तर दिया—"अफसोस! तुम्हारा धन तो सब मारा गया। जिस महाजनके पास तुम्हारा रुपया जमा था उसका दिवाला निकल गया। व्याह न होजाने तक यह बात मैं तुमसे नहीं कहा चाहता था पर इसलिये कहे देता हूँ कि इससे शायद कहासुनी करनेमें तुम्हारा जोश कम होजाय। तुम बुद्धिमान् हो। जबतक तुम्हारे लडके को व्याहमें रुपया न मिल जाय तबतक ये बेफायदे की बातें मुलतवी करना तुम खुद ही मुनासिब समझोगे।"

मैंने कहा—"अच्छा, अगर जो तुम कहते हो वही

ठीक है और मुझे घर घर भीख माँगनी ही पड़ेगी, तो भी न तो मैं अपने रास्तेसे हटूँगा और न अपना सिद्धान्त छोड़ूँगा। मैं अभी जाकर सबसे यह बात कहे देताहूँ, लेकिन अपनी दलीलोंपर सदा दृढ़ रहूँगा और जहाँतक हो सकेगा, नारायणदासको अब विवाह न करने दूँगा।"

इस दुर्घटना को सुनकर दोनों कुटुम्बोंके लोगोंको जो दुःख हुआ, उसका वर्णन नहीं हो सकता। नारायणदासने पहले ही सगाई छोडने का इरादा कर लिया था ; अब तो और भी पक्का कर लिया।



तीसरा अध्याय।

अब हमें सिर्फ यह सदेह रह गया कि इस दुर्घटनाकी झूठी खबर तो किसी ने नहीं फैला दी है। पर, यह भी जलदी दूर होगया। हमारे मुख्त्यार का पत्र आया, उससे मालूम हुआ कि जो कुछ हम सुन चुके थे सब ठीक था। मुझे अकेले को तो इस नुकसान की कुछ परवा भी न होती लेकिन चिन्ता कुनवे की तरफसे थी, क्योंकि बच्चोंको शिक्षा नही दी जाती तो वे ससार में किसी कामके न रहते।

लगभग दो हफते बाद मैंने सबका शोक घटाने की कोशिश की, क्योंकि उचित समय के पहले दिलासा देनेसे शोक और बढता है। इन दिनों मैं यही सोचता रहता था कि इन सबके पालन का क्या उपाय किया जाय। रगपुर से तो अब मेरा मन उचट गया था। वहाँ एक-पत्नी-व्रतका प्रचार करने से सब मुझसे नाराज होगए थे और मेरे पीछे

बहुत से झगडे लग गए थे। सिवाय इसके, जिन लोगोंके साथ हम वर्षोंतक सुखसे रहे, धनकी कमी नहीं रही, अपना रुपया अनाथोंको बाँटते रहे, उन्हीं के साथ निर्धन होकर रहना हमें अच्छा न लगा। आखिर कुछ दूरपर बीस रुपए महीनेकी एक नौकरी मिली, जहाँ मैं बिना किसी छेडछाडके सुखसे रह सकता था। मैंने इसे खुशीसे मंजूर कर लिया तथा खेतीसे और रुपया पैदा करनेका निश्चय किया।

इसके बाद मुझे इधर उधर से अपना रुपया समेटनेकी फिक्र पडी। सब देना-पावना निपटानेके बाद छ हजारमें से बारह सौ रुपए बचे। इसलिए अब मेरा ध्यान इस ओर फिरा कि जितना धन है, उसके अनुसार ही मुझे अपने रहन-सहन का प्रबन्ध करना चाहिये, क्योंकि निर्धनतासे बढकर कोई आपत्ति नहीं। मैंने कहा—

"बच्चो, यह तुमसे छिपा नहीं है कि चाहे जितनी बुद्धिमानी से भी हम इस दुर्घटनासे बच नहीं सकते थे। लेकिन, बुद्धिमानी से इसका असर हम पर जरूर कम हो सकता है। अब हम गरीब होगए हैं। हमारी बुद्धिमानी इसी में है कि जिस लायक

हम हैं उसी तरह रहें। ऊपरी शानका खयाल एकदम छोडकर कुसमयमें हमें शान्ति-पूर्वक रहना चाहिए जिससे हमें सुख मिले। गरीब आदमी विना हमारी मददके आनन्द-पूर्वक रहते हैं, फिर हम भी विना उनकी मददके आरामसे रहना क्यों न सीखें? बच्चो, अब हमें बडे आदमियोंकी तरह रहनेका दावा नहीं करना चाहिये। अगर हम बुद्धिमानीसे रहें तो हमारे सुखपूर्वक रहनेके लिये अब भी बहुत कुछ बाकी है। जितना धन बचा है उससे ही हमें सतोप करना चाहिए।"

मेरा बडा लडका पढ लिखकर होशियार होगया था इसलिए मैंने उसे परदेश भेजनेका निश्चय किया, जहाँ धन कमाकर वह अपना भी पालन करे और हमें भी कुछ भेजे। जाते वक्त लडका अपनी मातासे विदा होकर मेरे पास-आशीर्वाद लेने आया। मैंने उसे हृदयसे आशीर्वाद दिया और आठ रुपए भी दिए। फिर मैंने कहा—

"बेटा कामिनी, तुम पैदल जाते हो, अच्छा, मुझसे यह सोटा तो लेते जाओ। यह तुमको रास्तेमें घोडेका काम देगा। और यह एक पोथी

भी लेते जाओ। इसको पढनेसे रास्तेमें तुम्हारे चित्तको बहुत शान्ति मिलेगी। इसमें जो ये दो चौपाइयाँ हैं वे लाख रुपएके बराबर हैं—

"सुनु मुनि तोहि कहौं सह रोसा।
भजहि मोहि तजि सकल भरोसा॥
करौं सदा तिनकी रखवारी।
जिमि बालकहि राखु महतारी॥"

देखो बेटा, परदेशमें बडी होशियारीसे रहना। जिन मित्रोंकी तुमने परीक्षा करली हो उनके साथ निष्कपट व्यवहार रखना, पर हरएक आदमीसे मेल बढाकर उसे मित्र मत समझने लगना। जो कोई कुछ कहे उसे ध्यानसे सुन लेना पर अपना हाल किसीसे मत कहना। जहाँ तक होसके अच्छे साफ-सुथरे वस्त्र पहनना, क्योंकि बहुधा वस्त्रों से ही मनुष्य पहचान लिया जाता है। उधार लेने और देनेकी आदत मत डालना, क्योंकि उधार लेनेसे तो किफायतशारीकी आदत नहीं रहती और देनेसे अपना रुपया वापिस नहीं आता और मित्रतामें फरक आ जाता है। सबसे बढकर बात यह है कि सबके साथ सच्चे हृदयसे बर्ताव करना।

बेटा, इन बातोंपर हमेशा ध्यान रखना। उदास मत हो। साल भरमें एक बार घर हो जाया करना। खुशीसे जाओ। हमारा आशीर्वाद मार्गमें तुम्हारी रक्षा करेगा।"

उसके जानेके बाद हमें भी जाना पडा। अपना पडोस छोडते समय हमें बडा दुःख हुआ। कभी हमारे कुटुम्बी तीन चार मीलसे जियादा आगे नहीं गए थे, इस कारण सत्ताईस मील दूर जानेसे उन्हें भय मालूम हुआ। कितने ही गरीब आदमी बहुत दूर तक हमें पहुँचाने आए। पहले ही दिन हम राजी-खुशी दस मील पहुँच गए और एक कसबेमें सडकके किनारे एक अँधेरी धर्मशालामें ठहर गए। वहाँ हमने धर्मशालाके मैनेजरसे भी अपने साथ भोजन करनेके लिए निवेदन किया। वह फौरन राजी होगया क्योंकि जो कुछ हम उसे भोजन कराते, उसीकी दुकानसे मोल लिया जाता, जिससे उसकी बिक्री अधिक होती। जिस गाँवको मैं जाता था उसे और वहाँके रईस प० लक्ष्मीकान्तको मैनेजर भली भाँति जानता था। उन्हींकी जिमींदारीमें मुझे नौकरी मिली थी। उससे मालूम

हुआ कि लक्ष्मीकान्त सांसारिक सुखोंमें लिप्त हैं और अपना व्याह करनेकी फिक्रमें हैं। यह सुनकर मुझे तो दुःख हुआ पर तारा पर इसका उलटा असर हुआ। जब हम इस प्रकार बातचीत कर रहे थे तभी एक नौकरने आकर मैनेजरसे कहा—"जो मुसाफिर दो दिनसे ठहरा हुआ है उसके पास रुपएकी कमी होगई है। वह अपने दाम नहीं चुका सकता।"

मैनेजरने कहा—"क्या, रुपएकी कमी होगई है? क्यों? कल ही तो उसने एक पुलिसवालेको तीन रुपए रिशवत देकर एक कुत्ते-चोरको छुड़ाया था।" जब नौकरने बहुत कहा तब वह हिसाब निबटानेके लिए बाहर जाने लगा। मैंने उससे प्रार्थना की—"आप कृपाकर ऐसे उदार और दानीसे मेरी भी मुलाकात करा दीजिए।" यह सुनकर वह मुझे भी अपने साथ लेगया। मुसाफिरकी उम्र ४२।४३ वर्षकी थी। वह जरा मैले, पर बढ़िया, कपड़े पहने हुए था। उसका शरीर सुडौल था और चेहरेसे मालूम होता था कि वह किसी विचारमें डूब रहा है। जब मैनेजर उससे बातचीत करके बाहर चला

गया तब मैंने कहा—"आपको जरूरत हो तो मैं रुपये दे सकता हूँ ।"

उसने उत्तर दिया—"आपका बडा अहसान होगा। पिछली बार खर्च करनेमें मुझसे जो असावधानता हुई उसकी बदौलत कमसे कम यह तो मालूम हो गया कि आप सरीखे उदार भी इस संसारमें हैं।" फिर मैंने उससे नाम पूछा तो उसने मदनमोहन बतलाया। मैंने अपने दुर्भाग्यका और नौकरीपर जानेका सब हाल सुनाया। उसने कहा—"यह तो बहुत अच्छी बात है कि आप इस ओर जा रहे हैं। मुझे भी इसी रास्ते जाना है। नदीमें बाढ आ जानेसे मैं दो दिनके लिए ठहर गया था। कल शायद रास्ता बिलकुल साफ होजाय।"

मैंने भी उसका सङ्ग-साथ होनेपर प्रसन्नता प्रकट की। फिर सबके कहनेसे वह हमारे साथ भोजन करनेको राजी हुआ। उसकी बातें ऐसी लच्छेदार थीं कि उनसे जी नहीं उकताता था, पर दूसरे दिन फिर यात्रा करनी थी, इसलिए हमें कुछ रात बीतने पर आराम करनेके लिए लाचार होना पड़ा।

दूसरे दिन सवेरे हमारा प्रस्थान हुआ। हम सब तो घोड़ोंपर थे और मदनमोहन सड़कके किनारे पगडण्डी पर चलने लगा। घोड़े अच्छे न होनेके कारण हम उससे आगे न बढ़ सके। वह हमारे बराबर ही साथ-साथ चलता था। बाढ बिल्कुल दूर नहीं हुई थी, इस कारण हमें एक पथ-दर्शक साथ लेना पड़ा। वह आगे चलता था और हम सब उसके पीछे। रास्ता काटनेके लिए हम समाज-सुधारकी बातें करने लगे, जिन्हें मदनमोहन खूब समझता था। उसकी राय थी कि सम्मिलित-कुटुम्ब-प्रथासे वर्तमान समयमें, समाज की बड़ी हानि है। जिस कुटुम्बमें सब लोग समझदार, शिक्षित और अच्छे स्वभावके हों, वहा तो वास्तवमें इस प्रथासे बहुत लाभ होता है पर अधिकतर कुटुम्ब ऐसे देखे गए हैं, जिनमें उदासीनता और वैमनस्यका पूरा-पूरा अधिकार है। इनका एक कारण यह भी है कि प्रत्येक कुटुम्बमें स्त्रियाँ भिन्न-भिन्न कुटुम्बोंसे आकर एकत्रित होती हैं। उनमें स्वाभाविक स्नेह और सहानुभूति नहीं होती हर एक हुकूमत करना चाहती है। इससे कौटुम्बिक

शान्तिमें वडा विघ्न पडता है और उनकी शिकायतें सुनते–सुनते मनुष्य भी कुटुम्वकी ओरसे उदासीन हो जाते हैं। सवसे अधिक आश्चर्य मुझे इस वात पर हुआ कि यद्यपि उसने मुझसे रुपये उधार लिये थे तथापि वह इतनी मजवूतीसे अपनी रायका समर्थन करता था मानो उलटा उसीने मुझे उधार दिया हो। सडक परसे जो वहुतसी इमारतें दीखती थीं उनका भी परिचय वह देता जाता था। दूरके एक मकानको दिखलाकर उसने कहा—"यह लक्ष्मीकान्त जिमींदारका मकान है। वह वहुत वडा आदमी है। उसके चाचा कमलाकान्तने अपनी सव सपत्ति उसे ही भोगनेको देदी है।" "हैं! क्या लक्ष्मीकान्त उन कमलाकान्तका भतीजा है, जिनकी उदारता सर्वसाधारणमें प्रसिद्ध है?" मदनमोहन वोला—" हाँ, जवानीमें उन्होने उदारता को हद दरजेको पहुँचा दिया था, क्योंकि उस समय उनमें जोश अधिक था। उनके चित्तका झुकाव नेकी और भलाईकी तरफ होनेके कारण ही उनके दरिद्र होनेकी नौवत आगई थी। पहले तो वे सेनामें भरती हुए जहाँ उनका वडा नाम

हुआ। पीछे उन्होंने पढना शुरू किया तो पढे-लिखोंमें भी उनकी खूब कदर हुई। धन खूब था ही, इससे उनके पीछे बहुतसे खुशामदी लग गए। फिर क्या था? उन्हें अपने हानि-लाभकी कुछ परवा न रही और वे सर्व-साधारणके साथ सहानुभूति करने लगे। मनुष्यजातिसे उन्हें प्रेम था। खुशामदियोंसे घिरे रहनेके कारण वे यह न जान सके कि ससारमें धूर्त भी हैं। वैद्यकमें लिखा है कि एक बीमारी ऐसी होती है, जिससे शरीरमें जरा छूनेसे भी दर्द होने लगता है। यह बीमारी बहुतसे आदमियोंके शरीरमें होती है पर उनके मनमें थी। जरासा भी दु ख झूठा हो या सच्चा, उनके मनमें चुभता था और वे दूसरोंके दु खसे हमेशा दु खी रहा करते थे। अतएव जब उनकी इच्छा दु खियोंको दु खसे छुडानेकी हुई तब उनके पास हजारों दु:खी आ पहुँचे। उनकी अत्यन्त उदारतासे धन तो कम हो चला पर उनके स्वभावकी उत्तमतामें कमी न आई—वह तो धनके घटनेके साथ और भी बढने लगी। यद्यपि वे बुद्धिमानोंके समान बातचीत करते थे पर उनके

सब काम मूर्खो केसे थे। याचकोंसे घिर रहने पर भी जब वे उनकी तृप्ति न कर सके तब उन्होंने रुपए देनेके बदले वादे करने शुरू किये, पर किसी को मना करके उसका दिल दुखानेकी हिम्मत उनकी नहीं हुई। इससे उनके आसपास याचकोंके झुंडके झुंड इकट्ठे होगए, जिनको कि वे आपदासे छुडाना तो जरूर चाहते थे पर उनके पास इसका साधन ही नहीं रहा था। कुछ दिन तक तो याचक उनके पीछे रहे पर फिर घृणापूर्वक कटु वचन कह-कह कर चले गए। जैसे जैसे और लोग उनसे घृणा करने लगे उन्हें अपनेसे घृणा होने लगी। उनके मनका आधार खुशामद पर था। अब उस अवलंबके न रहनेसे उनका सब सुख जाता रहा। अब उन्हें संसार दूसरे ही रूपमें दीखने लगा। उनके मित्रोंकी खुशामदने साधारण प्रशंसाका रूप धारण किया—साधारण प्रशंसा शीघ्र ही उपदेशके रूपमें बदल गई। पर जब उपदेशका भी उनपर कुछ असर न हुआ तब उनके मित्रोंने उनकी निन्दा की। अब उन्हें मालूम हुआ कि उनकी नेकीसे लाभ उठानेके लिये जो मित्र

भूमिका।

अग्रेजीके प्रसिद्ध कवि गोल्डस्मिथ से हिन्दी-ठित समाज अपरिचित नहीं है। श्रीयुत् पण्डित ीधर पाठकने Traveller (श्रान्त पथिक),Descr-ed Villege (ऊजड गाव) और Hermit (एकान्त ासी योगी) का अनुवाद प्रकाशित करके हिन्दी-मियोंको उसकी कविताका रसास्वादन करा दिया है। एकान्तवासी योगी वाली कविता उसके लिखे विकार आफ वेकफील्ड" नामक सामाजिक उप-यासके अन्तर्गत है। यह उपन्यास उसकी प्रतिभा-का सर्वोत्कृष्ट नमूना समझा जाता है। इसमें उस समयका सामाजिक चित्र है जब मनुष्य-समुदायका परिवर्तन ग्राम्य-दशासे सभ्यतामें हो रहा था। इसमें गृहस्थाश्रमका महत्व खूब ही दिखाया गया है। घोरसे घोर सङ्कट पडनेपर भी धैर्य-पूर्वक ईश्वरमें दृढ आस्था रखना इसका मूल है। इसमें गोलडस्मिथने हृदय और मनके गुप्त रहस्योंका बडी

सकटमें देखकर एक साथ कूद न पडता, और सामने के किनारे उसे न ले पहुँचता तो उसका पता भी न लगता। फिर धारासे जरा आगे बढकर सब लोग सही सलामत पार पहुँच गए। सबने मदन-मोहनका बडा अहसान माना। लडकीने तो अपने रक्षकका उपकार शब्दोंकी अपेक्षा दृष्टिसे अधिक सूचित किया। ताराने भी कहा कि एक दिन घर बुलाकर इसका अहसान चुकादेंगे। फिर आगेकी सरायमें भोजन और आराम करके मदन-मोहन बिदा हुआ, क्योंकि उसे दूसरे रास्ते जाना था। हम भी चल दिए। ताराने कहा—"मदन मोहन मुझे बहुत अच्छा लगता है। अगर उसका कुल और धन ऐसा हो कि वह हमारे प्रतिष्ठित घरानेमें विवाह कर सके तो अच्छा हो।" उसकी यह बात सुन कर मुझे खूब हँसी आई।



चौथा अध्याय।

हमारी नौकरीकी जगह जिस गाँवमें थी वहाके किसान सुखी थे। उनके सुभीतेकी सभी चीजें वहा मिलती थीं। इस लिए फजूल चीजें खरीदनेके लिए वे शहरको बहुत कम आते थे। पुराने जमाने की सादगी उनमें अबतक थी, क्योंकि वे शहरोंसे बहुत दूर थे। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि किफायतशारी कोई गुण है, क्योंकि उन्हें किफायतसे रहनेकी आदत थी। वे रोज खुशीसे मिहनत करते थे और त्योहार पर खूब आनन्द मनाते थे। हमारे आनेका हाल सुनकर बहुतसे किसान अच्छे अच्छे कपडे पहनकर हमसे मिलने आए, और आदर-सत्कारके साथ हमें गाँवमें लेगए।

हमारे रहनेकी जगह एक ढालू पहाडीके नीचे थी। सामने छोटी सी नदी और पीछेकी तरफ सुन्दर झाडी थी। हरी हरी घास चारों तरफ लग रही थी। मकानका घेरा साफ सुथरा था।

बहुतसे सुन्दर वृक्ष लगे थे। वहीं एक तरफ, हमने हल जोतनेके दोनों बैल बाँध दिए थे। हमारे मकानमें एक ही मंजिल थी, और उसपर छप्पर पडा हुआ था। वहा मेरी लडकियोंने, कुछ दिनों बाद, तसवीरें काढ दी थीं। यद्यपि हमारे बैठने-उठने और रसोईके लिए एकही कमरा था पर इससे हमारा लाभ ही था, क्योंकि वह जाडेके दिनोंमें और भी गरमा जाता था। सफाई तो खूब ही रहती थी। थाली, कटोरी, गिलास, लोटे सब बहुत साफ़ माँजकर, आलमारीमें कतार बाँधकर रख दिए जाते थे। वे इतने अच्छे लगते थे कि हमें बढिया सामानकी जरूरत नहीं थी। तीन कमरे और थे— एक मेरे और तारा के लिए, दूसरा मेरी लडकियोंके लिए, तथा तीसरा सब लडकोंके लिए।

सूर्योदय होनेपर हम सब बडे कमरेमे इकट्ठे होजाते थे। मैं शिष्टाचारका कुछ ऊपरी वर्त्ताव भी उचित समझता था, क्योंकि बिना इसके आपसके मिलने जुलनेमें उदासीनता आजाती है। इस लिए हम आपसमें यथोचित नमस्कार आदि करते थे, और सब मिलकर परमेश्वरकी प्रार्थना करते थे। इसके

अनन्तर मैं कुमुदके साथ अपने काम पर चला जाता था, और तारा तथा लडकियां भोजन बनाती थीं। दोपहरको दो घंटेकी छुट्टी मिलती थी। उसमें हम खानेके लिये घरको आते थे। भोजनमें हमें आधा घटा लगता था। इस बीचमें, तारा और लडकियोंमे तो परिहास हुआ करता था पर मैं लडकेके साथ दुनियादारीकी बातचीत किया करता था।

सूर्यास्त होते ही हम अपना काम बंदकर, फिर घर लौट आते थे। यहाँ भी हमें मिहमानोंकी कमी नहीं थी। कभी कभी हमारा पडोसी बातून किसान फतेचन्द्, कभी अन्धा बासुरी वाला हमारे यहा भोजनोंके लालच आजाते थे। इन आदमियोंके साथ दिल बहलता रहता था। कोई गाता था, कोई बजाता था। इसके बाद, रातको लडके सबक सुनाते थे। जो बहुत साफ और सबसे अच्छा पढता था उसे हफ्तेमें एक बार आधा पैसा किसी फकीरको देनेके लिए मिला करता था।

एकादशीके दिन लक्ष्मीकान्तने मुझे कथा बाँचनेके लिए बुलाया। मैं खान-पान और कपडे-लत्तोंमें सादगी रखनेकी कई बार घरमें नसीहत दे चुका था,

पर उसका कुछ असर नहीं हुआ। मेरा खयाल था कि मेरे कहने सुननेसे लडकियोंको ऊपरी चटक-मटकसे नफरत हो गई है, पर मैंने देखा कि वे मुझसे छिपाकर चुपचाप पहलेके माफिक ही अपनी सब पुरानी चीजोंको पसन्द करती हैं। अबतक उन्हें गोटा, पट्ठा, पैमक और बेल अच्छी लगती थी। पहले कभी मैंने तारासे कह दिया था कि तुम्हें गुलाबी धोती अच्छी लगती है, इस लिये वह अब तक उसे ही पहनती थी।

उनकी चाल ढाल देखकर तो मैं चकरा गया। पहली रातको मैंने लडकियोंसे कह दिया था कि सुबह जलदी कपडे पहन कर तयार हो जाना; क्योंकि श्रोताओंके आनेके पहले ही पहुँच जानेका मेरा नियम था। समयपर सब तैयार तो हो गई पर, जब मैंने उन्हें चलनेके लिए बुलाया तब, मैं क्या देखता हूँ कि वे गोटे किनारीके बडे भडकीले कपडे पहने आरही हैं। उनका घमण्ड देखकर मैं हँसी न रोक सका। मुझे आशा थी कि कमसे कम तारा तो जरा बुद्धिसे काम लेगी, पर उसने तो मुझे और भी निराश किया। मैंने गंभीर हो कर लडकेसे

कहा—"जाओ, एक बैल गाडी किरायपर ले आयो।"

लडकियोंको यह सुनकर बडा आश्चर्य हुआ। मैंने पहलेसे भी अधिक गंभीरतासे फिर लड़केसे गाडो ले आनेको कहा। तब तारा बोली—"सच-मुच तुम हमारी हँसी करते हो। हम पैदल अच्छी तरह चल सकती हैं। हमें गाडीकी क्या जरूरत है? मैंने जवाब दिया—"नहीं, नहीं; तुम्हारी राय ठीक नहीं। हम गाडी बिना नहीं जा सकते। अगर ऐसे रंगीले और चटकीले कपडे पहनकर हम लोग मन्दिर को पैदल जायँगे तो रास्तेमें लडके हमारे पीछे तालियाँ पीटेंगे।"

तारा बोली—"असलमें मुझे हमेशासे यह ख्याल है कि तुम्हें अपने बच्चोंको साफ-सुथरा और अच्छी पोशाकमें देखनेका शौक है।"

इस पर मैंने कहा—"जितनी जियादा तुम चाहो उतनी साफ रह सकती हो, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है। पर, यह तो साफ सुथरापन नहीं; यह तो ऊपरी चटक-मटक है। इस गोटे पट्ठेसे तो सब पडोसी हमसे नफरत करने लगेंगे। सादे

हाथ डालते रहे। अधिक शाम होने पर, वह हमसे विदा हुआ, लेकिन फिर भी आनेका वादा कर गया।

उसके जाते ही ताराने एक कमेटी की ओर कहा, "लक्ष्मीकान्तका हमारे यहाँ आना अच्छा ही हुआ। वह दिन दूर नहीं है कि जब हम बडे आदमी हो जायँगे और ऐसे ऐसे अमीरोंसे बराबरीका दावा करने लगे गे। क्या सबब है कि भगवानदासकी लडकियोंका तो बडे बडे घरोंमें व्याह हो और हमारी का नहीं।"

यह पिछली बात उसने मेरी ओर इशारा करके कही थी, इस लिए मैंने जवाब दिया—"हाँ, कोई सबब नही दीखता। क्या सबब है कि राम बाबू को तो लाटरीमें दस हजार रुपये मिले और हमें कुछ भी नहीं ?"

तारा बोली—"देखो जी, यह बात ठीक नहीं है कि जब मैं कोई बात कहती हूँ तभी तुम उसे हँसीमें उडादेते हो। क्या वह अच्छा आदमी नहीं है? इतना तो चतुर है कि कभी चुप नहीं रहता।"

मैंने कहा—"तुम्हारी राय उसकी बाबत चाहे जो कुछ हो, मेरे मनपर तो उसने अच्छा असर नहीं

डाला । बड़े और छोटे आदमियोंके मेलका नतीजा अच्छा नहीं होता । उसे यह भली भांति मालूम है कि उसमें और हममें बड़ा अन्तर है । हमें अपने बराबर-वालोंसे ही मिलना जुलना चाहिये । जो सिर्फ बड़े बड़े आदमियोंसे मेल करते फिरते हैं उनसे सब नफरत करते हैं । इतने बड़े ज़िमींदारसे बराबरीका दावा करना हमारे हकमें अच्छा नहीं ।"

यह बातचीत जरा जोशसे हुई थी, इसलिए मेरी सलाह हुई कि मिजाज सुधारनेके लिए, आज खानेके कुछ अच्छे पदार्थ बनें । लड़कियोंने खुशीसे बहुतसी चीजें बनाईं । मैंने कहा—"अफसोस ! आज कोई ऐसा मिहमान नहीं है जो हमारे साथ भोजन करे । मिहमानके होनेसे ऐसे पदार्थ और भी स्वादिष्ट लगते हैं ।"

ताराने कहा—"देखो तुम्हारे पुराने मित्र मदन मोहन आ रहे हैं । उन्होंने ही सुधाको डूबनेसे बचाया था ।"

इतने ही में मदनमोहनने मकानमें प्रवेश किया, और सबने हृदयसे उसका स्वागत किया । दिगंबरने उसके आगे मोढ़ा सरका दिया ।

मुझे विचारे मदनमोहनकी मित्रता अच्छी लगनेके दो कारण थे—एक तो वह भी मुझसे मित्रता किया चाहताथा, दूसरे वह हमारा शुभचिन्तक था। उसकी उम्र ४५ वर्षसे जियादा नहीं थी। यद्यपि उसमें कुछ पागलपन सा मालूम होता था पर कभी कभी वह अक़्मन्दीकी बातें भी कह देता था। उसे बालकोंसे बात-चीत करनेका बड़ा शौक था। बालकोंको वह छोटे छोटे आदमी कह कर पुकारता था। उनसे वह कहानियाँ कहा करता था, और उन्हें भजन सुनाया करता था। जब कभी वह बाजार जाता तब उनके लिए कभी आधे पैसेकी सीटी, कभी एक पैसेकी रेवडिया, कुछ न कुछ लेकर ही घर आता। हमारे पडोसमें वह फते-चन्दके यहाँ भी मिहमान होकर रहता। उसने हमारे साथ भोजन किया और बालकोंको कई कहा-नियाँ सुनाईं। हमारे गाँवके मन्दिरमें रातको ११ बजे ठाकुरजीके शयनकी आरती हुआ करती थी। उसके घण्टे से हमें मालूम हुआ कि सोनेका समय होगया। बहुत कहने सुनने पर वह हमारे ही यहाँ सोरहनेको राजी हुआ, पर कोई चारपाई खाली

नहीं थी और इतनी रात गए पीछे कहींसे मँगा भी नहीं सकते थे। मैं इसी चिन्तामें था कि इतनेमें दिगम्वर बोल उठा—"जो भैया मुझे अपने पास सुलालें तो मैं अपनी चारपाई दे सकता हूँ।" तव बालसरूपभी बोला—"अगर भैया मुझे भी अपने पास सुलालें तो मैं भी अपनी चारपाई ख़ाली कर सकता हूँ।"

मैंने कहा—"बच्चो, तुमने ठीक बात कही। तुम्हें यही चाहिये। आदमीका सबसे बडा धर्म है कि वह आए-गएकी ख़ातिर करे। देखो, जानवर अपने स्थानमें आराम करता है, पक्षी अपने घोंसलेमें सोता है, पर आदमी को तो आदमीसे ही काम पडता है। मैं तुमसे बहुत खु श हूँ।"

फिर मैंने तारासे कहा—"इन दोनों बच्चोंको सवेरे ही थोडा थोडा बूरा चाटनेको दो। दिगबर को कुछ जियादा देना, क्योंकि वह पहले बोला था।"

सवेरे मदनमोहन चलागया, पर भोजन करतेमें हमलोगोंमें आपसमें उसीके विषयमें बातचीत होने लगी। मैंने कहा—

"यह आदमी कुछ पागल सा मालूम होता है।

छठा अध्याय।



लक्ष्मीकान्त आनेको था, इस लिए खूब तैयारिया होने लगीं। ताराने पहननेको सबसे अच्छे कपडे निकाले। आखिर जिमींदार अपने दो मित्रोंके साथ आया। तीन चार नौकर भी साथ थे। पर उसने उनसे, थोडी दूरपर जो उसकी कोठी बनी थी, उसमें ठहरनेको कह दिया। तारा तो खुशीके मारे आपेसे बाहर हो रही थी। उसने जिद्द की कि वे सब भी यहीं भोजन करे। इसका नतीजा यह हुआ कि आगे तीन हफ्ते तक हम सबको पेट भर कर खानेको न मिला। पहले दिन मदनमोहनसे मालूम हो गया था कि नारायणदासकी जिस लडकी से हमारे कामिनीकी सगाई छूट गई थी उसीके साथ लक्ष्मीकान्तकी सगाईकी बात-चीत हो रही है। इस कारण उसके स्वागतमें शायद कुछ फीकापन आजाता; पर अचानक हमारे एक

पडोसीने उसके साथी बट्टेलालसे पूछ कर सन्देह दूर कर लिया कि यह बात झूठ है।

लक्ष्मीकान्तके जानेके बाद, हम आपसमें उसके विषयमें बात-चीत करने लगे। ताराने कहा, "देखें, हमारे यहाँ इसके आनेका क्या नतीजा होता है।"

मैंने कहा—"हाँ, क्या खबर! पर मुझे यह बात पसन्द नहीं है। नास्तिक धनीकी अपेक्षा *ईमानदार गरीब आदमी मुझे अच्छा लगता है।* अगर वह जैसा मैं सोचता हूँ वैसाही है तो, ऐसे स्वतन्त्र विचारके आदमीके यहा मेरी लडकी न जायगी।" कुमुद बोला—"लेकिन इस विषयपर आपके विचार उदार नहीं हैं। आदमीके विचार चाहे जो कुछ हों, ईश्वर तो सिर्फ काम करने पर सजा देता है, विचार करने पर नहीं। हर एक आदमीके मनमें हजारों ऐसी बुरी बातें उठती हैं जिन्हें वह रोक नहीं सकता। सम्भव है कि धर्मके विषयमें उसके विचार अपने आप पैदा हो गए हों और उसने कोई राय कायम न की हो। अगर उसके विचार बुरे मान भी लिए जायँ तोभी तो वे विचार ही विचार हैं।

अगर किसी नगरमें शहरपनाह न हो और वहां कोई दुश्मन आ जाय तो क्या हम वहांके शासकको दोष दे सकते हैं ?"

मैंने कहा—"ठीक है, बेटा, पर यदि शासक शत्रुको बुलावे तब तो जरूर ही दोषी है। हमारी राय किसी विषय पर अपने आप भले ही स्थिर हो जाय, पर हम जान बूझकर उसकी परवा न करें और उसे निर्मूल न करें तो हमें जरूर सजा मिलनी चाहिए।"

तारा हमारी दलीलें जरा भी न समझ सकी, तोभी बीचमें बोल उठी—

"हमारे कितने ही बड़े बुद्धिमान नातेदारोंके विचार भी धर्मके विषयमें स्वतन्त्र हैं, पर पतिकी हैसियतसे देखा जाय तो वे लोग बहुत ही अच्छे हैं। और फिर, बहुतसी होशयार लड़कियां भी तो अपने स्वामियोंके विचार सुधार लेती हैं। क्या मालूम हमारी लड़की जाने क्या करले। वह तो इतनी होशयार है कि—"

"क्या,क्या कहा ? वह क्या करेगी ? क्यों उसकी बेहद तारीफ करती हो ? स्त्रियोंको यह स्व

शोभा नहीं देता। उनको तो शरमीली और सकुचीली होना चाहिए।"

दूसरे दिन मदनमोहन फिर हमसे मिलने आया। कई कारणोंसे मुझे उसका बार बार आना बुरा लगता था, पर मैं उसे मना नहीं कर सका। इसमें शक नहीं कि जितनेका ,वह खाता था उससे जियादाका काम कर देता था, क्योंकि जो काम हम करते थे उसे ही वह भी बडी मिहनतसे करने लगता था। इसके सिवा, वह हमेशा ऐसी बातें कहा करता था कि जिनकी वजहसे हमें मिहनत नहीं व्यापती थी। मैंने यह सुन रक्खा था कि वह अपना ब्याह करनेकी फिकर्में है। मुझे उससे अरुचि होनेका यही कारण था। कभी कभी वह मिठाई भी लाया करता था और दिनपर दिन मेल बढाता जाता था।

उस दिन हमने बाहर खेतपर ही खाया पिया। घासपर कपडे सुखा दिए, और मदनमोहनकी बदौलत भोजन आनन्दमय हो गया। चिडियोंकी चह-चहाट कानमें पड रही थी। ठडी ठडी हवा चल रही थी। आसमानमें बादल घुमड रहे थे।

भोजनके बाद सबने मदनमोहनसे कोई भजन सुनानेके लिए प्रार्थना की। बहुत आग्रह करनेपर उसने गाया—

"माई मैंने गोविंद लीनों मोल।
कोई कहे हलका, कोई कहे भारी,
लिया. तराजू तोल।
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महँगा,
कोई कहे अनमोल।
वृन्दावनको कुंजगलीमें, लिया बजाके ढोल।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्वजन्मके बोल"

उसके गा चुकनेपर हम तारीफ करनेको ही थे कि यकायक एक आदमी नजर आया जो कुछ फल-फूल लेकर झाड़ीमेंसे निकल रहा था। वह हमारे जिमींदारका मित्र बट्टेलाल था। उसने हमारे पास आकर कहा—

"गुसाँईजी महाराज, मुझे मालूम नहीं था कि आप इतने पास हैं। मेरे सबबसे आपके रंग में भंग हुआ, इसलिए मैं क्षमा-प्रार्थना करता हूँ।" इतना कहकर वह हमारे सामने बैठ गया और बोला—"पंडित लक्ष्मीकान्तजीने कुछ खाने-पीने

और गाने बजानेका प्रबंध किया है। आज चांदनी रात है। इसी मन्दिरमें जमाव होगा।" फिर उसने मेरे इशारेसे, मदनमोहनसे भी शरीक होनेकी प्रार्थना की, पर मदनमोहनने नामंजूर किया और कहा—

"मुझे आज शामको पाँच मील दूर किसी जरूरी कामसे जाना है।"

उसके नामंजूर करनेसे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।



भोजनके बाद सबने मदनमोहनसे कोई भजन सुनानेके लिए प्रार्थना की। बहुत आग्रह करनेपर उसने गाया—

"माई मैंने गोविंद लीनों मोल।
कोई कहे हलका, कोई कहे भारी,
लिया. तराजू तोल।
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महँगा,
कोई कहे अनमोल।
वृन्दावनको कुंजगलीमें, लिया बजाके ढोल।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्वजन्मके बोल"

उसके गा चुकनेपर हम तारीफ करनेको ही थे कि यकायक एक आदमी नजर आया जो कुछ फल-फूल लेकर झाडीमेंसे निकल रहा था। वह हमारे जिमींदारका मित्र बट्टेलाल था। उसने हमारे पास आकर कहा—

"गुसाँईजी महाराज, मुझे मालूम नहीं था कि आप इतने पास हैं। मेरे सबबसे आपके रंग में भंग हुआ, इसलिए मैं क्षमा-प्रार्थना करता हूँ।" इतना कहकर वह हमारे सामने बैठ गया और बोला—"पंडित लक्ष्मीकान्तजीने कुछ खाने-पीने

और गाने बजानेका प्रबंध किया है। आज चाँदनी रात है। इसी मन्दिरमें जमाव होगा।" फिर उसने मेरे इशारेसे, मदनमोहनसे भी शरीक होनेकी प्रार्थना की, पर मदनमोहनने नामंजूर किया और कहा—

"मुझे आज शामको पाँच मील दूर किसी जरूरी कामसे जाना है।"

उसके नामंजूर करनेसे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।



साथ ले जाया चाहता था। तारा भी राजी हो गई थी, पर मैंने मना कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि दूसरे दिनसे मुझे हर बातका छोटासा जवाब मिलता था और घरमें सब कोई मेरी ओर टेढ़ी निगाहसे देखता था।

अब मुझे मालूम हुआ कि मैंने जितनी बातें परहेज़गारी, सादगी और सतोप पर बडी मिहनतसे कही थीं वे बिलकुल व्यर्थ हुईं। मेरे कहने सुननेसे जो घमण्ड निर्जीव हो गया था वह अब बडे आद-मियोंसे मिलने जुलने पर फिर जीवित हो उठा। पहले मेरी लड़कियोंका भनेला फतेचन्दकी लडकियों के साथ हो गया था, पर उन्हें नीच बताकर लड़-कियोंने उनसे मिलना छोड दिया। अब उनकी सब बातें बडे आदमियोंके समान तसवीरों और किताबोंकी होने लगीं।

लेकिन अगर एक जोशी आकर हमारे दिमागको गंदा न कर जाता, तो ये सब बाते हम सह लेते। उसके आते ही लडकिया मुझसे दक्षिणा माँगने दौडी आईं। असल बात तो यह है कि अक्लमन्दी की बातें कहते कहते मैं उकता गया था इस लिए

मैंने कुछ न कहकर, उन्हें खुश करनेके लिए दो दो पसे देदिये । जब वे पूछ ताछ कर लौटीं तब, मुझे उनके चेहरेसे मालूम हो गया कि उन्हें किसी बडी भारी चीजकी आशा दिलाई गई है। मैंने तारासे पूछा—"कहो, कैसी बीती ! चार पैसे भी वसूल हुए या नहीं ?"

उसने कहा—"देखो, बडी लडकीका ब्याह एक बरसके भीतर किसी जमींदारसे होगा और उसके बाद ही, सुधाका ब्याह किसी रईससे होगा।"

"बस ! चार पैसेमें सिर्फ यही मिला ? चार पसेमें सिर्फ एक जमींदार और एक रईस ! तुम मुझे इससे आधे भी दाम देतीं तो मैं तुमसे एक बादशाह और एक राजाका वादा करदेता। मैं क्या उससे कुछ कम हूँ ?"

इस जोशीके कहनेका बडा असर हुआ। हम सोचने लगे कि अब जलदी हमारे ग्रह अच्छे आनेवाले हैं—जलदी हमारा उदय होगा। इस बातका अनुभव मैंने कई बार किया है कि जो समय हम अपने भविष्यकी आशामें व्यतीत करते हैं वह, आशा पूरी होनेके बादके समयसे, कहीं अच्छा

होता है। इस समय हम जैसे जैसे किले हवा
मना रहे थे उनका मैं कहां तक वर्णन करू
ताराको अच्छे अच्छे सुपने दीपा करते थे। उ
वह सुबह बड़ी खुशीसे सुनाया करती थी। ए
रातको उसने आग जलती देखी, जिससे समझ
कि व्याह पास आगया है। एक बार उसने देख
कि लड़कियोंकी जेबें रुपए अशर्फियोंसे भर रही हैं
जिससे उसने समझा कि उन्हें जलदी धन मिलने
है।

इस घटनाके लगभग एक महीने बाद, हमारे यह
एक न्योता आया। लक्ष्मीकान्तके मित्र घट्टेलाल
हम सबको दशहरेके दिन, कथाके लिए बुलाया
इस पर मैंने देखा कि तारा और लड़किया चुपचाप
कुछ सलाह कर रही हैं और मेरी तरफ़ ऐसी
चितवनसे देखती हैं मानो वे कोई काम मुझसे
छिपाकर किया चाहती हैं। मुझे यह शक हुआ
कि वे तड़क भड़कसे जानेकी सलाह कर रही होंगी।
फिर नौमीके दिन तो वे खुल्लमखुल्ला तैयारी करने
लगीं। शामको जब मैं खा-पी चुका, तब तारा
कहने लगी—"कल शायद मन्दिरमें बड़ी भीड़भाड़

होगी।" मैंने कहा—"हा, होने दो, तुम्हें इसकी क्या चिन्ता है? भीड हो या न हो, तुम्हें कथा सुननेको मिल जायगी।"

"हा, यह तो ठीक है, पर जहा तक हो हमें अपनी मर्यादाके अनुसार जाना चाहिए। न जाने क्या मौका है।"

"तुमने बात तो बहुत ठीक कही। मर्यादाके अनुसार ही मन्दिरमें जाना मुझे अच्छा लगता है। हमें सदा विनीत, प्रसन्न, शान्त और पवित्र रहना चाहिये।"

"हा, हा, यह तो मैं जानती हूँ, पर मेरे कहनेका मतलब यह है कि हमें वहा, जैसे हमारे लायक हो उस प्रकार, जाना चाहिए, न कि मामूली आदमियोंकी तरह।"

"ठीक है। मैं भी यही कहनेवाला था। जानेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि जहांतक हो जल्दी पहुँच जायँ, और कथा शुरू होनेके पहले ही परमेश्वरका ध्यान कर लें।"

"हां, हा, यह तो ठीक है, पर मेरा मतलब यह है कि हमें वहा भले मानसोंकी तरह जाना चाहिए।

मन्दिर मील डेढ मील दूर है। मैं यह नहीं चाहती कि चलते चलते मेरी लडकियोंके पैरोंमें छाले पड जायँ। इसलिए मेरी राय है कि फतेचंदके यहा असबाब लादनेके, जो दो टट्टू हैं उनसे कुछ काम क्यों न लिया जाय? वे विना काम फूले जा रहे हैं और सुस्त हो चले हैं। कुमुद उन्हें जरा ठीक कर देगा तो उनसे हमारा काम खूब निकल जायगा।"

इस बात पर मैं राजी न हुआ। मैंने कहा—"ऐसे टट्टुओंपर जानेसे पैदल जाना बीस गुना अच्छा है। एक अंधा है, दूसरेके पूँछ नहीं है। असबाव लादनेके सिवा शायद कभी उनसे आदमियोंको ढोनेका काम लिया नहीं गया है। दोनों ही बडे बदमाश हैं। और, इसके सिवाय, हमारे घरमें गद्दी भी सिर्फ एक ही है।"

मैंने बहुत कुछ कहा पर मेरा एक भी एतराज न सुना गया। आखिर, मुझे हा कहना पडा। सवेरे मैंने देखा कि उन्हें सिंगार करनेमें देर लगेगी, इस कारण मैं तो चल दिया। उन्होंने कहा कि हम अभी पीछे पीछे आते हैं। चौकीपर बैठकर करीब एक घंटे तक मैंने उनकी राह देखी। आखिर मुझे

क्या हो सकता था ? कुछ देर तक तो ऐसा मालूम हुआ कि हम शरमके मारे जमीनमें धँसे जा रहे हैं।

दोनों हमसे मिलने घर गए थे। पर वहाँ हम नहीं थे, इससे ढूँढते ढूँढते यहाँ आगए। वे अकसर आया जाया करते थे, इस सबबसे उनसे बहुत मेल हो गया था। उन्हें इस बातकी चिन्ता थी कि दशहरेके दिन हमारे घरके लोग मन्दिरमें क्यों नहीं पहुँचे। कुमुदने कहा कि हम गाडी परसे गिर पडे। इस पर उन्होंने चिन्ता प्रकट की, पर जब उसने कहा कि किसी के चोट नही आई तब वे बहुत प्रसन्न हुए। फिर कुमुदने कहा कि हमें बडा डर लगा। इस पर उन्होंने बडा दु ख प्रकाशित किया; पर जब उनसे कहा गया कि रात आरामसे कटी तब वे फिर बहुत खुश हुए। आपसमें बातें होने लगीं। मदनमोहनका आचरण इस समय उचित

आठवां अध्याय।



पाँच दिन बाद शरद पूनोंका त्योहार था। हम अपने पड़ोसी फतेचन्दके यहाँ उत्सवमें शामिल होनेको बुलाए गए। पिछली मुसीबतोंसे अक्ल कुछ ठिकाने आगई थी, नहीं तो हम निरादर-पूर्वक इस न्योतेको नामंजूर करते।

मदनमोहन भी वहा था। उसका मन हँसी-दिल्लगीमें बहुत लगता था। तारा भी हँसीमें भाग लेती थी और मुझे यह देखकर खुशी होती थी कि वह अभीतक अपनेको नौजवान समझती है। इस भाँति हँसी हो रही थी कि बट्टेलाल और रामचन्द्रने उस घरमें प्रवेश किया। इस नई मुसीबतसे हमारी इज्जतको जो धक्का पहुँचा उसका वर्णन नहीं हो सकता। बस, हम यही चाहते थे कि किसी प्रकार मृत्यु हो जाय तो अच्छा। ऐसे बड़े घरानेके मनुष्योंने हमें छोटे आदमियोंके साथ हँसी मजाक करते हुए देख लिया! इससे जियादा बुरा और

क्या हो सकता था? कुछ देर तक तो ऐसा मालूम हुआ कि हम शरमके मारे जमीनमें धँसे जा रहे हैं।

दोनों हमसे मिलने घर गए थे। पर वहाँ हम नहीं थे, इससे ढूँढते ढूँढते यहाँ आगए। वे अकसर आया जाया करते थे, इस सबबसे उनसे बहुत मेल हो गया था। उन्हें इस बातकी चिन्ता थी कि दशहरेके दिन हमारे घरके लोग मन्दिरमें क्यों नहीं पहुँचे। कुमुदने कहा कि हम गाडी परसे गिर पडे। इस पर उन्होंने चिन्ता प्रकट की, पर जब उसने कहा कि किसी के चोट नहीं आई तब वे बहुत प्रसन्न हुए। फिर कुमुदने कहा कि हमें बडा डर लगा। इस पर उन्होंने बडा दु ख प्रकाशित किया, पर जब उनसे कहा गया कि रात आरामसे कटी तब वे फिर बहुत खुश हुए। आपसमें बातें होने लगीं। मदनमोहनका आचरण इस समय उचित नहीं था। वह उनकी तरफसे मुँह फेरकर बैठ गया। जब कोई वाक्य समाप्त होता था तब वह "ऊँह" कर देता था। यह बात हम सबको बहुत बुरी लगी और इससे बात-चीतका मजा बहुत कुछ जाता रहा। वे दोनों आपसमें ही बातें करते थे।

नवां अध्याय।



घर लौट आने पर लडकियोंके व्याहकी सलाह होने लगी। तारा यही चिन्ता करने लगी कि उनका व्याह वडे आदमियोंके यहा कैसे हो। उसने पूछा—

"क्यों जी, आज तो खूब बातें हुई।"

"हा, कुछ तो हुई।"

"क्या कहा? कुछ हुई? कुछ क्यों, खूब हुई? देखो, वे दोनों शायद कहीं व्याह ते करदें। वट्टे-लाल वडा मिलनसार और रामचन्द अच्छा आदमी है।"

"देखो, जो कुछ हो जाय सो ठीक है।"

इस प्रकार छोटासा जवाब देकर मैंने बात टाली, पर मुझे डर था कि यह बात छेडकर वह कुछ और कहेगी। सोही हुआ भी। उसने कहा—"देखो जी, हमें अब वडे आदमियोंके सङ्ग बैठना उठना है, इस लिए अपना बूढा बैल बेचकर पेंठमेंसे एक ऐसा

फिर रामचन्द्रने कहा—"हाँ, मेरी रायमें भी ये बड़े घरानेके लायक हैं। पर विना अच्छी तरह देखे भाले, बड़े घरानोंमें कोई कैसे सगाई करेगा?"

तारा बोली—"इस बात पर मैं राजी हूँ। चाहे सो कोई देख भाल कर ले।"

बट्टेलालने कहा—"क्या जरूरत है? लक्ष्मीकान्त की सिफारिशसे काम चल जायगा।"



नवां अध्याय ।



घर लौट आने पर लडकियोंके ब्याहकी सलाह होने लगी । तारा यही चिन्ता करने लगी कि उनका ब्याह बडे आदमियोंके यहा कैसे हो। उसने पूछा—

"क्यों जी, आज तो खूब बातें हुई ।"

"हा, कुछ तो हुई ।"

"क्या कहा ? कुछ हुई ? कुछ क्यों, खूब हुई ? देखो, वे दोनों शायद कहीं ब्याह तै करदे । बट्टेलाल बडा मिलनसार और रामचन्द अच्छा आदमी है ।"

"देखो, जो कुछ हो जाय सो ठीक है।"

इस प्रकार छोटासा जवाब देकर मैंने बात टाली, पर मुझे डर था कि यह बात छेडकर वह कुछ और कहेगी। सोही हुआ भी। उसने कहा—"क्यों जी, हमें अब बडे आदमियोंके सङ्ग बैठना पडता है, इस लिए अपना बूढा बैल बेचकर [illegible] एक तांगा

टट्टू खरीदना चाहिए जो एक या दो आदमियोंको बिठाकर अच्छी तरह लेजासके और कहीं मिलने जायँ तो देखनेमें भी अच्छा लगे ।"

इस बातका मैंने खूब विरोध किया, पर उसने बहुत ज़िद की । आखिर मैंने हार मानी और यह तै हो गया कि बूढ़ा बैल बेच दिया जाय ।

दूसरे दिन पैंठ थी । मेरा खुद ही उसमें जाने का इरादा था, लेकिन ताराने जिद की और मुझे न जाने दिया । उसने कहा—"तुमको जुकाम हो गया है । तुम आज कैसे जा सकते हो ? कुमुद बड़ा चतुर है, वह सौदा-सुलभ अच्छा करता है । देखो, जितनी कीमती चीजें हमारे घरमें हैं सब उसीकी खरीदी हुई हैं । वह दूकानदारोंसे इतनी देरतक झगड़ता है कि वे किसी प्रकार कम दामोंमें चीजें देकर ही उससे अपना पीछा छुड़ाते हैं ।"

लड़का सचमुच होशियार था, इस लिए मैंने भी उसे यह काम सौंपना चाहा । सवेरे मैंने देखा कि तारा उसे पैंठमें जानेके लिए तैयार कर रही है । थोड़ी देरमें वह बैलको ले कर चलने लगा और मसाला लानेके लिए एक कनस्तर उसने बैलको

पीठ पर बाध लिया। वह धूपछांहके कपडेका कोट पहन रहा था, जो छोटा तो हो गया था, पर इतना नहीं फटा था कि फेंक दिया जाय। उसके जाते ही बट्टेलाल हमारे पास आया और उसने कहा कि पण्डित लक्ष्मीकान्त आपकी बहुत प्रशंसा करते थे। तारा बोली—"देखो, बडे बडे घरानोंमें लडकियोंका व्याह करना कुछ सहज काम नहीं है। बिना मेल बढाए कैसे विवाह हो सकता है?"

तीसरे पहर मदनमोहन आया। वह दोनों बालकोंके लिए एक एक पैसेकी रेवडियां लाया। ताराने उनको लेकर रख लिया और कहा कि जब जरूरत होगी मैं थोडी थोडी देदिया करूंगी। यद्यपि हम उसके उसदिन वाले गँवारू आचरणसे नाराज हो गए थे पर उसका आदर अबतक हमारे यहां कम न हुआ था। मैंने उससे पूछा—"लडकियोंके व्याहकी बातचीत एक बडे आदमीके यहा हो रही है। आपकी क्या राय है?"

उसने कहा—"देखो, खूब देखभालकर सगाई करना।"

उसकी यह बात सुन तारा बहुत नाराज होकर

कहने लगी—"अब मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं रहा है कि तुम हमारे हितैषी नहीं हो। तुम तो काम बहुत देख-भालकर करते हो न? दूसरोंको सलाह देदेकर क्यों काम बिगाडते फिरते हो?"

उसने कहा—"मैं चाहे जैसे करता हूँ, यह तो सवाल नहीं है। मैं देख-भालकर करूं या न करूं पर औरोंको तो सावधान कर सकता हूँ?"

इस पर मुझे शक हुआ कि कहीं तारा गाली न दे बैठे, इस लिए मैंने बात बदल कर कहा—"मुझे बडा आश्चर्य है कि लडका अबतक पैंठसे क्यों नहीं लौटा? बिलकुल शाम होने को आई।"

ताराने कहा—"उसकी चिन्ता मत करो, वह अपना काम करके ही लौटेगा। बिना अच्छे गाहक के वह अपना बैल नहीं बेच देगा। वह ऐसा सौदा करता है जिसे सुन कर लोगोंको अचरज हो। सुनो, उसके सौदा लानेकी एक कहानी तुमसे कहती हूँ जिसे सुनकर तुम हँसीके मारे लोटपोट हो जाओगे। पर सामने तो देखो! वह कुमुद आगया। बैल बेच आया और [illegible] लाया है।"

इतनेमें ही कुमुद पैदल आ पहुँचा। वह पसीनेसे तर हो रहा था और उसने कनस्टर अपनी पीठ पर बाध लिया था। तारा बोली—

"आओ, बेटा, खूब आए। हम तुम्हारी राह देख रहे थे। कहो, हमारे लिए पैंठमेंसे क्या लाए ?"

"मैं आप ही तुमारे लिए आगया हूँ—"यों कह कर उसने कनस्टर जमीन पर रखा। तारा बोली—"यह तो मैं जानती हूँ, पर बैल कहा है ?"

"उसे मैंने पन्दरह रुपए सवा पाच आनेमें बेच दिया।"

"बहुत अच्छा किया। वाह, मुझे ऐसी ही उम्मेद थी। पन्दरह रुपए सवा पाच आने कुछ कम नहीं हैं। लाओ रुपए हमें देदो।"

"मैं नकद रुपए नहीं लाया। मैं तो उसकी चीजें खरीद लाया हूँ। ये देखो, चादीकी कमानीके एक दरजन हरे चशमे। मखमलके केसमें धरे हैं।"

यों कह उसने अपनी छातीमें उरसा हुआ एक बंडल निकाल कर खोला। उन्हें देखते ही तारा बहुत सुस्त होकर कहने लगी—"एक दरजन हरे चशमे! तुम बैल बेचकर हमारे लिए सिर्फ एक दरजन हरे चशमे लाए हो ?"

लड़केने कहा—"मां ! तुमने मेरी बात भी सुनी ? मुझे ये कौड़ियोंमें मिले हैं, नहीं तो मैं इनको लेता ही क्यों ? अकेली चांदीकी कमानियाँ ही दूने दाम में बिक जायँगी ।"

यह सुन ताराको क्रोध आगया। वह बोली, "भाड़में जायँ तुम्हारी कमानियाँ। उनसे तो आधे दाम भी नहीं उठेंगे। सब पुरानी चांदीके भाव बिकेंगी।"

मैंने कहा—"तुम कमानियोंके बेचनेकी कुछ फिक्र मत करो। ये तो मुझे चार आनेकी भी नहीं जँचती हैं। पीतल पर मुलम्मा मालूम होता है।"

तारा बोली—"क्या चादी नहीं ! ये कमानिया चाँदीकी नहीं ?"

मैंने कहा—"नहीं, इनकी चाँदी वैसी है जैसी तुम्हारे चमचे की।"

ताराने कहा—"तो बैल बेचनेसे सिर्फ पीतलकी कमानियोंके एक दरजन हरे चश्मे मखमलके केसमें धरे हुए हमें मिले। आग लगे ऐसे सौदेमें।

मैंने कहा—"तुम गलती करती हो। वह उनको पहचान ही नहीं सकता था।"

तारा झुंझलाकर बोली—"पागलखानेमें भेजो ऐसे सिडीको। यह सौदा लाया है! मुझे दे तो सही। तेरे चशमों चशमोंको चूल्हेमें झोंक दूं।"

मैंने कहा—"तुम फिर गलती करती हो। पीतलके हैं तो क्या है? जैसे हैं उन्हे रहने दो। कुछ न होनेसे तो अच्छे हैं।"

इतनी देरमें कुमुदने उनको आजमा भी लिया। अब उसे मालूम हुआ कि सचमुच उसे बदमाशोंने ठग लिया। मैंने उससे पूछा—"कहो, कुमुद, तुम ने इन्हें कैसे खरीदा?"

उसने जवाब दिया—"मैं अपना बैल बेचकर टट्टूकी तलाशमें घूमने लगा। इतनेमें एक आदमी आया जो देखनेमें बडा भलामानुस मालूम होता था। वह टट्टू दिखानेके बहाने मुझे एक तबूमें ले गया। वहा हमें एक और आदमी मिला जो बहुत बढिया कपडे पहने था। उसने कहा—'क्या आप कृपाकर दो दरजन चशमे गिरवीं रखकर मुझे बीस रुपए उधार दे सकते हैं? इस समय रुपएको

यही ज़रूरत है। आपकी इच्छा हो तो तीस रुपयेमें आप इनको मोल भी ले सकते हैं।'

जो मुझे साथ लिवाले गया था उसने कहा— 'इनको मोल ले लो। बहुत सस्ते हैं। ऐसा अवसर हाथसे न जाने दो।'

यह सुन मैंने फतेचन्दको बुलाकर उससे सलाह की। चशमेवालेने जो मुझसे कहा था वही फतेचन्दसे भी कहा। आखिर हमने मिलकर दोनों दरजन खरीद लिए।"



दसवां अध्याय ।

हमारे कुनवेने ऊपरी भडक दिखानेकी वडी वडी कोशिशें कीं, पर हमेशा कोई न कोई ऐसी मुसीबत आजाती थी कि उनका सब किया कराया धूलमें मिल जाता था । मैंने विचारा कि इतने जलील होनेसे उनमें कुछ अक्ल जरूर आगई होगी । इस लिए मैंने कहा—

"देखो—दुनियामें कोरी शान दिखाने और वडे आदमियोंकी वरावरी करनेसे कितना नुकसान है । जो गरीब होकर वडे आदमियोंसे मेल-जोल वढाते हैं उनसे गरीब तो नफरत करने लगते हैं और वडे आदमी उनका तिरस्कार करते हैं । वडे छोटोंके मेलसे छोटों ही को नुकसान होता है । वडे तो आराम करते हैं और छोटोंको अडचन होती है । अच्छा, दिगवर, वह कहानी तो सुनाओ, जो तुम आज पढ रहे थे ।"

लडका वोला—"एक वार एक वडे डीलडौल

वाले राक्षस और एक ठिंगने आदमीमें मित्रता होगई। वे दोनों साथ रहने लगे। उन्होंने कुछ बहादुरीके काम करनेका इरादा किया। उनकी पहली लड़ाई दो आदमियोंके साथ हुई। ठिंगना बडा जोशीला था। उसने एक आदमीको बडे जोरसे घूँसा मरा। इससे उस आदमीके ज़ियादा चोट तो न आई पर उसने तलवार निकालकर ठिंगनेकी एक बाह काट डाली। इतनेमें ही राक्षसने वहीं उन दोनोंको मार डाला। फिर गुस्सेमें आकर ठिंगनेने भी अपनी बाह काटनेवालेका सिर धडसे जुदाकर दिया। फिर वे दोनों आगे बढे। अब की लडाई तीन लडाक़ आदमियोंसे हुई। ये एक दुखिया स्त्रीको कहीं भगाये लिए जा रहे थे। ठिंगने में अब पहले जैसा जोर नहीं था तोभी उसने इनमेंसे एक आदमीको घूँसा [illegible] आदमीने

साथ व्याह हो गया। फिर भी वे बराबर आगे बढ़ते ही गए। बहुत दूरपर उन्हें डाकुओंका एक गरोह मिला। अबकी बार पहले ही राक्षस सामने आया पर बौना भी उसके पीछे था। बहुत देर तक खूब जोरशोरसे लड़ाई हुई। राक्षस जिससे लड़ने लगता वही उसके हाथ-पैर छू लेता मगर बौना तो कई बार मरनेसे बचा। अन्तमें उन दोनोंकी जीत हुई, पर बौनेकी एक टाँग टूट गई। बौनेकी एक आँख, एक हाथ, और एक टाँग नहीं रही, पर राक्षस का एक बाल भी बाँका न हुआ। राक्षस बोला—"मेरे नाटे वीर, आज तुमने खूब बहादुरी दिखाई। बस, एक बार हमें और सफलता हो जाय फिर हमेशाके लिए हमारा नाम हो जायगा।" बौनेको अब अक्ल आगई थी, उसने कहा—"नहीं मैं अब विजय नहीं चाहता, क्योंकि हर एक लड़ाईमें तुम्हारी तो नामवरी हुई और तुम्हें माल भी मिला, पर मेरे ऊपर तो चोटें ही चोटें पड़ीं।"

मैं इस कहानीका परिणाम बताया ही चाहता था कि मैंने देखा कि तारा और मदनमोहनमें कुछ बहस हो रही है। तारा कह रही थी कि मैं

उसके चले जाने पर हम एक दूसरे की ओर भ्रमसे देखने लगे। तारा अपनेको ही उसके चले जानेका कारण समझकर झेंप मिटानेके लिये बनावटी हँसी हँसने लगी। मैंने कहा—

"क्या कहना है? हमारे यहाँ मिहमानोंकी खातिर करनेका बहुत अच्छा तरीका है! क्या इसी तरह हम उनका अहसान मानते हैं? तुमने मदनमोहनसे बडी बुरी बातें कहीं। तुम्हारी यह बात मुझे बहुत बुरी लगी।" उसने कहा—

"तो क्यों उसने मुझे गुस्सा दिलाया? मैं उसका मतलब खूब जानती हूँ। वह अपना व्याह करनेकी फिक्रमें है। ऐसे नीच आदमीको मैं अपनी लडकी कभी न दूँगी।"

"क्या तुम उसे नीच समझती हो? मुझे तो तुम्हारी राय ठीक नहीं मालूम होती,क्योंकि कभी कभी तो उसकी बातों से ऐसा मालूम होता है कि वह बडा भला मानस है।"

सच पूछिए तो मदनमोहनके चले जाने से एक हर रोज के मिहमान से हमारा पीछा छूट गया. पर

अपनी लड़कियोंका ब्याह बड़े घरानोंमें करूँगी, पर मदनमोहन कहता था कि ऐसा नहीं हो सकता। मैं उनके बीचमें कुछ न बोला। झगड़ा बहुत बढ़ गया। तारा कुछ दलीलें तो दे नहीं सकती थी सिर्फ चिल्लाकर बोलती थी। आखिर बहसमें हार जानेसे अपनेको बचानेके लिए वह बेतरह चिल्लाने लगी। पीछेसे जो बातें उसने कहीं वे तो हम सबको बुरी लगीं। उसने कहा—

"मैं खूब जानती हूँ, बहुतसे आदमी कुछ मतलब से औरोंको बुरी सलाह दिया करते हैं। लेकिन मैं नहीं चाहती कि ऐसा आदमी मेरे घरमें पैर रखे।"

मदनमोहनने गम्भीर होकर कहा—"हां, यह तुमने ठीक कहा। अपना मतलब सभी देखते हैं। मेरा भी कुछ मतलब जरूर है, पर मैं बतला नहीं सकता। जो बातें मैंने कही हैं उनका तो पहले जवाब देदो। पर, अच्छा, तुम्हें मेरा यहां आना ही बुरा लगता है तो, लो, मैं जाता हूँ। जब मैं यहांसे अपने घर लौटूँगा तब तुम्हारे दर्शन और करता जाऊँगा।"

ग्यारहवां अध्याय ।

अब यह बात उठी कि, अगर बड़े आदमियोंके यहाँ ब्याह करना है तो हमें ठाटबाटसे रहना चाहिए। इसके लिए रुपएकी जरूरत पडी। हमने एक कमेटी बैठाई। उसमें घरके सब मेम्बर मौजूद थे। उन्हें यही विचार करना था कि, कौन कौन सा सामान बेचकर रुपया इकट्ठा करना चाहिए। फैसला जल्दी होगया। यह तै हुआ कि, हमारा दूसरा बैल, अकेला होनेसे, हल जोतनेके कामका नहीं है। इस कारण इसे पैंठमें बेचना चाहिए और ठगोंसे बचनेके लिए मुझे खुद पैंठमें जाना चाहिए। यद्यपि बैल बेचनेका यह काम पहले पहल मुझे मिला था, तो भी मुझे पूरी आशा थी कि, मैं इसे भली भाँति कर सकूँगा। किसी आदमीकी बुद्धिमानीकी अटकल उसके साथियोंकी बुद्धिसे की जाती है। मैं हमेशा घर-गृहस्थीमें रहा था, इस कारण अपनी सांसारिक बुद्धिकी बाबत

मेरे मन में यह बात खटकती थी कि, हमने एक मिहमानके साथ ऐसा वर्त्ताव किया।



ग्यारहवां अध्याय।

अब यह बात उठी कि, अगर बड़े आदमियोंके यहाँ ब्याह करना है तो हमें ठाटबाटसे रहना चाहिए। इसके लिए रुपएकी जरूरत पड़ी। हमने एक कमेटी बैठाई। उसमें घरके सब मेम्बर मौजूद थे। उन्हें यही विचार करना था कि, कौन कौन सा सामान बेचकर रुपया इकठ्ठा करना चाहिए। फैसला जल्दी होगया। यह तै हुआ कि, हमारा दूसरा बैल, अकेला होनेसे, हल जोतनेके कामका नहीं है। इस कारण इसे पैंठमें बेचना चाहिए और ठगोंसे बचनेके लिए मुझे खुद पैंठमें जाना चाहिए। यद्यपि बैल बेचनेका यह काम पहले पहल मुझे मिला था, तो भी मुझे पूरी आशा थी कि, मैं इसे भली भाँति कर सकूँगा। किसी आदमीकी बुद्धिमानीकी अटकल उसके साथियोंकी बुद्धिसे की जाती है। मैं हमेशा घर-गृहस्थीमें रहा था, इस कारण अपनी सांसारिक बुद्धिकी बाबत

मेरी राय कुछ बुरी न थी। दूसरे दिन सवेरे जब मैं बैल लेकर दस पन्द्रह कदम चला तब ताराने मुझे सावधानतासे बेचनेके लिए सचेत कर दिया।

मैंने बैलको ले जाकर पैंठमें खड़ा कर दिया, पर बहुत देर तक कोई भी खरीदार न आया। आखिर, एक दलाल आया जो चारों ओरसे देखभाल कर और अन्धा बताकर बिना कुछ दाम लगाए चला गया। दूसरा आया, उसने जोड़ोंमें सूजन बताई। तीसरेने एक फोड़ा बतलाया। चौथेने आँखें देखकर कहा कि, इसकी आँतोंमें कीड़े हैं। अब मुझे इस जानवर पर बड़ी करुणा आई और हर एक खरीदारके आने पर मैं शरमिन्दा होने लगा। जो कुछ किसीने कहा, उसपर मेरा पूरा यकीन तो न हुआ पर मैंने सोचा, कि बहुतसे आदमी जिस बातको कहें, उसे ठीक ही समझना चाहिए। मेरे राजारामकी भी यही राय हुई।

इस प्रकार मैं भौचकसा हो रहा था, कि मेरा एक पुराना मित्र किशोरचन्द्र आया। कहा, "चलो दूकानपर चलकर कुछ खा पी दूकान पर गए। दूकानदारने हमसे

कोठरीमें वैठनेको कहा। हम वहाँ पहुँचे तो देखते क्या हैं कि, एक वहुत वुड्ढा आदमी चन्दन लगाये बैठा है और बडे ध्यानसे रामायणकी चौपाइयां गारहा है। खैर, हम दोनों भी वहीं बैठकर बात-चीत करने लगे। अपने अपने भाग्यके उतार-चढावकी उद्दुतसी बाते हुई। मैंने अपनी किताबोंका हाल भी कहा। पण्डित नारायणदाससे जो झगडा हुआ था, उसका हाल सुनाया। इतनेमें ही एक लडकेने आकर उस वुड्ढेके कानमें कुछ कहा। वुड्ढेने जवाव दिया—"वहुत विनय क्यों करते हो? हमारा धर्म है कि मनुष्य मात्रके साथ भलाई करें। यह लो, अगर मेरे पास और होता तो तुम्हें और देदेता। पर ७५) रुपएसे तुम्हारा काम चल जायगा। लो, लेजाओ।"

लडका आँसू गिराकर कृतज्ञता प्रकाशित करने लगा,पर मेरी कृतज्ञता उससे भी अधिक वढगई। वुड्ढेका परोपकार देख, मेरा चित्त उछल पडा। वह फिर रामायण गाने लगा और हम वातचीत करने लगे। थोडी देरके वाद किशोरचन्द्रने कहा—"मुझे पेठमेंसे [illegible] लेनाहै। अभी लेकर आता

हूँ। प्रेमकान्तजी, बहुत दिन पीछे तो आपके साथ समागम हुआ है। अभी मैं आपका पीछा न छोड़ूँगा।"

मेरा नाम सुनते ही बुड्ढेने कुछ देर तक ध्यानसे मेरी ओर देखा और फिर किशोरचन्द्रके चले जाने पर मुझसे आदर-पूर्वक पूछा—

"क्यों महाशय, क्या आप वही प्रसिद्ध प्रेमकान्त हैं, जो बडे साहससे एकपत्नीव्रतके सिद्धान्तका प्रचार कर रहे हैं और जिन्होंने परोपकारका बीडा उठाया है?"

यह सुन मेरा चित्त फडक उठा। मैंने कहा—"महाराज, आपका परोपकार देखकर जो खुशी मेरे चित्तमें हुई थीं, वह आप सरीखे सज्जनके मुखसे अपना नाम सुनकर और भी बढ गई। आपके सामने वही प्रेमकान्त हाजिर है, जिसे आप प्रसिद्ध बतलाते हैं। यही भाग्यहीन प्रेमकान्त है, जो आजकलके जमानेमें बहु-पत्नीत्वसे झगड रहा है।"

बुड्ढेने कहा—"महाशयजी, क्षमा कीजिए। मैं

मैंने कहा—"नहीं, महाराज, मैं आपकी वार्तो से जरा भी अप्रसन्न नहीं हूँ।"

बुड्ढेने कहा—"महाशय, आप तो हमारे देशके ऐसे कीर्तिस्तम्भ हैं, जो कभी चलायमान न होंगे। आप तो—"

यहाँ मैंने उसे रोक दिया। फिर हमारी और विषयों पर बातें होती रहीं। उसने परमेश्वरकी सृष्टि-रचना पर एक खासा लंबा-चौड़ा व्याख्यान देडाला। आखिर मैंने उससे कहा कि, मैं एक बैल बेचने आया हूँ। उसने कहा कि मैं अपने एक असामीके लिए बैल खरीदने आया हूँ। मैंने अपना बैल लाकर दिखलाया और उसी समय सौदा ठहर गया। उसने पचास रुपएका एक नोट भुनानेको मेरे हाथमें दिया। मैंने कहा—

"मैं यहाँ किसी को जानता बूझता नहीं। मुझे रुपए कौन देगा।"

तब उसने अपने नौकरको बुलाकर कहा—"देखो इस नोटके रुपए गुलाबचन्दकी दूकानसे या और जहाँसे मिले ले आओ।" थोड़ी देर बाद नौकरने आकर कहा कि, मैंने आठ आने कम लेनेको भी कहा,

पर कोई रुपए देनेको राज़ी न हुआ। यह सुन हम सबको बहुत निराश होना पड़ा। तब उस बुड्ढेने पूछा—"आपके गाँवमें जो एक फतेचन्द रहता है, उसे आप जानते हैं क्या?

मैंने कहा—"उसका मकान तो मेरे मकानसे लगा हुआ है।"

यह सुन बुड्ढेने कहा—"अगर यह बात है तो निराश होनेका कोई कारण नहीं। मैं आपको उसके नामकी एक दर्शनी हुण्डी लिखे देता हूँ। वह बड़ा ईमानदार आदमी है। मेरी उससे वर्षोंकी मुलाकात है।"

फतेचन्दके नामकी हुण्डी मैंने रुपएके बराबर ही समझी। हुण्डी पर दस्तखत करके बुड्ढेने उसे मुझे देदिया और वह मेरा बैल लेकर अपने नौकरके साथ चलता बना।

थोड़ी देरके बाद जब मैंने विचार किया, तब मेरे चित्तमें यह बात उठी कि, एक अनजान आदमी से हुण्डी लेना ठीक न हुआ। इसलिए मैंने चाहा कि बैल लौटानेके लिए उसके पीछे दौड़ूँ। पर अब बहुत देर हो चुकी थी, इस लिए मैं ...

चल दिया कि, जिसमें जहाँतक हो जलदी जाकर हुण्डी वसूल करलूँ। फतेचन्द दरवाजे पर बैठा हुक्का पीरहा था। मैंने हुण्डी दिखलाई तो उसने उसे दो वार पढा। मैंने कहा—"नाम तो पढ लिया न! जगमोहन सहाय है।"

उसने कहा—हाँ, नाम तो बहुत साफ लिखा है। मैं उसे जानता भी हूँ। जितने बदमाश आजतक संसारमें हुए हैं उन सबका यह गुरूघटाल है। उसी बेईमानने हमें चशमे बेचे थे। क्या सूरत-शकलसे वह भलामानस नहीं लगता है? क्या उसने बहुतसी सृष्टि रचनाकी बातें नहीं की? वह बड़ा ही बदमाश है। मैं उसे गिरफतार कराऊँगा।"

यद्यपि यह बात सुनकर मेरी अक्ल गुम हो गई, पर मेरी स्त्री और लड़के क्या कहेंगे इसकी मुझे और भी चिन्ता हुई। मुझे घर जानेसे उतना ही डर लगता था जितना कि बिना छुट्टी लिये भाग जाने वाले लड़के को मास्टर के सामने जाने से लगता है। इसलिए मैंने यह सोचा कि, घर पहुँच कर पहले मैं ही नाराज होने लगूँगा।

पर अफ़सोस! जाकर देखता हूँ तो सबके

चेहरों पर सुस्ती छा रही है और तारा रो रही है, क्योंकि उससे मालिन कह गई थी कि बट्टे लाल और रामचन्द्र कह रहे थे कि, ये बड़े आदमियोंके यहाँ हमारी लड़कियों की सगाई नहीं करा सकते। यह बात सुनकर मुझे कुछ आश्चर्य नहीं हुआ। गाँवोंमें कुछ अखबार तो पहुँचते ही नहीं। वहाँ के जीते जागते अखबार तो मालिन, ग्वालिन, मनिहारिन और नाइन को ही समझना चाहिए। येही रोज घर घर आती जाती हैं, और एक जगह की बातको, जहांतक उनका दौरा लगता है वहां तक, अपने इलाके में फौरन फैला देती हैं। अगर इनको किसी बात के न कहने की कसम दिला दी जाय तब तो इस बातके फैलाने में ये ज़रा भी देर न करें। ये जिस घरमें जाकर अपना अड्डा जमा देती हैं वहांसे जब तक बाप-बेटे-और स्त्री-पुरुषमें फूट न करादें तबतक, तिल भर नहीं हटती। इनका यही काम है कि, हर एक गृहस्थके यहाँ जाकर स्त्रियों से उसघर के पुरुषों की बुराई करना और बातें बढ़ा बढ़ाकर कहना। हर एक आदमी के चाल चलन पर ये अपना अन्तिम फैसला देदेती हैं।

"हा, जरूर वर्षा होगी"—यों कह तारा जोरसे हँसने लगी और बोली—"माफ कीजिएगा, मुझे हँसनेकी आदत पड गई है।"

"मैं खुशीसे आपको माफ करता हूँ, पर अगर आपके मुखसे यह बात न निकलती तो मैं इसे हँसी समझता भी नही।"

यह सुन ताराने हम सबसे इशारा करके कहा—"शायद। पर यह तो बतलाइये कि एक छटाँककी कितनी हँसी होती है।"

"मुझे दीखता है कि आज सवेरेसे आप कोई प्रहसन पढ रही हैं, कि हँसीकी तोल पूछती हैं। हँसीकी छटाँकसे तो समझकी आधी छटाँक अच्छी।"

तारा हँसकर बोली—"आपको भले ही अच्छी लगे, पर मैंने तो ऐसे आदमी बहुत देखे हैं जिनमें समझ तो जरा भी नहीं है पर समझते हैं अपनेको ध्यानदासका नाती।"

"तो आपने जरूर ऐसी स्त्रियोंको भी देखा जिनमें समझ तो जरा भी नहीं, पर जो सरस्वतीका अवतार समझती हों।"

इन बातोंसे मुझे झट मालूम होगया कि तारा से

काम नहीं चलेगा । इस लिए मैंने स्वय ही उसे शरमिन्दा करना विचारा । मैंने कहा—"बिना ईमानदारीके समझ और अक्ल दोनों बेफायदा हैं ; बिना ईमानदारीके आदमी किसी कामका नहीं। दोषहीन अनपढ किसान बहुतसे अवगुणोंवाले पढे-लिखों से कहीं अच्छा है। बिना सच्चे हृदयके बुद्धि और साहस किस कामके ?

"सत्य-शील नर सम जगत, नहिं उत्तम कछु आन।"

मदनमोहन बोला—"हा, हा, यह लँगोटिया बाबाका दोहा मुझे भी याद है। यह बुद्धिमानों और बडे आदमियों पर प्रयुक्त नहीं होता। मनुष्यकी इज्जत गुणसे ही होती है, कोई दोष न होनेसे नही। चाहे पढे-लिखेमें अक्ल न हो, राजनीतिज्ञमें घमण्ड हो, और शूरवीरमें क्रूरता हो, लेकिन क्या हम इनकी अपेक्षा एक नीच मजदूरको अच्छा समझें, जो निन्दा और स्तुतिके बिना जीवन बिताता है ? इसका तो यह अर्थ है कि, बडेबडे चित्रकारोंकी तसवीरें तो हम, कुछ दोष होनेके कारण, देखें भी नहीं और जराजरासे बच्चोंके बनाए खाके निर्दोष होनेके कारण पसन्द करें । "

"हां, जरूर चर्चा होगी"—यों कह तारा जोरसे हँसने लगी और बोली—"माफ कीजिएगा, मुझे हँसनेकी आदत पड गई है।"

"मैं खुशीसे आपको माफ करता हूँ, पर अगर आपके मुखसे यह बात न निकलती तो मैं इसे हँसी समझता भी नहीं।"

यह सुन ताराने हम सबसे इशारा करके कहा—"शायद। पर यह तो बतलाइये कि एक छटाँककी कितनी हँसी होती है।"

"मुझे दीखता है कि आज सवेरेसे आप कोई प्रहसन पढ रही हैं, कि हँसीकी तोल पूछती हैं। हँसीकी छटाँकसे तो समझकी आधी छटाँक अच्छी।"

तारा हँसकर बोली—"आपको भले ही अच्छी लगे, पर मैंने तो ऐसे आदमी बहुत देखे हैं जिनमें समझ तो जरा भी नहीं है पर समझते हैं अपनेको ध्यानदासका नाती।"

"तो आपने जरूर ऐसी स्त्रियोंको भी देखा होगा, जिनमें समझ तो जरा भी नहीं, पर जो अपनेको सरस्वतीका अवतार समझती हों।"

इन बातोंसे मुझे झट मालूम होगया कि तारा ने

"अगर बहुतसे गुण हों और एकाध दोष हो, तब तो यह बात ठीक हो सकती है, पर जब किसी आदमीमें गुण और दोष दोनोंका पूरा सन्निपात हो, तब तो वह घृणाका पात्र जरूर है।"

"शायद ही कोई ऐसा राक्षस हो कि जिसमें गुण और दोष दोनोंकी प्रचुरता हो। मैंने तो आज तक कोई भी ऐसा आदमी नहीं देखा। हा, इसके विपरीत तो सैकड़ों देखे हैं।"

"आपका कहना ठीक है, पर मैं अभी आपको एक ऐसा आदमी दिखला सकता हूँ"—इतना कह कर मैं एकटक उसकी ओर देखने लगा और चिल्ला-कर कहने लगा—"और मुझे बड़ी खुशी है, कि मैंने उसकी बदमाशीकी थाह पा ली। अच्छा, देखिए तो, आप इस बण्डलको पहचानते हैं?" उसने निडर होकर कहा—"हा, यह मेरा है। मुझे बहुत खुशी है कि, यह आपको मिल गया।"

"क्या आप इस चिट्ठीको भी पहचानते हैं? देखिए, घबराइए नहीं, मेरे चेहरेकी तरफ देखिए। क्या आपने इसे पहचाना? आपने इसे लिखकर नीचता और कृतघ्नताका काम किया या नहीं?"

क्रोधमें आकर उसने जवाब दिया—"और आपने इसे खोलकर नीचताका काम नहीं किया! आपको खबर नहीं है कि, इसके लिए मैं आपको जेल भिजवा सकता हूं? सिर्फ मुझे हाकिमके सामने जाकर हलफसे कहना पडेगा। फिर देखियेगा, आपको यहीं इसी दरवाजेसे सिपाही पकड ले जायँगे।"

यह बात सुनकर तो मुझे बडा जोश आया। मैं आपेमें न रहा। मैंने गर्जकर कहा—"कृतघ्न! राक्षस! अभी यहाँसे काला मुँह कर। ऐसे बेईमानोंका यहा काम नहीं। जा, मुझे अपनी सूरत मत दिखला—" यों कह कर उसका बण्डल मैंने उसके सामने फेंक दिया। उसने हँसकर उसे उठा लिया और चलता बना। ताराको यह बात बहुत बरी लगी कि, हम उसे शरमिन्दा न कर सके। मैंने कहा—"नीच आदमियोंको शरम न आवे तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। उन्हें तो अच्छा काम करनेमें शरम आती है। बुरे कामसे तो उनका रोम रोम प्रसन्न होता है।"

बारहवां अध्याय ।

मदनमोहनका आना बन्द होनेसे किसीको असन्तोष नहीं हुआ । हमारा जिमींदार अकसर हमारे यहा आने लगा । उसमें चाहे जितनी बुराइयाँ हों, मगर हमें उसमें कोई भी ऐब न दीख पडा, क्योंकि हमें उसके साथ अपनी लड़कीकी सगाई करनी थी। .. .. उसके सामने लडकियोंकी बहुत तारीफ किया करती थी । अगर कचौड़ियाँ खस्ता होती थीं तो वह कहती थी कि उन्हें लडकियोंने बनाया है , अगर अचार अच्छा होता था, तो उसे भी लडकियोंने डाला था, अगर तरकारी अच्छी होती थी, तो उसमें भी मसाला लडकियोंकी सलाहसे डाला गया था । ताराको यक़ीन होगया था कि, वह हमारे यहाँ अपनी सगाई करना चाहता है, पर अपने चाचासे डरता है ।

एक बार हमारे घरकी स्त्रिया अपने पडोसमें फतेचन्दके यहाँ मिलने गई । वहाँ उन्होंने देखा, कि

उसके कुनबेके सब आदमियोंने एक चित्रकारसे चार आने चित्रके हिसाबसे अपनी अपनी एक तसवीर बनवाई है। अब हमारे यहा भी सलाह हुई, कि तसवीरें बननी चाहिए। मैंने बहुत मना किया, पर मेरी किसीने न सुनी। आखिर मुझे चित्रकारको बुलाना पडा। अब उसे यह बात सिखलानी बाकी रही, कि हमारी तसवीरें फतेचन्दकी तसवीरोंसे अच्छी कैसे बनें। फतेचन्दके यहा कुल सात तसवीरें बनवाई गईं थीं और सबके हाथमें एक एक सन्तरा था। हमारे यहा बहुत बहस होनेके बाद, यह तै हुआ कि, हमारा सबका गरोह एकही चित्रमें रहे। इसमें दाम भी कम लगेंगे और यही आजकलका फैशन भी है। सन्तरा हाथमें लेनेकी चाल तो हमारी रायमें पुरानी होगई थी। इसलिये सिर्फ मैंने अपने सिद्धान्तकी पुस्तकें हाथमें लेलीं। आखिर आठ दिनमें चित्र तैयार हुआ। सबने उसको बहुत पसन्द किया; पर वह इतना बडा बना कि, उसे बरामदेमे लटकाना पडा। उसे देख देखकर हमारे सब पडोसी हमपर खूब हँसा करते थे। इससे हमारा घमण्ड बहुत टूटा।

ताराने कहा कि, अबकी बार लक्ष्मीकान्त आवे, तो उससे पूछना चाहिये कि, वह हमारी लड़कियोंकी सगाई कहीं करा देगा या नहीं। इसी तरह बात-चीतमें उसका मंशा भी मालूम हो जायगा। इस लिये जब वह आया तब लड़कियां वहांसे हटकर पासके कमरेमें चली गईं, जहांसे वे सब बातें सुन सकें। ताराने युक्तिपूर्वक इस प्रकार बात छेड़ी—

"फतेचन्दकी लड़कीकी सगाई मुन्शी रामप्रसाद के लड़केसे हुई है। कैसा अच्छा वर मिला है?"

"हां।"

"बड़े आदमियोंकी लड़कियां तो बड़े घर जाती ही हैं, आफत तो गरीबोंकी है। आजकल जमाना ऐसा है कि, रूप-रङ्ग, गुण-अवगुण कोई नहीं देखता; सब रुपया चाहते हैं। यह कोई नहीं देखता कि, लड़की कैसी है; सब यही देखते हैं, कि उसके पास क्या है।"

"हां, जमाना तो ऐसा है, पर यह बात मुझे पसंद नहीं है।"

"अच्छा, तो, क्या आप कृपा कर हमारी लड़की के लिए कोई लड़का तलाश न कर देंगे?

उसकी उम्र व्याह के लायक हो चुकी है और वह पढ़ना लिखना भी काफी सीख चुकी है। "

"उसके लिए तो कोई पढ़ा-लिखा और रुपए-वाला लड़का होना चाहिए।"

"आपकी तलाश में क्या ऐसा कोई नहीं है?"

"नहीं, ऐसा तो कोई नही। आपकी लड़किया बड़े घराने के लायक हैं।"

"अजी, हम तो एक लड़कीका व्याह आपके उस आसामी के साथ किया चाहते हैं, जिसकी मा अभी मर गई है। वही वल्लभदेव। है तो वह खाता पीता। आपकी क्या राय है?"

"मेरी राय तो नही है। ऐसे गँवारको अपनी लड़की मत देना। बहुतसी बातें ऐसी हैं कि लड़की वहा नही जाय।"

"अच्छा, ऐसी क्या बातें हैं? हमने तो कुछ सुनी नहीं।"

"आपने नहीं सुनीं, यह दूसरी बात है। कमसे कम मेरी राय तो यही है।"

इसी प्रकार बातचीत होनेके बाद लक्ष्मीकान्त चला गया। हमलोग इन बातों का कुछ नतीजा

न निकाल सके। आखिर यह निश्चय हुआ, कि वल्लभदेवसे बातचीत जारी रक्खी जाय।

वल्लभदेव एक ईमानदार, बुद्धिमान् और सुखी मनुष्य था। उसकी ओरसे बातचीत हो रही थी, पर हमने कुछ जवाब नहीं दिया था। दो दिन बाद अचानक उसके चाचा और लक्ष्मीकान्तकी हमारे यहा मुठभेड हो गई। वे दोनों एक दूसरे को थोडी देर तक क्रोधभरी दृष्टिसे देखते रहे। पर वल्लभदेव के चाचाको उसका कुछ किराया तो देना ही न था, इसलिए उसने लक्ष्मीकान्तके क्रोधकी जरा भी परवा न की। ताराने भी उसीकी जियादा खातिर की। इस कारण हमसे चिढकर लक्ष्मीकान्त चल दिया। मैंने कहा "तुमने देखा, लक्ष्मीकान्त कैसा आदमी है? वह चाहे तो तुम्हारी बात मान सकता है, पर कुछ कहता ही नहीं। इससे साफ जाहिर है, कि वह ब्याह करना नहीं चाहता।"

"कुछ सबब होगा। उसकी बातोंसे तो यही मालूम हुआ, कि वह सीधा सच्चा आदमी है।"

इसके बाद हमने निश्चय किया, कि अबकी बार लक्ष्मीकान्त आवे तो उसके सामने यह तै किया

जाय, कि वल्लभदेवके साथ व्याहका मुहूर्त किस दिन अच्छा बनता है। कई दिन बाद वह आया। उसके सामने ही यह निश्चय किया गया, कि इस महीनेमें व्याह कर देना चाहिए।

इससे लक्ष्मीकान्तकी चिन्ता और भी बढ़ी। एक हफ़ता हो गया पर उसने कुछ कहला कर नहीं भेजा। दूसरा सप्ताह भी योंही बीता और तीसरा भी। मुझे तो इससे बहुत ख़ुशी हुई, क्योंकि मेरी लडकी एक धनी, किन्तु दुराचारी, आदमीको छोड एक शान्त और सुखीके घर जाती थी।

व्याहके चार दिन रह गए। रातको हम सब अङ्गीठीकी चारों ओर बैठे पुरानी कहानिया कह रहे थे और आगेकी बातें सोच रहे थे। हवामें ख़ूब किले बना रहे थे। मनके लड्डू भी मनोंके हिसाबसे खा रहे थे। फतेचन्द भी वहा मौजूद था। मैंने कहा—"कुमुद, सब चीजोंका प्रबन्ध तो ठीक ठीक हो रहा है न ?"

"सब काम ठीक हो रहा है। मैं अभी यह विचार कर रहा था, कि वल्लभजीके साथ जीजीका व्याह हो जायगा तब हमें उनकी अर्क निकालनेकी कल बिना किराये उधार मिल जाया करेगी।"

"हा, इसमें क्या शक है ? और वह हमें अच्छे अच्छे कवित्त भी तो सुनाया करेंगे !"

"उन्होंने कई सवैये हमारे दिगंबरको भी तो सिखा दिए हैं। वह उन्हें खूब गाता है।"

"अच्छा, क्या वह गाता भी है! तो हमें सुनवाओ न, कहा है दिगम्बर, उसे बुलाओ।"

बालसरूप बोला "दिगम्बर प्रभाके साथ बाहर है। लेकिन उन्होंने दो सवैये मुझे भी सिखाए हैं। आप चाहें तो मैं सुना सकता हूं, आपको कैसा सवैया अच्छा लगता है, ब्रजभाषाका या खडी बोलीका ?"

"ब्रजभाषाका सुनाओ।"

बालसरूप गाने लगा—

"दीन मलीन दुखी अँगहीन,
विहग पर्‌यो छिति छीन दुखारी।
राघव दीनदयाल कृपालकों,
देखि दुखी करुना भई भारी ॥
गीधकों गोदमें राखि दयानिधि,
नैन सरोजनमें भरि बारी।
बारहिं बार सँवारत पंख,
जटायुकी धूरि जटान सों झारी ॥"

"वाह! बाल बड़ा अच्छा लड़का है। अच्छा, हम तुम्हें आशीर्वाद देते हैं—तुम राज-पुरोहित हो!"

यह सुन ताराने कहा—"परमेश्वर करे, आपकी आसीस फले। मुझे इसकी पूरी आशा है। उसकी मां के कुनबेमें तो कई पुश्तसे राज-पुरोहिताई होती आई है।"

मैंने कहा—"अहा! कैसी भी हो, व्रजभाषाकी साधारण कविता भी मुझे आज-कलकी खडी-बोली की तुकबन्दीसे अच्छी लगती है। वाह, व्रजभाषा कैसी मधुर है! देखो, तारा! अब हम बुड्ढे हो चले, पर हमारा बुढापा भी अच्छा कटेगा। हमारे पुरखे बड़े सदाचारी थे और हमारे लड़के भी अच्छे चरित्रके होंगे। जबतक हम जीते हैं, हमें सुख देंगे और मरनेके बाद हमारी इज्जत-आबरू बढावेंगे। अरे, दिगम्बर, आओ, कुछ कविता तो सुनाओ। हम तो तुम्हारी राह देख रहे थे। कहो, प्रभाको कहाँ छोडा?"

दिगम्बरको आता देख ज्योंही मैंने इतना कहा, कि वह दौडता दौड़ता मेरे पास आकर बोला—

"वह तो गई, वह हमेशाके लिये हमारे या से गई, गई।"

"गई! कहा गई?"

"वह दो आदमियोंके साथ इक्केमें बैठकर गई बहुत चिल्लाई, रोई-पीटी और यहा आनेकी उस बहुत कोशिश की, पर वे जबरदस्ती उसे पकडक लेगए।"

"अब क्या है? तुम भी रोओ। हमारा सब सुख मट्टीमें मिल गया। परमेश्वर मेरी कन्याको ले जानेवालोंका सत्यानाश करे। हमारा सब करा-धरा धूलमें मिल गया। जाओ, तुम भी दुख भोगो। तुम्हारी खूब बदनामी हुई। हाय! मेरी छाती तो फटी जाती है।"

कुमुदने कहा—"वाह, यही आपका साहस है?"

"साहस! अच्छा, मेरा साहस मालूम पडेगा। लाओ, मेरा सोटा दो। मैं उनके पीछे जाऊँगा और जहा मिलेंगे वहीं उनको पकडू गा। मैं बुड्ढा हो गया हू तो क्या है उन बदमाशोंको नाकों चने चिनवा दूगा।"

मैंने यों कहकर सोटा हाथमें ले लिया, तब ताराने मुझे रोका और रोते हुए कहा—

"तुम्हारे पुराने हाथोंका शस्त्र तो अब रामायण ही है। उसे पढो और धीरज धरो। बदमाशोंने हमें बडा धोखा दिया।"

कुछ ठहरकर फतेचन्दने कहा—

"हा, तुम्हारा क्रोध बहुत ज्यादा है। तुम्हें तो और सबको तसल्ली देनी चाहिए, सो तुम उनका दु ख और बढाते हो। तुम सरीखे धार्मिकके लायक यह बात नहीं थी कि, तुम अपने शत्रुको गाली देते, वे तो बदमाश हैं ही।"

"क्या मैंने उन्हें गाली दी थी ? नहीं तो!"

कुमुदने कहा–"हा, तुमने उन्हें दो बार गाली दी थी।"

"तो परमेश्वर मुझे क्षमा करे। पर अपने शत्रुसे भी प्रेम करनेका सिद्धान्त तो आदमियोंके व्यव-हारमें आने लायक नहीं है। हाय, कहातक रोऊँ। रोते-रोते इतनी उम्र हो गई। अब मैं क्या करू ? इससे तो मेरी कन्या मर जाती तो अच्छा होता। वह क्या गई, हमारे कुनबेमें कलक लग गया। अब

"वह तो गई, वह हमेशाके लिये हमारे यहा से गई, गई।"

"गई! कहा गई?"

"वह दो आदमियोंके साथ इक्केमें बैठकर गई। बहुत चिल्लाई, रोई-पीटी और यहा आनेकी उसने बहुत कोशिश की, पर वे जबरदस्ती उसे पकडकर लेगए।"

"अब क्या है? तुम भी रोओ। हमारा सब सुख मट्टीमें मिल गया। परमेश्वर मेरी कन्याको ले जानेवालोंका सत्यानाश करे। हमारा सब करा-धरा धूलमें मिल गया। जाओ, तुम भी दुख भोगो। तुम्हारी खूब बदनामी हुई। हाय! मेरी छाती तो फटी जाती है।"

कुमुदने कहा—"वाह, यही आपका साहस है?"

"साहस! अच्छा, मेरा साहस मालूम पडेगा। लाओ, मेरा सोटा दो। मैं उनके पीछे जाऊँगा और जहा मिलेंगे वहीं उनको पकडूंगा। मैं बुड्ढा हो गया हू तो क्या है, उन बदमाशोंको नाकों चने चिनवा दूंगा।"

मैंने यों कहकर सोटा हाथमें ले लिया, तब ताराने मुझे रोका और रोते हुए कहा—

"तुम्हारे पुराने हाथोंका शस्त्र तो अब रामायण ही है। उसे पढ़ो और धीरज धरो। बदमाशोंने हमें बड़ा धोखा दिया।"

कुछ ठहरकर फतेचन्दने कहा—

"हां, तुम्हारा क्रोध बहुत ज्यादा है। तुम्हें तो और सबको तसल्ली देनी चाहिए, सो तुम उनका दुःख और बढ़ाते हो। तुम सरीखे धार्मिकके लायक यह बात नहीं थी कि, तुम अपने शत्रुको गाली देते, वे तो बदमाश हैं ही।"

"क्या मैंने उन्हें गाली दी थी ? नहीं तो!"

कुमुदने कहा–"हां, तुमने उन्हें दो बार गाली दी थी।"

"तो परमेश्वर मुझे क्षमा करे। पर अपने शत्रुसे भी प्रेम करनेका सिद्धान्त तो आदमियोंके व्यवहारमें आने लायक नहीं है। हाय, कहांतक रोऊँ। रोते-रोते इतनी उम्र हो गई। अब मैं क्या करू ? इससे तो मेरी कन्या मर जाती तो अच्छा होता। वह क्या गई, हमारे कुनबेमें कलंक लग गया। अब

हमारे लिये इस दुनियामें सुख कहाँ धरा है ?"

इस भांति रोते-धोते रात बीती। मैंने निश्चय किया कि, बदमाशोंको ढूंढकर सजा जरूर देनी चाहिए। दूसरे दिन सवेरे हमें लडकीकी बडी याद आई। फिर मैं अपनी रामायण और सोटा लेकर उसकी तलाशमें चल दिया।

यद्यपि दिगम्बर प्रभाको ले जानेवालेका हुलिया न बता सका, तोभी मुझे अपने जमींदारपर संदेह हुआ, क्योंकि वह ऐसे कामोंमें नामी था। इस कारण मैं लक्ष्मी-भवनकी ओर चला। मैं अपने मनमें विचार करता जाता था कि, उसे खूब फट-कारूँगा और लडकीको वापिस ले आऊँगा लेकिन रास्तेमें ही मुझे गाँवका एक आदमी मिला। उसने कहा—

"मैंने एक आदमीके साथ एक लडकीको भोजपुरकी तरफ इक्केमें जाते देखा था। वह लडकी तो तुम्हारी लड़कीसे मिलती थी और उसका साथी मदनमोहन मालूम होता था। इक्का बहुत तेजीसे जा रहा था, इस कारण मैंने अच्छी तरह न देख पाया।"

इन बातोंसे मुझे कुछ संतोष नहीं हुआ और मैं लक्ष्मी-भवन पहुंच गया। अभी बहुत सिदौस थी, इसलिये लक्ष्मीकान्त सोकर भी नही उठा था। थोडी देरतक मैं ठहरा। इतनेमें वह जाग उठा, तब मैंने उसको बाहर बुलवाया। वह फौरन आया और मेरी लडकीके चले जानेका हाल सुन बहुत विस्मित होकर बोला कि मुझे अबतक यह बात नहीं मालूम है। उसकी बातोंसे मेरा सन्देह उसपरसे जाता रहा। मुझे मदनमोहनपर ही सन्देह हुआ। थोडी देर पहले वह देहाती मदनमोहनका नाम ले ही चुका था, इससे मेरे सन्देहकी और भी पुष्टि हुई। इस समय मुझे भले-बुरेका ज्ञान नहीं रहा। सभव था कि, लडकीको लेजानेवालेने मुझे धोखा देनेके लिए उस देहातीको मेरे पीछे लगा दिया हो, पर यह बात मुझे नहीं सूझी। मैं रास्तेमें बराबर तलाश करता गया, पर कहीं कुछ पता न चला। जब मैं शहरमें घुसा तब मुझे एक सवार मिला, जिसे मैंने अपने जमींदारके यहा देखा था। उसने कहा—

"यहासे करीब १८ मील दूर जैनियोंकी रथ-

यात्राका मेला हो रहा है। अगर तुम वहां जाओ तो शायद लड़की तुमको मिल जाय, क्योंकि कल रातको मैंने उसे एक आदमीके साथ वहां देखा था।"

अब मैं उसी तरफ चल दिया, और दूसरे दिन दोपहरको वहा पहुंचा। ऐसा सयोग लगा कि, मैंने मदनमोहनको दूरसे देख लिया, पर मुझसे मुठभेड हो जानेके डरसे वह भीडमें न मालूम कहा गायब हो गया, और मुझे नहीं मिला।

अब मैंने आगे जाना व्यर्थ समझकर घर लौटना चाहा, पर मनमें इतनी चिन्ता थी और मैं इतना थक गया था कि, मुझे बुखारने आ घेरा। लक्षण तो उसके रास्तेमें ही दीख गए थे। यह और भी मुसीबत आई, क्योंकि मैं घरसे बहुत दूर था। अन्तमें मुझे सडकके किनारे एक सरायमें ठहरना पड़ा। वहा तीन दिन तक मैं बीमार पडा रहा। बादमें मुझे आराम तो हुआ पर भटियारीका हिसाब चुकानेको मेरे पास पैसे तक न थे। सम्भव था कि, इस चिन्तासे मैं फिर बीमार पड जाता, लेकिन एक मुसाफिरने मेरे दाम चुका दिए। वह मुसाफिर एक किताब बेचनेवाला था जिसने बालकोंके पढने

की बहुत सी किताबें औरोंसे बनवाकर अपने नाम से छपाई थीं। वह मेलेमें पुस्तक बेचने आया था। वह अपनेको बालकोंका मित्र बतलाता था, परन्तु असलमें वह समस्त मनुष्य-जातिका मित्र था। वह हमेशा जल्दीमें रहता था, क्योंकि उसे सदा बहुत से जरूरी काम लगे रहते थे। उस समय भी वह शिवाजीका जीवनचरित लिखनेके लिए सामग्री इकट्ठी कर रहा था। उस भलेमानसका बन्दरछाप का चहरा मैंने फौरन पहचान लिया, क्योंकि उसने मेरे लिए भी अनेक विवाहकी प्रथाके विरुद्ध कई पुस्तकें छाप दी थीं। उसीने मेरे दाम दे दिए और मैंने उधार चुका देनेका वादा किया। मैं अबतक कमज़ोर तो था, पर मैंने सरायसे चल देना ही ठीक समझा। मैंने अपने गर्वको बहुत धिक्कारा, जिसके सबबसे मैं यहा तक बदमाशोंको ढूढता ढूढता आया। जबतक आदमी पर मुसीबत नहीं पडती तबतक उसे मालूम नहीं होता कि किस किस आपदाका सहन करना उसके चित्तके बाहर है।

मैं अब आगे बढा और दो घटे तक बराबर चलता गया। थोडी दूर पर मुझे एक गाढीसी

नज़र आई। जब मैं पास पहुँचा, तो देखा कि यह एक छकड़ा है, जिसमें एक रासमडलीका असबाब लदा है। यह पासही एक गावको जारहा था, जहा कि रास होनेवाला था।

उस छकडेमें गाड़ीवानके अलावा सिर्फ एक रासधारी था। उससे मालूम हुआ कि, अन्य सब रासधारी कल आवेंगे। मैं रास्ता काटनेके इरादेसे उससे बातें करता करता चलने लगा। मैंने भी पहले रासलीलामें कुछ भाग लिया था, पर आजकलका हाल मुझे नहीं मालूम था। इसलिए मैंने उससे पूछा कि, आजकलकी मण्डलियोंके मुखिया कौन हैं। रासधारी बोला—

"आजकलकी मण्डलियोंका मुकाबला पुरानी मण्डलियोंसे नहीं हो सकता। पुराना जमाना अब नहीं रहा। अब तो हमारी रुचि बिलकुल बदल गई है। आज कल तो 'सगीत पूरनमलकी' लीला दिखाई जाती है।"

"कैसे? वह तो पुरानी लीलाओंकी बराबरी किसी बातमें नहीं कर सकती। वह कोई लीला भी तो नहीं, स्वाग है। न वैसे पात्र, न चरित्र, न परिहास, न विदूषक।"

"सर्वसाधारणको पात्र, चरित्र, परिहास किसी से कुछ मतलब नहीं। वह तो खुश होना और हँसना चाहते हैं। बस, जहा जरा पूरनमलका स्वाग होता सुना कि, भीड उमड पडती है। आज-कल लीलाकी तारीफ कुछ रचनासे नहीं होती, गाने बजाने और हाथ-पैर मटकानेसे होती है। हमारी मण्डली तो अब नाटककी तरह टिकट लगाकर रास दिखाती है। दो तीन पर्दे भी लटकाये जाते हैं।"

इस समय छकडा गावके पास पहुँच चुका था। गावके आदमी हमें देखनेको बाहर निकल आए। बडी भीड इकट्ठी होने लगी। इस कारण मैं झट पहली ही सरायमें घुस गया। उसीमें रास-धारी भी आ गया। वहा मुझसे एक आदमीने पूछा—

"तुम मण्डलीके मुखिया हो या रासधारी?"

जब मैंने सच बात कही तब उसने रासधारीको और मुझे भोजनके लिए न्योता दिया। हमने उसका न्योता स्वीकार कर लिया।

तेरहवां अध्याय।

जहां हमारी दावत थी वह घर गांवसे ज़रा दूर था। हमारे मिहमानदारने देखा कि, कोई सवारी तैयार नहीं है, इसलिए वह हमें पैदल ही साथ ले चला। थोड़ी देरमें हम एक बड़े आलीशान मकानमें पहुंच गये। एक खूब सजे सजाए कमरेमें ले जाकर हमें विठाया गया। मिहमानदार भोजन लानेके लिए नौकरोंको आज्ञा दे आया। बहुतसे उत्तम पदार्थ सामने रक्खे गये और वातचीत होने लगी। भोजन हो चुकनेके बाद उसने मुझसे पूछा—

"क्या आपने आजका 'निर्भीक समाचार' देखा,?"

"नहीं।"

"नहीं! तो 'पतित-पावन' भी न देखा होगा।

"नहीं। कहांसे देखता ?"

"यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है। मैं तो आज-कल सब अखबार पढ़ता हूं—राष्ट्रीय-आन्दोलन,

संसार-मित्र, देशवासी, हित-चिन्तक, वीर-देश, सभ्य-मित्र, अनुराग,और सब मासिक पत्रिकाएँ भी। यद्यपि इनमें किसी किसीमें विरोध है, पर मुझे सब अच्छे लगते हैं। "

वह इतना ही कह पाया कि हमें दरवाजे पर किसीके आनेकी आहट सुनाई दी। झट एक नौकर बोल उठा कि, मालिक आगए। अब मुझे मालूम हुआ कि, हमारा मिहमानदार सिर्फ एक नौकर है, जो अपने मालिककी गैरहाजिरीमें भलमन-साहत दिखा रहा है। इतनेहीमें मालिक और उसकी स्त्रीने घरमें प्रवेश किया। हमें वहा देखकर उन्हें भी बडा आश्चर्य हुआ। मकानके असली मालिकने मुझसे और मेरे साथीसे कहा—

"महाशय, हम आपके सेवक हैं। हमारे यहा पधारकर जो कृपा आपने की है उसके लिए हम आपके हृदयसे कृतज्ञ हैं।"

इतनेमें ही नारायणदासकी लडकी भीतर आई, जिससे कि, कामिनीकी मगाई छूट गई थी। मुझे वहा देख वह बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा—

"आज यह क्या हुआ कि, अचानक आपके दर्शन

हुए ? मेरे चाचाको यह जानकर बहुत खुशी होगी, कि प्रेमकान्तजी हमारे यहां मिहमान हैं।"

मेरा नाम सुनकर तो मालिकने बहुत झुककर मुझे नमस्कार किया, पर मेरे आनेकी घटना सुन उनको बड़ा विस्मय हुआ। प्रभाके भागनेकी बात उनसे गुप्त रक्खी गई। जो नौकर हमें लिवा लाया था, उससे वे पहले नाराज हो गए थे; पर मेरे कहनेसे उन्होंने उसको माफ कर दिया।

मकानके मालिक पण्डित लाडलीप्रसादने मुझसे ठहरनेके लिये बहुत आग्रह किया। उनकी भतीजीनेभी बहुत कुछ कहा, इसलिये मुझे वहां ठहरना पड़ा। दूसरे दिन सुबह ललिता मुझे बगीचा दिखाने लेगई। वहाकी बहुतसी मनोहर वस्तुए दिखाकर उसने मुझसे पूछा—

"कामिनीका पत्र आपके पास कबसे नहीं आया ?"

मैंने कहा—"वह तीन बरससे बाहर है। तबसे उसने न तो कोई पत्र हमारे पास भेजा, न अपने किसी मित्रके। मुझे नहीं मालूम, वह आजकल कहां है ! अब शायद मैं उसे कभी न देखूं। मेरा सुख तो

सब हो चुका। जैसे सुखसे हमारे दिन तुम्हारे गाँवमे बीते वैसे अब कहा आनेको हैं? मेरा सब कुनवा एक एक करके तितर-बितर हो रहा है। निर्धनतासे सिर्फ दीनताकी ही नहीं, बदनामी तक की नौबत आगई।"

मेरी बातें सुनकर उसकी आखोंमें आसू आगए। यह देखकर मुझे सतोष हुआ, कि इतने दिनतक दूर रहनेपर भी उसकी प्रीति पहलेके समान बनी हुई है। अभी तक उसका विवाह भी नहीं हुआ था। वह मुझे वहाँकी सब चीजें दिखाती रही और कामिनीकी बाबत कुछ न कुछ पूछती ही रही। इतनेमें भोजनका समय हो आया। देखता हू तो मेरा पहलेका साथी रासधारी टिकट बेचने आ रहा है। कस-वध लीला होनेको थी। उसने कहा—"एक ऐसा बढियाँ मथुरा बनेगा जैसा आजतक किसी मण्डलीमें नहीं बना। वह स्वभावसे ही रासधारी है। उसका स्वर, रूप, चाल, ढाल, सभी तारीफ़के लायक हैं। वह अचानक हमें रास्तेमें मिल गया था।"

यह सुनकर मुझे भी देखनेका शौक हुआ और मैं भी सबके साथ वहा गया। हम सब लोग सबसे

आगेकी कतारमें बैठे, पर सभी मंसुखाको देखनेके लिए अधीर हो रहे थे। आखिर वह रङ्ग-भूमिमें आया। देखा तो वह मेरा भाग्यहीन लड़का था! वह अपना पार्ट शुरू करने ही को था, कि सामने उसने मुझे और ललिताको बैठा देखा। बस, फिर तो उसके मुंहसे एक शब्द न निकला।

परदेके पीछे जो पात्रोंको तालीम देनेवाले बैठे थे, उन्होंने समझा कि, वह घबरा गया। इससे वे उसे खूब उत्साह देने लगे। पर वह आठ आठ आसू रोने लगा और रङ्गभूमिसे लौट गया। उस समयकी अपनी दशाका मैं कहातक वर्णन करूं? इतनेहीमें ललिताका चेहरा फीका पड़ गया और उसने घर चलनेको कहा। घर पहुंचकर हमने लाडलीप्रसादसे सब हाल कहा। उन्होंने लड़केको बुलानेके लिए गाड़ी भेजी। उसके आनेपर लाडलीप्रसादने स्वागत किया और मैं भी उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ।

——

चौदहवां अध्याय ।

कामिनीके आ जानेके बाद लाडलीप्रसादने दो नौकरोंसे उसका असबाब ले आनेको कहा। पहले तो उसने मना किया, पर जब वे न माने तब उसने कहा कि, मेरे पास सिवाय एक सोटे तथा बोरेके और कुछ सामान नहीं है। यह सुन मैंने कहा—

"बेटा! गरीबीकी हालतमें तुम मुझे छोड गए थे और उसी हालतमें तुम वापस आए। तो भी मुझे उम्मेद है कि तुम्हें दुनियाँका बहुत कुछ तजरुबा हुआ होगा।"

"हां! लेकिन सम्पत्तिके पीछे दौडनेसे वह नहीं मिलती, इस कारण मैंने अब दौडना छोड दिया है।"

लाडलीप्रसाद बोले—"तुम्हारी यात्राका हाल सुनकर हम जरूर खुश होंगे। तुम्हारा थोडासा हाल तो हमने तुम्हारे पितासे सुन लिया है। पर, क्या बाकीका हाल कहकर तुम हम सबको प्रसन्न नहीं करोगे?"

"सच बात तो यह है कि, जितने घमण्डसे मैं अपनी यात्राकी बातें आपको सुनाऊंगा उससे आधी खुशी भी आपको उन्हें सुनकर न होगी। मेरी यात्रामें पौरुषका काम एक भी नहीं हुआ। जो जो चीजें मैंने देखीं उनका वर्णन किये देता हूं। मेरी पहली मुसीबत तो यह थी कि,मेरी आशा बहुत बढ गई थी। जितना कम हमारा भाग्य उदय हुआ उतना ही मैंने समझा कि अब होगा, अब होगा। इसी विचारसे मैं कलकत्ते जा पहुंचा, क्योंकि मुझे विश्वास था कि, कलकत्ता एक ऐसी जगह है जहा हर तरहके आदमियोंको रोजगार मिलजाता है।

वहा पहुंचकर पहले पहल मैंने आपके मित्र हरीरामको आपकी सिफारिशी चिट्ठी दी। पर उसकी दशा भी मेरी सी ही थी। मेरा पहला प्रस्ताव किसी मदरसेमें मास्टर होनेका था। मैंने उसकी राय पूछी। उसने कुछ मुसकुराकर कहा—

"काम तो तुमने बहुत अच्छा सोचा है। मैं भी कुछ दिन तक इसे कर चुका हूं। मदरसेका हेड-मास्टर मेरे साथ बहुत सख्ती करता था और सब मास्टर मेरा कुरूप देख मुझसे नफरत करते थे,

लड़के खूब चिढ़ाते थे और हेड मास्टरसे मेरी बुराई किया करते थे। अच्छा, क्या तुमने कभी यह काम सीखा भी है?"

"नहीं"

"तो तुमसे काम नहीं चलेगा। क्या तुम शरीर लड़कोंको मार पीटकर सीधा कर सकते हो?"

"नहीं—"

"तो तुम इस जगहके लायक नहीं हो। क्या तुम इन्सपेक्टरके घरके लिये सामान बाजारसे खरीदकर ला सकते हो?"

"नहीं—"

"तो तुम इस जगहके लायक नहीं हो। क्या तुम मदरसेकी कमेटीके मेम्बरोंकी खूब खुशामद कर सकते हो?"

"नहीं।"

"तब तो तुम मदरसेमें किसी तरह नहीं रह सकते। हां, अगर तुम कोई अच्छा रोजगार किया चाहो तो तीन चार बरस किसी दरजीके यहां कपड़े सीना सीखो पर मास्टरी मत करो। अच्छा तुम कुछ उत्साही मालूम होते हो, इससे पूछता हूं कि तुम

मेरे समान ग्रन्थकार ही क्यों न हो जाओ? ऐसे ऐसे अनेक प्रतिभा सम्पन्न ग्रन्थकारोंका हाल तुम पढ़ चुके होगे जो भूखों मरते हैं, लेकिन मैं तो तुम्हें ऐसे चालीस बछियाके ताऊ यहां दिखाऊंगा जो इससे खूब रुपया पैदा करते हैं। बस कुछ इधरसे कुछ उधरसे लेकर जरा झूठे सच्चे उपन्यास लिख दिए और नाम हो गया। सब जगह उनकी तारीफ होने लगी। लेकिन अगर वे चमारका काम सीखते तो जन्मभर जूते गाँठते रहने पर भी नये जूते न बना सकते।"

जब मुझे यह मालूम हुआ कि मास्टरी मुझसे न हो सकेगी तब मैंने उसका ही प्रस्ताव स्वीकार करना चाहा। साहित्यकी मैं बडी इज्जत करता था। तुलसीदास, सूरदास जिस मार्गके पथिक हो चुके थे, उसपर जानेमें मैंने अपना सौभाग्य समझा। मैंने थोडे दिन लेख और पुस्तकें लिखनेका ढङ्ग सीखा और अन्तमें एक किताब लिखने बैठा। मैंने तीन अध्याय लिखे और किताबको राजा नादिहंदको समर्पण किया, क्योंकि राजा साहबकी मैं बडी तारीफ़ सुन चुका था और उनसे मुझे बहुत कुछ लाभकी आशा

थी, पर राजा साहबके प्राइवेट सेक्रेटरीसे मेरा झगड़ा हो गया। उसने मेरी बुराई कर दी और वहांसे मुझे कुछ न मिला। यद्यपि मेरी किताबकी सब बातें बिलकुल झूठी थीं, पर उन्हें मैंने अपनी उपजसे लिखा था। मुझे पूरी आशा थी, कि संसारके सब पढ़े-लिखे आदमी उनका घोर विरोध करेंगे, पर मैं भी उन सबका विरोध करनेको तैयार था। लेकिन संसार भरके आदमियोंने मेरे ग्रन्थकी बाबत जरा भी कुछ न कहा। हरएक आदमी अपनी तथा अपने मित्रोंकी तारीफ और अपने विपक्षियोंकी बुराई करता था। दुर्भाग्यसे न तो मेरा कोई मित्र था न शत्रु। इस कारण सबने मेरी उपेक्षा की।

मैं एक बजाजकी दूकानपर बैठा अपनी पुस्तकके विषयमें सोच रहा था कि इतनेमें एक खुर्राट आदमी मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। कुछ बात-चीतके बाद जब उसे मालूम हुआ कि मैं पढ़ा लिखा होशयार हूं, तब उसने अपनी बगलमेंसे कागजोंका एक बण्डल निकालकर कहा—"मैंने महाभारतका यह हिन्दी छन्दोंमें अनुवाद किया है। इसे छपाया चाहता हूं। इसके लिए कृपाकर कुछ चन्दा लिख दीजिये।"

"क्षमा कीजिये। मेरे पास रुपया देखनेको नहीं।"

उसने कहा—"तो क्या कहींसे आनेकी आशा है?" यह सुनकर मैंने उससे अपना हाल कहा, जिसे सुनकर वह बोला "ओ हो! तुम्हें इस शहरका हाल नहीं मालूम है। अच्छा, मैं तुम्हें बतलाता हूँ। ये कागजात देखो। इन्हींकी बदौलत बारह बरससे मैं अपनी गुजर कर रहा हूँ। ज्योंही कोई भलामानस यात्री यहा आकर ठहरा, मैं फौरन उसके पास चन्दे के लिए पहुंच गया। पहले तो मैं खुशामद करके उसका दिल अपने काबूमें कर लेता हूं और फिर अपना प्रस्ताव कहता हू। अगर वह इतना सीधा सादा है, कि एक बार कहनेसे ही चन्दा देदे, तो उससे कितावके दामोंमेंसे कुछ पेशगी देनेको कहता हूँ और झटपट ग्राहकोंकी सूचीमें उसका नाम लिख लेता हू। इस तरह चैनकी बंसी बजाता हूँ। लेकिन तुमसे कुछ दुराव नहीं। अगर तुम मुझे इस काममें मदद दो तो तुम्हें भी बहुत लाभ हो। अभी एक सेठ दिल्लीसे आकर ठहरा है। उसका रसोइया मुझे पहचानता है। अगर तुम

ये कागज ले जाकर उसे दिखलाओ तो जरूर कामयाब हो। जो कुछ मिलेगा हम आपसमें आधा आधा बाँट लेंगे।"

कामिनीकी बात पूरी न हो पाई थी, कि मैं बोल उठा—"क्या अब कवियोंका यही काम रह गया है? क्या प्रतिभा–सम्पन्न आदमी इस प्रकार भीख मागने पर उतारू होगए हैं? क्या उन्होंने अपनी हैसियत इतनी घटा दी है कि वे रोटीके लिए खुशामदका रोजगार करने लगे हैं?"

कामिनीने कहा—"नहीं नहीं जो सच्चे कवि हैं वे इतने नीच कभी नहीं हो सकते। जहा प्रतिभा होगी, वहा आत्म-गौरव जरूर होगा। मैं जिनकी बात कह रहा था वे तो तुकबन्दी करनेवाले हैं जो अपने नामके भूखे हैं।"

"मैंने इस कामको पसन्द नहीं किया, इसलिए उससे इनकार कर दिया। इसी प्रकारकी चिन्तामें मग्न हुआ मैं एक बार अजायबघरमें बैठा था कि इतनेमें मेरा मदरसेका एक पुराना साथी लक्ष्मीकान्त आया। वह उन दिनों कलकत्ते सैर करने गया था। वह बडा अच्छा आदमी था।"

मैंने कहा—"क्या कहा, लक्ष्मीकान्त! वह तो
मारा जमींदार है।"

लाडलीप्रसादने कहा—"अरे! क्या लक्ष्मीकान्त
म्हारा पडोसी है? वह तो हमारा बडा मित्र है।
आजकलमें, यहां आनेको भी है।"

लडकेने कहा—"लक्ष्मीकान्त मुझे अपने साथ
ले गया। पहले तो उसने कपडे पहिननेको दिये
और फिर भोजन कराकर मुझे आपने साथ रख
लिया। मैं उसका आधा मित्र रहा और आधा नौकर।
मेरा यह काम था, कि जब वह कहीं सैर करने जाय
तब उसके साथ जाऊ, जब वह तसवीर खिंचानेके
लिए बैठे तब ऐसी ऐसी बातें करूँ जिनसे उसके चहरे
पर मुसकुराहट आजाय, जब जगह खाली हो तब
गाडीमें उसके बाई तरफ बैठू, और जब उसका
मन न लगता हो तब बातचीत करके उसका मन
पहलाऊं। इसके सिवा मुझे और भी बीसियों छोटे
छोटे काम बिना कहे करने पडते थे। जब वह कहे
तब झट गाने बजानेको तैयार हो जाना, कभी उदास
न रहना, हमेशा विनीत रहना और जहातक हो सब
पर यह प्रकट करना कि मैं बडा सुखी हू। लेकिन

एक धोबिनका लडका यहाँ भी मेरी जानको आगया। उसने खूब ही खुशामद करना सीखा था, इस लिए उसे इसका अच्छा अभ्यास था; पर मुझे यह न आता था। मेरे मुँहसे खुशामद भद्दी और असगत लगती थी।

लक्ष्मीकान्त प्रतिदिन अधिक खुशामद-पसन्द होता जाता था और मुझे हर घडी उसके दोष मालूम होते जाते थे, इससे मैं खुशामदमें कमी करता जाता था। आखिर मैं यह प्रतिष्ठित पद भी छोडनेवाला था, कि मेरे स्वामीको मेरी सहायताकी जरूरत हुई। उसने मुझसे एक भलेमानसको पीटनेके लिए कहा, कि जिसकी बहनके साथ उसने अत्याचार किया था। मैंने उसकी आज्ञा मानी, यद्यपि यह बात आपको बुरी मालुम होगी, पर मित्रताके कारण मैं उसे मना न कर सका। मैंने उस भलेमानसको मारपीट कर भगा दिया। इसपर मेरे स्वामीने मेरा बडा ही अहसान माना और कलकत्तेसे लौटने पर अपने चाचा पण्डित कमलाकान्तजीसे और बाबू राम-लाल, तहसीलदारसे मेरी सिफारिश करदी, क्योंकि वह फिर कहीं सैर करनेको जानेवाला था।

पहले मैं उसका पत्र लेकर कमलाकान्तजीके पास पहुंचा। उनके नौकरोंने मुसकुराकर मेरा स्वागत किया और बगीचेमें ठहरनेको कहा। इतनेमें कमलाकान्तजी आए। मैंने उन्हें पत्र दिया। उसे पढकर कुछ देर बाद वे बोले,—"अच्छा, यह तो बतलाओ कि तुमने लक्ष्मीकातकी किस काममें ऐसी सहायताकी कि जिसके कारण उसने तुम्हारी इतनी भारी सिफारिश की है? क्या कहीं तुम उसकी तरफसे लडे थे, और उसके व्यसनमें सहायक होनेका इनाम लेने मेरे पास आए हो? मैं तो चाहता हूं कि तुम्हें अपने किएका दण्ड मिले और पछताना पडे।"

उनकी धमकीको मैंने चुपचाप सहन किया, क्योंकि वह बिल्कुल ठीक थी। अब मेरी पूरी आशा उसी पत्रपर अटकी रहगई जो रामलालके नाम था। उनके पास भी पहुंचा। उनसे मिलना मुशकिल था, इससे मैंने अपनी आधी सपत्ति उनके नौकरोंको रिशवतमें दी, तब वे मेरी चिट्ठी भीतर ले गए। पर वह कहीं जानेको थे। अपने मुन्शीसे कुछ कहकर और गाडीमें बैठ कर चल दिये। मुन्शीने मुझे

बुलाकर चार रुपए महीनेपर सेठ मटरूमलके लड़केको पढ़ानेके लिए मुकर्रर किया। जब महीना खतम हुआ तब सेठजीने मुझे दो ही रुपए दिए। यह देखकर मैं चकरा गया। मैंने सेठजीसे दो रुपए और माँगे, तब सेठजीने अपने श्रीमुखसे कहा.—

"हमारे यहा मास्टरको दो ही रुपए महीना दिये जाते हैं। यह कायदा कई पुश्तसे चला आता है। तुमने चार रुपए ठहरा लिए तो ठहरानेसे क्या होता है? हमने तुम्हें कुछ दे तो नहीं दिए? यों तुम सौ रुपए ठहरा लेते तो क्या तुमको मिल जाते? जो उचित होगा वही मिलेगा। तुम्हारे सबबसे हम अपने कुलकी मर्यादा नहीं तोड़े गे।"

आखिर वहाँसे भी मुझे नौकरी छोडनी पड़ी। इस समय मेरे धैर्यका दिवाला निकल चुका था। अब मैं यही सोचता था, कि इतने निरादर से तो मरजाना बेहतर है। मेरे पास सिर्फ आठ आने बचे थे। इसी तरह बाजारमें फिरते फिरते, मैंने रास्तेमें देखा, कि एक दफतर है, जहा तीनसौ रुपए सालपर गुलाम परदेश भेजे जाते हैं। मैंने चार आने देकर वहा नाम लिखा लिया और चार आने

जो ठाकुरजी तकको गिरवीं धर दे, तथा रुपए वाले पैसे जिन्हें घात करने तकका शऊर नहीं और जो फटे नगाड़ेकी तरह निकम्मे पड़े पड़े अपने दिन काटे। यात्रा करता करता मैं फिर कलकत्ता पहुंचा, जहा मुझे आपका मित्र हरीराम मिला। उसे उसके किसी मालिकने तसवीरें खरीदने भेजा था। मैंने उससे पूछा, कि तुमने यह काम कहा सीखा। उसने कहा—

"कहीं नहीं। सीखनेकी जरूरत ही क्या है? यह तो बहुत सहज है। इसमें सिर्फ दो बातें हैं— एक तो, जो तसवीर देखो उसमें यह बतला दो, कि इसमें अमुक बात और बनती तो यह ठीक होती, दूसरे, जो नामी चित्रकार हैं उनकी तसवीरोंकी तारीफ करदो—वे चाहे जितनी खराब हों। जैसे मैंने पहले तुम्हें ग्रन्थकार होना बतलाया था वैसे ही अब तुम्हें तसवीरोंका

सुधारे। कुछ देर बाद वह मुझे चित्रकारोंकी दूकानोंपर अपने साथ ले गया। यह देख मुझे बड़ा अचम्भा हुआ, कि बड़े बड़े शौकीन आदमियोंसे उसकी मुलाकात है। वे हरएक तसवीरकी बाबत उसीसे राय पूछते थे। उसने ऐसे अवसरोंपर मुझसे भी बहुत सहायता ली। क्योंकि, जब उसकी राय पूछी जाती, तब वह मुझे एक ओर लेजाकर मेरी राय पूछता, जरा अपना कन्धा हिलाता, चेहरा इस तरह गम्भीर कर लेता जैसे किसी विचारमें डूब रहा है, और लौटकर जवाब दे देता, कि इतने बड़े नामी चित्रकारकी तसवीरकी बाबात में कुछ नही कह सकता। कभी कभी वह अपनी राय प्रकट भी कर देता था। मुझे याद है, कि एकबार पहले तो उसने एक चित्रकी बाबत अपनी राय दी, कि इसके रङ्गमें काफी झलक नहा है और पीछे जरा सोच विचारकर कूची हाथमें ले, उसपर बड़े इतमीनानके साथ सबके सामने, वारनिश लगाई और कहा, कि अब इसका रङ्ग पहलेकी अपेक्षा कितना चमक उठा है।

जब वह अपनी खरीदकर चुका और वहासे लौटनेको हुआ तब उसने कितने ही रईसों और

जमीदारोंसे मेरी सिफारिश करदी । पर कुछ नतीजा न निकला । अन्तमें हताश होकर और दूसरे लोगोंकी देखा देखी मैं भी तरह तरहके चूर्ण और पौष्टिक ओषधियाँ, सुगन्धित तेल आदि बेचने लगा, पर किस्मतने यहा भी साथ न दिया ।

अन्तमें मैं कलकत्तासे भीख माँगता-खाता चल दिया। रास्तेके कष्टोंका हाल क्या कहूं ? कभी मैं जादू टोना करने लगता, कभी सामुद्रिक शास्त्री बनजाता । इस तरह कोई महीनेभर बाद एक गाँवमें पहुँचा । वहाँ एक पथिकसे मैंने ठहरनेकी जगह पूछी । उसने कहा—"यहा कोई सराय तो है नहीं, पर अभी पिछले महीने डाक्टर मोहनलाल मरे हैं, जो उडीसेमें नौकर थे । यहीं पास ही, उनके कई मकान खाली पडे हैं। उनके लडकेसे पूछकर ठहर जाओ ।"

यह सुन मैं डाक्टर मोहनलालके मकानपर पहुंचा । दरवाजा खुला था और सामने आगनमें एक सज्जन नहा रहे थे । मैंने उनसे पूछा—

"डाक्टर मोहनलाल साहबका स्थान कहा है ?"

"यही है ।"

"डाक्टर साहब कहां हैं ?"

"वे तो पिछले महीने गुजर गए। आइए, पधारिए। कुछ काम ?"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। मैं तो यहां सिर्फ उनसे ही मिलने आया था। डाक्टर साहब बड़े परोपकारी थे। उनके मरनेसे हजारों गरीब अनाथ हो गए। ऐसा आदमी क्या इस पृथ्वीपर अब फिर जन्म लेगा? उनका हमसे बड़ा प्रेम था। एकबार वे हमारे यहां रङ्गपुरमें, उहींसेमें आकर, कुछ दिन ठहरे भी थे।"

"अच्छा, तो आइए, ठहरिए तो सही। यह आपका ही घर है। मैं उनका पुत्र हूं।"

यों कह उसने मेरा असबाब अन्दर लेजाकर रखा। फिर इधर उधरकी बातें होने लगीं। यद्यपि डाक्टर साहबसे मेरी एक दिनकी भी मुलाकात नहीं थी, तो भी मैंने उनकी मृत्युपर इस प्रकार शोक प्रकाशित किया जैसे कि, वे मेरे कोई बुजुर्ग नातेदार हों। थोड़ी देर बाद लड़केने मेरे खाने पीनेका प्रबन्ध किया और मैं तीन दिन तक उसके यहां मिहमान रहा। वहांसे बारह मील चल कर मैं

माधोपुर आया। यहा मेरा एक मित्र राजविहारी रहता था। वह जातिका कायस्थ था और जायदादसे उसको दो हजार रुपएकी सालाना आमदनी थी। जब मैं मदरसेमें था, तब हम दोनों बोर्डिङ्ग-हाउसके एकही कमरेमे रहते थे और आपसमें बड़ी प्रीति थी। वह कई बार मुझे अपने यहाँ बुला चुका था। यह अवसर मैंने उससे मिलनेका अच्छा देखा। मैं उसके यहा पहुंचा। वह उस समय तीन हफ्तेके बाद बीमारीसे उठा था और अबतक कमजोर था। मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ देर बात-चीत होनेके बाद मैंने कहा--

"मेरी आर्थिक दशा आजकल अच्छी नहीं है। मैं आपके पास कुछ याचना करने आया हूं। जब हम मदरसेमें पढते थे, तब आपके भी मुझसे बहुतसे काम निकलते थे, पर अब मुझे आपकी सहायताकी जरूरत है। इसके बिना मेरा काम नहीं चल सकता। आपको कमसे कम दस रुपए मुझे उधार देने पड़ेंगे। और भाई साहब, कुछ खानेको तो मंगाइए। मैं दो दिनसे भूखा हूं।"

यह सुनकर तो उसके चेहरेका रङ्ग बदल गया। वह पलँगपरसे उठकर कमरेमें टहलने लगा और अपने हाथ मलने लगा। थोडी देर बाद बोला—

"मित्र! देखो, मैं महीनों बाद बीमारीसे उठा हू। सब रुपया इलाजमें खर्च हो गया। अब तो मेरे पास उधार देनेको कुछ नहीं है। मैं बडा लाचार हू। और खाने पीनेकी क्या पूछते हो?" मेरे यहाँ आजकल सिर्फ मूँगकी दाल बनती है। तुम चहो तो घण्टे भर बाद खा सकते हो।"

यह सुनकर तो मैं बहुत ही निराश हुआ। जब मै इसके साथ पढता था, तब मेरा खयाल था, कि यह जन्मभर मेरा सच्चा मित्र रहेगा, लेकिन इसका बर्ताव देख मेरी सब आशापर पानी फिर गया। आखिर घण्टे भर बाद मैंने थोडीसी मूँगकी दाल खाई। खातेमें उसने कहा—

"अगर तुम्हें रुपएकी जरूरत है तो ब्रजकिशोरके पास चले जाओ। वह भी तो तुम्हारा बडा मित्र है, और अभी उसे सुसरालसे चार पाच हजा-रका माल मिला है। मैं उसके नाम एक पत्र भी तुम्हें दिये देता हू। आज ही चले जाओ, परसों वहा

पहुंच जाओगे। मैं इस बातपर राजी हो गया और उसने ब्रजकिशोरके नाम पत्र देकर मुझे ज़बरदस्ती टाला। रास्तेमें मुझे सन्देह हुआ, कि उसने पत्रमें कोई बेजा बात तो नहीं लिखदी है। इस कारण मैंने बहुत होशियारीसे पत्रको खोलकर पढा। उसमें लिखा था—

"मित्रवर, कामिनी तुम्हारे पास जाता है। इसे अपने घरमें मत घुसने देना, क्योंकि एकबार सहारा मिलनेसे फिर यह टाले नहीं टलेगा। दरवाज़ेसे ही रास्ता बतला देना। यह बडा बदमाश है। मुझसे रुपए उधार मागता था। अगर तुमने इसे ठहराया और यह कुछ लेकर भाग गया तो मैं जिम्मेदार नहीं हूं। अधिक क्यालिखू।

तुम्हारा प्रेम भिखारी—राजा"

इस पत्रको पढ़कर मुझे बडा ताज्जुब हुआ, और मैंने ब्रज किशोरसे मिलनेका इरादा छोड दिया। फिर कुछ दिन बाद मुझे यह सूझा कि धर्मोपदेशक बन बैठना चाहिए, कारण कि जिस धर्मका अनुयायी कोई अपनेको बतलाता और बहस करता था उस पक्षसे उसे खानेको भोजन, ठहरनेको मकान और

विजय होने पर कुछ नकद इनाम मिलता था। इस भांति रुपया इकट्ठा कर करके मैं अपना काम चलाता रहा। रास्तेमें मुझे रासधारी मिले। उन्होंने मुझे नौकर रख लिया और म सुखाका पार्ट दिया। उसे करने में चला ही था कि आप लोग दीखे और मैं अधीर होकर लौट गया।"



पन्द्रहवां अध्याय।

कामिनीकी राम कहानी बडी लम्बी थी। हम सब रातको बहुत अबेरी सोए थे। दूसरे दिन दोपहरको लक्ष्मीकान्त आया। उसके साथ बट्टेलाल भी था। इसने मुझसे कानमें कहा कि, लक्ष्मीकान्तके व्याहकी बात-चीत नारायनदासकी लडकी से हो रही है और लडकीके चाचा भी राजी हो गए हैं। मुझे और कामिनीको वहा देखकर लक्ष्मी कान्त पहले तो बहुत चौंका पर पीछे हम सबसे बहुत अच्छी तरह मिला।

फिर मुझे अलग बुलाकर लक्ष्मीकान्तने लडकी का हाल पूछा। मैंने कहा—

"अबतक कुछ पता नहीं।"

यह सुन उसे बडा आश्चर्य हुआ और वह बोला—

"आपके चले आनेके बाद मैं कई बार आपके यहा गया। सब राजी खुशी हैं। क्या आपने वह बात लाडलीप्रसादसे कहदी है।"

मेरे 'नहीं' कहनेपर वह फिर बोला—

"आपने अच्छा किया। यह बात किसीसे नहीं कहनी चाहिए, क्योंकि इसमें अपनी ही बुराई है। सम्भव है, प्रभाका उतना अपराध न हो जितना हम समझते हैं।"

इतनेमें ही एक नौकर उससे कुछ कहने आया, जिससे हमारी बात चीत बन्द हो गई, पर यह तो मुझे मालूम हो गया कि, वह मेरा शुभ-चिन्तक है। लाडली प्रसादके आग्रहसे मैं दो दिन वहां ठहरा।

जिस दिन मैं चलनेको था, लक्ष्मीकान्तने मुझसे कहा—

"यह बडी खुशीकी बात है कि, मुझे आपके कुटुम्बकी सेवा करनेका एक अवसर मिल गया। मैं अपने मित्र कामिनीको सेनामें भरती होनेके लिए भेजता हूं। इसके लिए सौ रुपएकी जमानत की जरूरत है, सो मैं किये देता हूं। जब आपके पास रुपए हों दे दीजिएगा।"

मैंने रुपयोंकी हुंडी लिखदी और उसको इतने धन्यवाद दिये मानो मेरा मंशा रुपए चुकानेका नहीं था। दूसरे दिन लडका चलनेको हुआ। मेरे पास

सिर्फ आशीर्वाद बचा था सो मैंने उसे देव
कहा—

"बेटा, तुम देशके लिये लड़ने जाते हो। या
रखना कि, तुम्हारे दादा युद्धमें ही वीर-गति
प्राप्त हुए थे। तुम बड़े भाग्यवान हो कि, तुम
अपनी मातृ-भूमिकी सेवा करनेका अवसर मि
है। खुशीसे जाओ। अपने कर्त्तव्यसे पीछे क
मत हटना।"

लड़का चल दिया, और दूसरे दिन मैंभी लाड
प्रसाद और लक्ष्मीकान्तको धन्यवाद देकर रवान
हुआ। मै अबतक कमज़ोर था, इससे एक ट
किराए पर लेना पड़ा। मेरा मकान बीस मील थ
कि, इतनेमें रात हो गई। मैं एक सरायमें ठह
गया और भटियारेको बुलाकर कुछ बात-चीत कर
लगा। इतनेमें उसकी स्त्री आई, जो रुपया भुना
बाजार गई थी। उसने कहा—"ऊपर जो लुगा
ठहरो है उसके पास कुछ नहीं दीखता। उससे दाम
मांगना चाहिये।"

भटियारेने कहा—"क्यों घबराती हो? इकट्ठे दा
मिल जायेंगे।"

"उससे इकट्ठे मिलनेकी जरा भी आशा नहीं है। जो वह आज दाम न देगी तो मैं उसकी डडों से खबर लूगी।"

"नहीं, नहीं, वह भलीमानस है। उसके साथ मारपीट करना ठीक नहीं।"

"नहीं, भली हो चाहे बुरी, हमें तो जो किराया दे वही भला है।"

यों कह वह ऊपर चढ गई। इतनेमें ही मार-पीटकी आवाज आने लगी। हम भी वहीं पहुच गए। लडाई ठण्डी हुई। मैंने उसे पहचाना। वह मेरे गोवर्धन मामाकी नौकरानी थी। अपने गाव जा रही थी कि, रास्तेमें उसे लुटेरोंने लूट लिया और खूब मारा पीटा। उससे मालूम हुआ, कि प्रभा गोवर्धनके यहा पहुच गई है। गोवर्धनका मकान यहासे डेढ मील था। मैं फौरन चल दिया, और जाकर प्रभासे मिला। उसने कहा—

"मैं रातको दिगम्बरके साथ बाहर घासपर बैठी थी कि, इतनेमें दो आदमी आए, और उन्होंने मुझे झट एक इक्केमें बैठा कर इक्का दौड़ा दिया। मैं रास्ते भर खूब रोई-पीटी, चिल्लाई पर उन्हें जरा

रहम न आया। उनकी बातोंसे ऐसा मालूम होता था कि वे लक्ष्मीकान्तके आदमी हैं। वे न मालूम किस सडक पर ले गए और इक्का खूब तेज कर दिया। कोई घण्टे भर बाद ऐसी जगह पहुचे जहा सडक पर आधीसे एक पेड़ टूट पड़ा था, जिससे रास्ता रुक गया था। उन्हें अधेरी रात होने की वजहसे दीखा नहीं। उसमें घोडेकी टांगें उलझ गई और इक्का उलट गया। मैं इक्केमेंसे धडामसे गिर पडी और मेरी पीठमें कुछ चोट भी लगी। मैं तो पहलेसे ही घबरा रही थी, पर अब तो मेरी छाती धडकने लगी और कुछ देर तक बेहोश रही। जो आदमी इक्का हाक रहा था उसके ज्यादा चोट आई थी, इस कारण उसे वहीं छोड दूसरा आदमी मुझे थोडी दूरपर एक मन्दिरमें उठा कर ले गया और वहां बैठाकर तथा पुजारीकी सुपुर्द करके आप इक्के वालेकी खबर लेने बाहर गया। उसके चले जाने पर मैंने पुजारीसे सच्चा सच्चा हाल कहा और उसके चगुलसे अपनेको बचानेकी प्रार्थनाकी। मेरा जी भर आया और मैं रोने लगी। पुजारीको रहम आ गया। उसने कहा—

"यह अदमी एक बड़े जमींदारका नौकर है, जिसके यहासे हमें हमेशा कुछ न कुछ मिलता रहता है। हम तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते, पर हाँ, बचाव की एक सूरत नजर आती है। यहासे मील भर मकरपुरा गाव है। वहा तुम्हारे बापकी जान पहचानका कोई आदमी हो तो मैं कहला भेजू। वह आकर किसी तरकीवसे तुम्हें लिया ले जायगा।

मैंने कहा—"हा, वहा तो मेरे दादा गोवर्धन लाल रहते हैं। उनसे आप कहला भेजें। वह फौरन चले आवेंगे। पुजारीजी! आपकी वडी कृपा होगी।"

फिर तो पुजारीने एक आदमी भेज दिया। इतनेहीमें वह आदमी इक्केवालेको लेकर आया। पुजारोने उनसे कहा—

"वह लडकी सामनेके दालानमें सो गई है। मालुम होता है उसके वहुत चोट आई है। तुमभी सो रहो, रात वहुत हो गई है, सुवह चले जाना। यह सुन वे दोनों भी छतपर जा सोये। पर मुझे नींद कहा? कोई डेढ घटे वाद गोवर्धन दादा आए और पुजारीने चुपकेसे रातके १२ वजे मुझे उनके साथ कर दिया। तवसे यहीं हू "

प्रभाकी बातें सुनकर मेरा लक्ष्मीकान्त परभी शक बढा, और सारी रात मैंने इसी उधेड बुनमें काटी कि, यह काम मदन मोहनका है या लक्ष्मी-कान्तका। सवेरा होने तक मैंने यही तय किया कि यह काम लक्ष्मीकान्तका है।

सवेरे मैं, प्रभाको अपने पीछे टट्टू पर बैठाकर, चल दिया, परन्तु वर्षाके कारण, दो पहरी भर चलना न हो सका। शामको चले। रात होते होते हम अपने एक नातेदार सरूपचन्दके यहाँ ठहरे। वहांसे हमारा घर लगभग पाच मील दूर था। मेरा इरादा था, कि हम लोग सीधे घर चले जाये, पर रात बहुत हो चली थी और रास्तेमें चोर डाकुओंका डर था, इधर मौसम भी खराब था, इसलिये मुझे विवश हो प्रभाको छोडना पडा। अत उसे वहा छोडकर मैं चल दिया। रास्तेमें मैंने तरह तरहके पर यही अनुमान लडाये। करीब आधी रातके मैंने घरका दरवाजा खटखटया। पर कोई जवाब न मिला। इतनेमें मैं देखता क्या हु, कि मेरे मकानमें आग लग गई है। मैं खूब चिल्लाया। लडकेकी नींद खुली, और उसने सबको जगा दिया। आग

खूब भडक उठी। यहा तक, कि छत तक पहुँच गई। मैंने चिल्लाकर कहा—

"मेरे दोनों बच्चे कहा हैं?"

ताराने कहा—"वे तो जल गए। उनके साथ मैं भी जल मरूगी।"

इतने ही में मैंने भीतरसे लडकोंका रोना सुना। सुनते ही मुझसे न रहा गया। मैं फौरन आगमें होकर दौडा और ज्यों ही कमरेमेंसे उन्हें लेकर मैं भागा, त्यों ही कमरेकी छत गिरी। उन्हें लाकर मैंने कहा—"अब खूब आग लगे और मेरा सब माल जल जाय! मेरे बच्चे ही मेरा सर्वस्व हैं। इन्हें मैंने बचा लिया। हमारा खजाना हमें मिल गया, अब क्या परवाह?"

अब मुझे मालूम हुआ, कि कन्धेतक मेरी बाह जल गई है। इसलिए मैं आग बुझानेमें लडकेको ज़रा भी मदद न दे सका। इतनेमें मेरे बहुतसे पडोसी इकट्ठे हो गए, और तमाशा देखने लगे। सिवा दो तीन चीजोंके जिन्हें कुमुद पहले ही उठा लाया था, सब सामान जल गया।

जब सवेरा हुआ, और आग बुझ गई, तब सब

मुझसे मेरी यात्राका हाल पूछने लगे। मैंने उनसे सब हाल कहा, और प्रभाको लेने, कुमुदको सरुपचन्दके यहा भेजा। वह उसे लिवा लाया। आते ही लडको और उसकी मा खूब रोई।

मकानकी मरम्मत करके, हम, जैसे बना वैसे, शान्ति-पूर्वक रहने लगे। प्रभा बहुत सुस्त रहा करती थी। मैंने उसे बहुत समझाया, कि सदा किसीपर दु ख नहीं रहता और एक कहानी सुनाई-

रहीमनका विवाह छोटी उम्रमें ही एक बडे आदमीके साथ हो गया था। पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें वह पुत्रवती हो गई, पर उसके पतिका स्वर्गवास हो गया। एकदिन वह ऊपर खडी खडी बच्चेको खिला रही थी, कि बच्चा उसके हाथोंमेंसे नीचे नदीमें जा पडा और लापता हो गया। वह भी कूद पडी। बच्चा तो उसे न मिला, पर वह बडी मुशकिलसे दूसरे किनारे जा लगी, जहा कुछ दुश्मन उस राजको लूट रहे थे। उन्होंने उसे कैद कर लिया और चाहा कि मारडालें, पर एक नौजवानने उन्हें रोका और वह उसे अपने साथ ले गया। उसने रहीमनके साथ जबर्दस्ती विवाह कर लिया।

वह सरकारी अफसर था। दोनों बहुत दिनतक ग ूव आराममें रहे एक बार वहाका राजा युद्धमें अपने एक दुश्मनसे हार गया। दुश्मनने वहा आकर कब्जा किया, और सबको मार डालनेका हुक्म दिया। वह अफसर भी मारा जानेको था। घातक सिर्फ हाकिमके हुक्मकी राह देख रहे थे। इसी समय रहीमन उससे अन्तिम विदा लेने आई, और रोकर कहने लगी—"परमेश्वरने यह दिन दिखानेको मुझे जिन्दा रहने दिया। मेरा लडका तो नदीमें गिरकर मरा, घरबार सब छूटा, और तुम्हारा यह हाल"!

वहाका हाकिम उसका लडका ही था। उसने अपनी मॉंको पहचाना, और उसके पैरोंमें गिरकर रोने लगा। उसके पतिकी रिहाई हुई।"

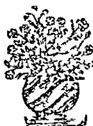
इस प्रकार मैं प्रभाका मन बहलाया करता था। पर वह मेरी बातें ध्यानसे नहीं सुनती थी, क्योंकि उसके चित्तमें शान्ति नहीं थी। किसीसे मिलने जुलनेमें उसे यह डर लगता था कि, कोई उससे नफरत न करता हो, और एकान्तमें केवल चिन्ता उसे घेरे रहती थी। इन्हीं दिनों हमने सुना कि,

लक्ष्मीकान्तका व्याह नारायणदासकी लडकीसे होने वाला है। मेरा इरादा हुआ कि, नारायणदाससे लक्ष्मीकातका सब हाल कहला भेजूं, और जो बुराई उसने हमारे कुनबेके साथ की है, उसकी भी सूचना देदू। इसलिए एक पत्र देकर मैंने कुमुदको भेजा। तीन दिन बाद उसने वापस आकर कहा—

"मैं पत्र नहीं दे सका, घरपर छोड आया हू। सब लोग किसी देवताकी पूजा करने परदेस गये हैं। लौटती बार मैं लक्ष्मी-भवनकी तरफ होकर आया हू। एक मनुष्यसे मालूम हुआ कि, कल ही लक्ष्मीकातका टीका चढा है। वहा खूब जलसे हो रहे थे। मेरी रायमें लक्ष्मीकान्त ससारके उन जीवोंमेंसे है जो सबसे अधिक सुखी हैं।"

मैंने कहा—"अगर वह सुखी है, तो होने दो। लेकिन जरा हमारी तरफ भी देखो—यह बिछानेकी चटाई है, यह रहनेकी जगह है, ये गली हुई पोली दीवारें हैं, यह सीला हुआ फर्श है, शरीर आगसे जल गया है, आस पास बच्चे रोटीके लिए रो रहे हैं, लेकिन, यहा भी एक ऐसा दुखिया है जो किसी तरह भी उस आदमीसे अपना स्थान नहीं बदलेगा

जिसे तुम सुखी बतलाते हो। अगर तुम इस बात को सोचो, कि तुम्हारा हृदय कितना शान्त और निर्मल है, तो तुम तुच्छ आदमियोंकी भडक और शानकी कुछ भी परवा न करो। हमारा जीवन परलोकमें जानेका रास्ता है, और हम उसके पथिक हैं। जो नेक हैं, वे यहा, उतने ही सुखी रहते हैं जितने, बडी भारी म जिल तय कर चुकनेके बाद घर को लौटते हुए, यात्री मार्गमें रहा करते हैं।"



सोलहवां अध्याय।



दूसरे दिन हम घरके आगे चबूतरेपर बैठे थे कि, लक्ष्मीकान्तके नौकर चाकर आते दिखलाई पड़े। उनको देखते ही लड़कियां भीतर चली गई। इतनेमें गाड़ीमेंसे उतर कर लक्ष्मीकान्त मेरे पास आया और कुशल-मङ्गल पूछने लगा। मैंने कहा—

"ये बातें पूछनेसे आपकी और भी नीचता सूचित होती है। अगर मुझमें पहले जैसी ताकत होती, तो मैं आपको बदमाशीका मजा चखाता। पर मैं क्या कहूं; अब मैं असमर्थ हो गया हूं।"

"मैं नहीं समझा आप क्या कह रहे हैं! क्या आपको मालूम नहीं कि, आपकी लड़कीके साथ मैंने कुछ अत्याचार नहीं किया।"

"जा, बदमाश, झूठे, तूने हमारे कुनबेको कलङ्कित किया।"

"अगर तुम मुसीबतको आप जानकर बुलाया चाहते हो, तो मैं कुछ नहीं कर सकता। लेकिन तुम चाहो तो मैं किसीके साथ उसका ब्याह करादूं।"

यह बात सुन कर मैं और भी नाराज हुआ। मैंने चिल्लाकर कहा—

"जा, मेरे सामनेसे काला मुंहकर, बेईमान! अगर मेरा लडका यहा होता, तो तुझे मारे विना न छोडता।"

"तुम मुझे बुरे शब्द कहनेके लिए लाचार कर रहे हो। अच्छा, मैं अभी तुम्हारी सौ रुपएकी हुंडी जारी कराता हूं, और किराया वसूल करनेकी दरखास्त कचहरीमें देता हूं। नहीं तो चलकर मेरे व्याहके जलसेमें शामिल हो।"

"लक्ष्मीकान्त, मुझे तुम्हारी नाराजीकी जरा भी परवा नही। खुश होकर तुम कौनसा राज दे दोगे, और नाराज हो कर कौनसा मुझे मार डालोगे। तुमने बडा धोखा दिया। मेरे साथ विश्वास-घात किया। जाओ, मैंने तुम्हें माफ किया, पर मैं हमेशा तुमसे नफरत करूंगा।"

"अच्छा तुम्हें इसको सजा मिलेगी"—यों कह कर वह चला गया। उसके जानेपर लडकिया बाहर आ गईं। तारा इन बातोंसे बहुत अप्रसन्न हुई। हमें जल्दी मालूम हो गया कि, लक्ष्मीकान्त-

की धमकी कोरी नहीं थी। सवेरे ही उसका नौकर किराया लेने आया। मेरे पास देनेको क्या धरा था। वह मेरे चौपाए खोल ले गया। तब लड़कोंने मुझे उसके साथ मेल कर लेनेकी सलाह दी। पर मैं राजी न हुआ। मैंने कहा—

"यह निकाल देगा तो दूसरी जगह जा रहेंगे, पर इस नीचसे अब मेल न करेंगे।"

सुबह देखता हू तो दो सिपाही आ रहे हैं। उन्होंने आकर मुझसे कहा—"तुम्हें बडी जेल चलना पडेगा, जो यहासे पाँच मील है। जबतक मुकद्दमेका फैसला न होगा, तुम्हें हवालातमें रहना पडेगा। क्या ठीक है, तुम किराया लेकर कहीं भाग जाओ।"

मैंने कहा—"भाई साहब, इस समय ओले पड रहे हैं, मेरी एक बांह जुदी जल गयी है, मुझे बुखार जुदा आता है, कपडे मेरे पास पहननेको नहीं, ऐसेमें मैं कैसे पाच मील जाऊंगा। पर, अगर—"

फिर मैंने तारासे कहा—"अपना जो कुछ माल है सब इकट्ठा करलो और चलनेकी तैयारी करो।

हवालातके पास ही रहनेके लिए कोई मकान किराये पर ले लेना।"

यह सुन कर वह रोने लगी। बच्चे सिपाहियों से डर गए थे, उन्हें उसने छातीसे लगा लिया। लग भग एक घटेमें हमारी जानेकी सब तैयारी हो गई।

हम असवाब लेकर धीरे धीरे चल दिए। प्रभा-को कुछ हरारत थी। एक बच्चेका हाथ कुमुदने पकड लिया, दूसरेका ताराने, पर मेरे दुखसे सब रो रहे थे। हम घरसे थोडी ही दूर आगे बढे थे कि, इतनेमें मैंने देखा कि हमारे गावके लगभग पचास गरीब आदमी चिल्लाते चिल्लाते पीछे दौडे आ रहे हैं उन्होंने सिपाहियोंको पकड लिया और कहा--

"जब तक हमारी जानमें जान है, इन्हें नहीं जाने देंगे।"

इस झगडेका नतीजा अच्छा न होता, इससे मैंने बीच बचाव करा दिया, और सिपाहियोंको पिटनेसे बचाया। फिर मैंने उन लोगोंसे कहा—

"क्या इसी तरह तुम मुझसे प्रेम करते हो? क्या

इसी प्रकार मेरा उपदेश मानते हो ? यह क्या कुछ भलमनसाहतकी बात है, कि तुम अदालतके सिपाहियोंपर टूटे पड़ते हो ? तुम्हारा मुखिया कौन है ? किसने तुम्हें भड़काया ? मैं उसकी खबर लूंगा। जाओ अपना अपना काम करो।"

इस प्रकार उन्हें धमकाकर मैंने पीछे लौटाया। हम मील डेढ मील चले होंगे, कि वर्षा बहुत जोर से होने लगी। इसलिये दोपहरी भर हमें रास्तेमें एक धर्मशालामें ठहरना पड़ा। रात होनेके कुछ पहले हम जेलखानेके पास गावमें जा पहुंचे। हम एक सरायमें ठहरे और सबने खाया। सबके ठहरनेका बन्दोबस्त करके मैं दारोगाके पहुंचा और जेलमें बन्द कर दिया गया। कैदी खेल कूद रहे थे। कायदेके म... दाम दिए। तमाखू आई। सबने पी। देखकर मैंने सोचा—"ऐसे नीच तो ह... मैं दुख पाऊं ! मुझे भी आनन्दमें ...

ज्योंही मैं एक कोनेमें जाकर कैदी मेरे पास आकर मुझसे... उसने पूछा —

"क्या तुम चारपाई लेते आए हो ? तुम्हारा कमरा बड़ा ठण्डा है। अगर न ,लाए हो, तो मैं अपने आधे कपड़े तुम्हें बिछानेके लिए दे सकता हूं।"

मैंने उसे धन्यवाद देकर कहा—

"जेलखानेमें भी ऐसे कारुणिकोंको देख मुझे आश्चर्य होता है। इस दुनियामें सभीपर मुसीबत आती है, पर ऐसी दशामें भी परोपकारी मिलजाते हैं।"

"तुम दुनियाँकी क्या कहते हो, सब आदमी अपने अपने मतलबमें मस्त हैं। सब अपनी अपनी कहते हैं। परमेश्वरने कुछ अजीब तरहकी सृष्टि-रचना की है—"

"माफ़ कीजिए, आपकी सब बातें मैं सुन चुका हूं। आप वही हैं, जो मुझे हाटमें मिले थे। आपका नाम जगमोहन सहाय है न ? क्या आपको पण्डित प्रेमकान्तकी याद नहीं, जिनसे आपने एक बैल खरीदा था ?"

यह सुनकर तो उसने मुझे पहचान लिया। अन्धेरा होनेकी वजहसे अबतक नहीं पहचाना था।

फिर उसने कहा—"हा, मुझे याद है। मैंने बैल तो लिया था, पर दाम देना भूल गया था। मुझे सिर्फ तुम्हारे पडोसी फतेचन्दका डर है। वही मेरे बहुत खिलाफ है। वह हलफसे कहते कहता है, कि मैं झूठे सिक्के बनाता हूं। मुझे बडा अफसोस है, कि मैंने तुम्हें धोखा दिया। ऐसे कामोंसे ही मुझे यह मुसीबत भोगनी पडी है।"

"आप मुझे यहा सहायता देने कहते हैं, इसलिए मैं अपने लडकेके द्वारा फतेचन्दसे कहला भेजूंगा, कि वह आपके विरुद्ध कुछ न कहे, और अगर आप चाहेंगे, तो मैं भी आपकी कुछ सहायता करूंगा।"

"अच्छा तो मैं तुम्हें रातको अपने आधेसे ज्यादा कपडे दूंगा, और जेलमें हमेशा तुम्हारा मित्र रहूंगा।"

"मैं आपका अहसान मानता हूं। पर हाटमें तो आप बुड्ढेसे मालूम होते थे। अब आप जवान क्यों लगते हैं?"

तुम्हें दुनियाका जरा भी हाल नहीं मालूम; मैंने उस वक्त झूठे बाल लगा लिए थे। हाय, जितना समय मैंने बदमाशीमें बिताया, उससे आधा भी

अगर मैं कोई रोजगार सीखनेमें लगाता, तो अब तक बहुत रुपया इकट्ठा कर लेता। मैं बदमाश तो जरूर हूं, पर आपके साथ जेलखानेमें धोखेबाजी नहीं करूंगा।"

इतने ही में नौकर हाजिरी लेने आया और हमें कमरोंमें बन्द कर गया। उसके साथ ही एक आदमी एक चटाई लाया और मेरे लिए कोनेमें बिछागया। उसपर मैंने जगमोहन सहायके दिए हुए कपड़े बिछा लिए। बस, फिर मैं हमेशाकी रीतिके अनुसार ईश्वरका ध्यान करके और उसे धन्यावाद देकर सो गया।



फिर उसने कहा—"हां, मुझे याद है। मैंने बैल तो लिया था, पर दाम देना भूल गया था। मुझे सिर्फ तुम्हारे पडोसी फतेचन्दका डर है। वही मेरे बहुत खिलाफ है। वह हलफ़से कहने कहता है, कि मैं झूठे सिक्के बनाता हूं। मुझे बडा अफ़सोस है, कि मैंने तुम्हें धोखा दिया। ऐसे कामोंसे ही मुझे यह मुसीबत भोगनी पडी है।"

"आप मुझे यहां सहायता देने कहते हैं, इसलिए मैं अपने लडकेके द्वारा फतेचन्दसे कहला भेजूंगा, कि वह आपके विरुद्ध कुछ न कहे, और अगर आप चाहेंगे, तो मैं भी आपकी कुछ सहायता करूंगा।"

"अच्छा तो मैं तुम्हें रातको अपने आधेसे ज्यादा कपडे दूंगा, और जेलमें हमेशा तुम्हारा मित्र रहूंगा।"

"मैं आपका अहसान मानता हूं। पर हाटमें तो आप बुड्ढेसे मालूम होते थे। अब आप जवान क्यों लगते हैं?"

तुम्हें दुनियाका जरा भी हाल नहीं मालूम; मैंने उस वक्त झूठे बाल लगा लिए थे। हाय, जितना समय मैंने बदमाशीमें बिताया, उससे आधा भी

अगर मैं कोई रोजगार सीखनेमें लगाता, तो अब तक बहुत रुपया इकट्ठा कर लेता। मैं बदमाश तो जरूर हूं, पर आपके साथ जेलखानेमें धोखेबाजी नहीं करूंगा।"

इतने ही में नौकर हाज़िरी लेने आया और हमें कमरोंमें बन्द कर गया। उसके साथ ही एक आदमी एक चटाई लाया और मेरे लिए कोनेमें बिछा गया। उसपर मैंने जगमोहन सहायके दिए हुए कपड़े बिछा लिए। बस, फिर मैं हमेशाकी रीतिके अनुसार ईश्वरका ध्यान करके और उसे धन्यावाद देकर सो गया।



सत्रहवां अध्याय।

दूसरे दिन सवेरे ही घरके लोगोंने यहा आकर मुझे जगा दिया। जागते ही मैं देखता हूं, कि सब मेरे पास खड़े खड़े रो रहे हैं। मैंने उनको बहुत कुछ समझाया—

"बच्चो, मैं रातको बड़े आरामसे सोया। कहो प्रमाको कहाँ छोड़ा ?"

"उसको बुखार आया है, इससे साथ नहीं लाए।"

मैंने कुमुदसे कहा—

"बेटा' देखो तुम्हारी मिहनतसे ही हमारी गुजर होगी। अगर तुम दिनभर मजदूरी करोगे तो किफायतसे कहीं हमारा काम चलेगा। तुम अब सोलह बरसके होगए, और हो भी ताकतवर। अपनी ताकतसे कुछ काम लो और अपने मा बापको भूखों मरनेसे बचाओ। आज शामको जाकर कलके लिए कुछ ढूंढो, और अपनी मजदूरी रोज रातको ले आया करो।"

थोडी देर बाद सब चले गये और मैं भी बडे कमरेमें चला गया। वह हवादार तो जियादा था, पर वहाकी क्रूरता और चिल्लाहटके कारण मुझे फिर अपने ही कमरेमें आना पडा। यहा आकर मै उन झगडालू कैदियोंकी दशापर विचार करने लगा। उनमें अक्लकी कमी देख मुझे उनपर बडा रहम आया और मैने उन्हें अच्छी शिक्षा देनी चाही। अपना इरादा मैंने जगमोहन सहायसे कहा— वह सुनकर बहुत हँसा, और उसने उन सबसे भी कह दिया। सब लोग मेरी बात सुननेको राजी होगये।

मैंने उन्हें थोडी सी रामायण सुनाई। उसे उन्होंने बडे प्रेमसे सुना। इसके बाद मैं उन्हें कुछ शिक्षा देने लगा। पहले तो वे मेरी बातोंपर खूब हँसे। कहनेका उनपर कुछ असर नहीं हुआ। मगर मैं निराश न हुआ और उन्हें गम्भीरतासे समझाने लगा—

"मित्रो, जो कुछ मैं कहता हू, तुम्हारे भलेके लिए कहता हूँ। मेरा इसमें कुछ स्वार्थ नहीं, क्योंकि मैं भी तुम्हारे साथ कैदमें हू। तुम्हें इतना अपवित्र देखकर मुझे बडा दुःख होता है। क्योंकि

इससे फ़ायदा कुछ नहीं, नुक़सान ही नुक़सान है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हू, कि अगर तुम दिन भरमें हज़ार वार कसमें खाओगे, तो भी तुम्हें एक पैसा कहींसे न मिलेगा। फिर वार वार कसम खानेसे क्या फायदा ? देखो, अगर हम एक दूसरेके साथ बेईमानी करेंगे, तो हमें सज़ा मिलेगी। हमें सिर्फ ईश्वरकी शरण लेनी चाहिए, और कभी उसके जीवोंको दुःख नहीं देना चाहिए।"

बहुतसे क़ैदियोंने ये बातें सुनकर मेरा बड़ा अहसान माना। मैंने दूसरे दिन फिर व्याख्यान देनेका वादा किया।

दूसरे दिन, बच्चे जब मेरे साथ भोजन कर रहे थे, तब जगमोहन सहायने उन्हें देख लिया। उसने कहा—"पण्डितजी ये बच्चे बड़े सुशील हैं। यह जगह इनके लायक नहीं।"

मैंने कहा—"क्या हुआ। अगर उनका चाल-चलन अच्छा है, तो वे कहीं रहें। जेल तो हमारा तीर्थ है—कृष्ण भगवान्‌की जन्म भूमि है।"

"हां, इन्हें अपने पास देखकर तुम्हें तसल्ली जरूर रहती होगी।"

"इसमें क्या शक है। इन्होंने ही मेरी जेलको महल बना रक्खा है।"

"तब तो मैं जरूर कसूरवार हूं। देखो, इस बड़े लड़केको मैंने तकलीफ दी थी, पर मुझे आशा है यह मुझे माफ करदेगा।"

यद्यपि लड़केने पहले जगमोहन सहायको बना-वटी रूपमें देखा था; पर यह बात सुनकर तो उसकी आवाज और शकल पहचान ली, तथा मुसकुराहटके साथ, उसे माफ करके कहा—

"तुमने क्या मेरा चेहरा देखकर मुझे दानके लायक समझा?" जगमोहन सहाय बोला—"तुम्हारे चहरेमें कोई ऐसी बात नहीं थी, पर तुम्हारे मैले कपड़े देख मैंने तुम्हें धोखा दिया। लेकिन तुम अपनी कुछ तौहीन मत समझो। ऐसी भूलें भी ज्यादा अक्लमन्दोंको सैकड़ों बार हुआ है।"

कुमुदने कहा—"तुम्हारे जीवनका हाल सुनकर तो सच मुच बड़ी हँसी आवेगी, और इससे कुछ नसीहत भी होगी।"

जगमोहन सहाय बोला—"नहीं, हंसीकी भी कम बात भी न होगी, पर तुम्हें सुननेका शौक है तो सुन

लो। मैं वचपनसे ही चालाक था। जव सात वरसका था, तभी लोग मुझे छोटासा आदमी कहने लगे थे। सोलह वरसकी उम्रमें तो मुझे दुनियाका खासा तजरवा हो गया था। वीस वरसकी उम्र तक मैं विलकुल ईमानदार रहा, पर कोई मुझपर यकीन नहीं करता था। मैं कभी लाल, कभी पीली पगड़ी पहनता था और एक पुरानी तर्ज़ की मामूली वगलवन्दीसे शरीरको ढक लेता था। सवेरे मैं दो तीन घण्टे पूजा-पाठ करता था, और खूब चन्दन लगा कर, गलेमें माला डालकर, खड़ाऊँ पहन कर वाहर निकलता था। फतेचन्द पर मैं अकसर हँसा करता था और उसे सालभरमें एक दो वार जरूर धोखा दिया करता था। अच्छा, यह तो वताओ, तुम सव यहा कैसे आए? मैं खुद फँसगया हू तो क्या है, शायद मैं तुम्हारे वचानेका कोई उपाय निकाल सकू।"

मैंने उससे सव हाल कहा। सुनकर उसने अपना माथा ठोंका और अपने कमरेमें चला गया।

दूसरे दिन मैंने तारा और लड़केवालोंसे कहा, कि मैं इन कैदियोंको धर्मकी शिक्षा देकर अच्छे

रास्ते पर लाया चाहता हू । सबने इसका विरोध किया और कहा कि, इससे जराभी लाभ न होगा, वे मेरी कही एक न सुनेंगे। मैंने कहा—

"देखो, वे चाहे जितने बुरे हों, पर मुझे तो सतोष हो जायगा। अगर उनमेंसे एक आदमी भी सुधर गया, तो मेरी सब मिहनत वसूल हो जायगी।"

यों कहकर मैं जेलके बड़े कमरेमें गया। वहा सब मेरी राह देख रहे थे; पर सबके सब बड़े शैतान थे। उन्होंने मुझे बहुत चिढ़ाया। एकने मेरी पगड़ी सिरपरसे गेरदी और कहा, कि माफ कीजिए, धोखे से धक्का लगगया। एकने आकर मुझसे इसभाति बातें कीं, कि उसके मुहमेंसे छींटे उड़कर मेरी किताब पर पड़े। एकने "ओम् ओम्" ऐसे चिल्लाकर गाया कि, सब एक साथ हँसने लगे। एकने चुपकेसे मेरी जेबमेंसे चशमा निकाल लिया। एकने क्या किया, कि मेरी रामायणको उठाकर उसकी जगह चुपकेसे 'तोता-मैनाका' किस्सा रख दिया। पर मैंने इन बातोंकी ज़रा भी परवा न की। इसका नतीजा यह हुआ, कि पाच सात दिनमें

उन्होंने सब शरारत छोडदी और ध्यानसे सुनने लगे। वे दिन भर लडा करते थे, इस लिए मैंने उनके लिए एक काम निकाला। कितनेही कैदी दाम इकट्ठे करके तमाखू मगाने लगे, और उसे साफ करके एक दूसरे को बेचने लगे। इससे कुछ फायदा होने लगा। इस तरह उनमें कुछ आदमीयत आगई, और उनका एक समाजसा बन गया। अब हमें मालूम हुआ कि, मनुष्य चाहे जितने बिगड गए हों, अगर कोई सुधारना चाहे, तो उनका सुधरना असम्भव नहीं।

मुझे जेलमें आए पन्द्रह दिनसे जियादा हो गए, पर प्रभाको मैंने नहीं देखा। आखिर मैंने उसे बुलवाया। दूसरे दिन वह अपनी माँका सहारा लिये आई। बीमारीके सबबसे उसका शरीर सूखकर अस्थिपजर रह गया था। उसे देख मुझे बडा दुःख हुआ। उसने कहा—

"मुझे देखकर तुम दुखी मत हो। मेरे भाग्यमें सुख नहीं बदा है। मुझे दीखता है कि मेरा अन्त समय आ पहुंचा। अब तो, मेरी रायमें, तुम्हें लक्ष्मीकान्तसे मेल करलेना चाहिए, जिससे कमसे कम मरते समय तो मैं तुम्हें दुःखमें न देखू।"

"नहीं, नहीं, ऐसा मैं कभी नहीं करूगा। और, मुझे यह कुछ दु ख भी नहीं है। जबतक तुम सब राजी खुशी हो, मुझे कोई दुख नहीं हो सकता।"

इस समय मेरे पास एक कैदी बैठा था। उसने कहा—

"देखो, अगर तुम जाकर लक्ष्मीकातके हाथ पैर जोडो तो तुम्हारी रिहाई हो जाय। तुम्हारे दुखी होनेसे तुम्हारा सब कुनबा दुखी हो रहा है।"

"तुम्हें लक्ष्मीकातका हाल नहीं मालूम। मैं चाहे जितना हाथ जोडू, वह कभी मेरी रिहाई न करेगा। पिछले साल उसका एक कर्जदार जेलमें ही भूखों मर गया, पर उसने जरा रहम न किया। वह बडा बदमाश है।"

"यह तो ठीक है पर तुम्हारी लडकी बीमार है। यहा रहनेसे रोज उसकी बीमारी बढती जाती है। अच्छा, तुम लक्ष्मीकातसे न मिला चाहो तो उसके चाचासे ही मिल लो। वह तो बडा उदार है। और नहीं तो उसे एक पत्रही डाकसे भेजदो।"

आखिर उसके कहने सुननेसे मैंने कमलाकान्त को एक पत्र लिखा। इन दिनों ताराने बहुत जिद्द की,

कि जिस तरह हो सके लक्ष्मीकातसे मेल कर लिया जाय, क्योंकि लडकीकी दशा दिन पर दिन बिगडती जाती थी। पाच दिन हो गए पर चिट्ठीका जवाब नहीं आया। उसी दिन मैंने सुना कि, लडकीका बोल बन्द हो गया है। अब तो मुझे जेलमें होनेसे सचमुच बडा दुख हुआ। आखिर मैंने सुना कि, वह मर गई। मैं रोने लगा। इसके अलावा और करही क्या सकता था। जगमोहन सहायने मुझसे कहा—

"लडकी तो मर गई। अब औरोंकी तो कुछ खबर लो। अपनी भी कुछ फिक्र करो। दिनपर दिन सूखते जाते हो। बेहतर है कि घमण्ड छोड़ कर लक्ष्मीकान्तसे माफी मागलो।"

"सच कहता हू' अब मुझमें जरा भी घमण्ड नही रहा। अगर तुम्हारी सबकी यही इच्छा है, तो मैं माफी मागनेको तैयार हू।"

यह सुन उसने झट एक अरजी लिखदी और मैंने उसपर दस्तखत कर दिया। कुमुदको अरजी देकर मैंने लक्ष्मीकान्तके पास भेजा। वह सात घण्टे में लौट आया और जबानी जवाब लाया। उसने कहा—

"लक्ष्मीकान्त कहते हैं, कि अब मैं माफ नहीं कर सकता। तुमने मेरे चाचा तकसे मेरी शिकायत की। अब जो कुछ तुम्हें कहना सुनना हो, मेरे आम-मुख्त्यारसे कहना। मुझसे कुछ मतलब नहीं।"

तब मैंने जगमोहन सहायसे कहा—

"देखो, अब तुमने उसका स्वभाव पहचाना। अब मैं अपने सब बाल बच्चोंको परमेश्वरकी सुपुर्द करता हू। वही इन अनाथोंकी रक्षा करेगा। मेरे दिन अब आ पहुँचे।"

मैं यों कही रहा था कि, इतनेमें तारा आपहुची, और उसने मेरी कुछ बातें भी सुन ली। उसकी आंखोंसे आसुओंकी धारा बह रही थी और मुखसे शब्द नहीं निकलता था मैंने कहा—

"तुम रो रोकर मुझे और दुखी क्यों करती हो? अब जो बचे बचे हैं उनकी ही देख भाल करो"

"हमारी प्यारी लड़की—हमारी सुधा—चली गई। उसे कोई पकड ले गया"

जगमोहन सहायने कहा—"क्या! क्या! सुधा कहाँ गई?"

तारा तो बराबर रोती रही, कुछ जवाब न दे सकी, पर उसके साथ जो एक कैदीकी स्त्री आई थी उसने कहा—"हम दरवाजे पर बैठे थे, इतनेमें एक सफेदपोश आदमी गाडीमें आया और सुधाको जोरावरी बैठाकर उसने गाडी दौडादी।"

यह सुन मैं भी रोने लगा। इसपर तारा बोली—"देखोजी, तुम अधीर मत हो। तुम्हें रोते देख मेरा हृदय फटा जाता है। हुआ सो हुआ, क्या करे"

इतनेमें लडका भी आ गया। उसने कहा—

"धीरज धरो। जो कुछ परमेश्वर करता है, हमारे अच्छेके लिए करता है।"

मैंने कहा—'लडके, चारों तरफ देख ले। मुझे अब संसारमें सुख नहीं। हाय, मुझे तो अब मर करही शांति मिलेगी।"

"नहीं, नहीं। अब भी एक ऐसी बात है, जिसे सुनकर तुम्हें संतोष होगा। देखो, कामिनीका पत्र अभी आया है।"

"हा। वह बहुत आनन्दमें है। उसका अफ़-सर उससे बहुत खुश है। अब उसकी तरक्की होने वाली है।"

ताराने कहा—"तुम्हें कैसे यकीन है, कि कामिनीपर कोई मुसीबत नहीं आई।"

लडकेने कहा—"हा हमें यकीन है। तुम पत्र देख लो।"

"तुम्हें क्या खबर, कि पत्र उसीने भेजा है ?"

"हा, हा, उसीका है। वह एक दिन हमारी सबकी रक्षा करेगा।"

ताराने कहा—"तो मैं ईश्वरको धन्यवाद देती हूँ। हममेंसे एक तो सुखी है। अच्छा हुआ जो मेरा पिछला पत्र उसे नहीं मिला। देखो जी, मुझे इससे ही सतोष है, कि मेरा एक लडका तो सुखी है। पिछले पत्रमें मैंने उसे गुस्से में आकर, लक्ष्मी-कान्तसे बदला लेनेको लिख दिया था। ईश्वरने अच्छा किया, कि वह उसके पास तक न पहुँचा। अब जरा मेरा चित्त ठिकाने आया"

मैंने कहा—"तुमने बडा बुरा किया, कि उसे बदला लेनेको लिखा। अच्छा हुआ, परमेश्वरने

उसपर कृपा की, नहीं तो हमारा अबतक पता भी न चलता। मेरे मरनेके बाद बच्चोंकी रक्षाके लिए ही परमेश्वरने उसे आपदासे बचाया है। हमारा सब सुख अभी नहीं जाता रहा है। हममेंसे एकतो सुखी है और उसे हमारी मुसीबतका हाल नहीं मालूम है। परमेश्वरने विधवा मा और भाई बहनोंकी रक्षाके लिए ही उसे बचाया है। लेकिन बहनें कहा हैं? हाय, उसकी अब कोई बहन नहीं रही।

कुमुदने कहा—"इस पत्रको जरा तुम सुन भी तो लो, इसे सुनकर तुम्हें ज़रूर ख़ुशी होगी।

"अच्छा, बेटा, सुनाओ"

कुमुद पढ़ने लगा—

"मान्यवर,

ईश्वरकी कृपा और आपके आशीर्वादसे मैं यहा बहुत सुखी हूँ। मेरा अफसर मुझसे बहुत ख़ुश है, और वह मेरा मित्र हो गया है। हालमें मेरी तरक्की होनेवाली है। न मालूम आपने पत्र क्यों नहीं भेजा। क्या आप सब मुझे भूल गए? पर मुझे सबकी याद है।

आपका आज्ञाकारी,—कामिनी"

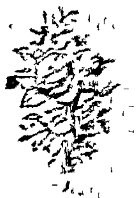
मै ने कहा—"इस आपत्तिमें हम परमेश्वरको किन शब्दोंमें धन्यवाद दें। उसीने लडकेकी रक्षा की है, जिसमें वह अपनी विधवा माता और इन बच्चोंका पालन करे। मेरा पैतृक धन तो ये बच्चे ही हैं।"

मैं यों कही रहा था, कि मुझे जेलखानेके पास सडकपर कुछ भम्भड मालूम हुआ। थोडी देरमें मैंने देखा, कि कोई शख्स हथकडी पहने मेरे कमरेकी तरफ आरहा है, और उसके शरीरमेंसे लोहू चू रहा है। उसके साथ जेलका दारोगा भी था। जब मै ने उसे पहचाना, कि वह कामिनी है, तब तो मैं डरके मारे भौचक्का हो गया और चिल्ला उठा—"अरे बेटा' यह क्या? हथकडी और ये घाव! हाय, यही तेरा सुख है

लडका बोला—"हैं! तुम्हें क्या हो गया? तुम्हारा साहस कहां गया? मेरे भाग्यमें तो दुख भोगना बदा है। तुम क्यों रोते हो। मैंने तो ऐसा काम किया है कि मैं जरूर मारा जाऊंगा। देखो, माका पत्र पाते ही मैंने लक्ष्मीकान्तको लिखा, कि मैं तुमसे लडने आता हूं। बस, फिर क्या था।

चार आदमी भेजकर उसने मुझे गिरफ्तार करा लिया। एकको तो मैंने खूब मारा पीटा, पर तीन ने मुझे पकड लिया। अब मरना तो है ही। तुम ऐसी ऐसी बातें सुनाओ जिनसे दुःखमें धैर्य हो।"

मैंने कहा—"हा, सब सुनाऊँगा। अब मैं ससारके सब सुखोंसे विरक्त हो गया हूं। इस समय मैं ससारसे अपना सब नाता तोड़ता हूं। हम दोनों साथ ही मरेंगे। बेटा, अब तुझे यहा माफी मिलती नहीं दीखती। अब तो परमेश्वर ही तुझे माफ करेगा। बेटा, जब मैं इस ससारमें सुख दुःखका विचार करता हू, तब मुझे मालूम होता है, कि इसमें सुख भी बहुत है, पर दुःख उससे कहीं अधिक है। सारी दुनियामें हमें कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा, जिसकी कुछ इच्छा न हो, पर सैंकडों आदमी रोज आत्म-घात करते हैं। इससे हमें मालूम होता है, कि उन्हें आशा भी कुछ नहीं रहती है। हम पूरे सुखी नहीं हो सकते, पर दुःखी हो सकते हैं। दुनियामें सिर्फ धर्मसे ही हमारे चित्तको सतोष होता है। यद्यपि धर्मसे सबका



अठारहवां अध्याय ।



थोडी देर बाद दारोगाने मुझसे कहा—"आप मुझसे नाराज न हों। जो कुछ मैं कर रहा हू, मेरा कर्तव्य है। आपके लडकेको मैं रहनेके लिए दूसरी अच्छी जगह दिये देता हू। आपके पास वह नहीं रह सकता, पर रोज सुबह आपसे मिल जाया करेगा।" मैंने धन्यवाद देकर लडकेको उसके साथ कर दिया।

फिर मैं लेट गया और एक बच्चा मेरे पास बैठकर पढने लगा। इतने ही में जगमोहन सहाय आकर कहने लगा—

"तुम्हारी लडकीका पता लग गया है। जो उसे लेगए थे, वे घण्टे सवा घण्टे बाद एक सराय में कुछ खाने पीनेको ठहरे। वहा उनको एक भलेमानसने देख लिया—"

वह सब हाल कहने भी नहीं पाया था, कि दारोगाने आकर कहा—"तुम्हारी लड़की मिल गई।"

इतनेमें कुमुद दौडता आया, और उसने कहा—"सुधा बाहर है। मदनमोहनके साथ आरही है।"

इतने ही में सुधा भी आ गई। वह खुशीके मारे पागल सी हो रही थी। उसने कहा—

"ये ही हैं जिन्होंने मेरी रक्षा की। अगर ये न आते, तो न मालूम मेरा क्या हाल होता। इनके मुझपर बडे अहसान हैं।"

मैंने कहा—"धन्य है, पण्डित मदनमोहन जी, हम आपके बडे ही आभारी हैं, पर खेद है, कि यह स्थान—हमारी पहलेकी और अबकी दशामें बडा अन्तर है। आपने हमेशा हमारे साथ भलाई की है। बहुत दिन हुए तभी हमें अपनी गलती मालूम हो गई थी, और आपका अहसान न माननेका हमें बडा पछतावा था। उस दिन जो हमने आपका निरादर किया, तबसे मेरी हिम्मत आपके सन्मुख होनेको नहीं पडती है। पर आप क्षमा कीजिए, क्योंकि इन दिनों मैं बडी मुसीबतमें हू। एक बेईमानने धोखा देकर मेरा सत्यानाश कर दिया।"

मदनमोहनने कहा—"यह क्या, जब मैं कभी आपसे नाराज ही नहीं था तब माफ क्या कर दूँ!

उस समय मुझे आपकी गलती कुछ कुछ मालूम थी अवश्य पर आपका मुझपर जो सन्देह था उसे मैं आपके चित्तसे हटा नहीं सकता था, इसलिए मैंने आपसे कुछ नहीं कहा।"

"मेरा हमेशा यही खयाल रहा, कि आप बड़े सच्चे दिलके आदमी हैं। पर अब मुझे इसका और सबूत मिल गया। अच्छा, सुधा, बतला तो सही इन्होंने तुझे कैसे बचाया? कौन बेईमान तुझे पकड ले गए थे?"

सुधाने कहा—"मुझे अबतक खबर नहीं, कि कौन बदमाश मुझे पकड ले गए थे। अपनी माके साथ मैं बाहर टहल रही थी, कि इतनेमें ही कोई हमारे पीछेसे आया और मैं चिल्लाऊँ चिल्लाऊँ कि उसने मुझे गाडीमें बैठाकर घोडे दौडा दिए। रास्तेमें मुझे बहुतसे आदमी मिले जिनसे मैंने रोकर और चिल्ला-कर बचानेको कहा, पर किसीने मेरी एक न सुनी। फिर उस बदमाशने मुझे खूब धमकाया, कि रोना बन्द करो, नहीं तो मैं तुम्हें बडी तकलीफ दूंगा। इतने ही में मैंने देखा तो पण्डित मदनमोहन अपना वही पुराना लट्ठ हाथमें लिये चले आ रहे हैं, जिसे देख देखकर हम हँसा करते थे। झट मैंने

नाम लेकर इन्हें बुलाया और मदद मांगी। मुझे रोती और चिल्लाती देखकर इन्होंने बड़े जोरसे कोचवानसे फौरन गाडी रोकनेको कहा। उसने घोड़ोंको और भी तेज कर दिया। अब मैंने सोचा, कि ये पीछे रह जायँगे, पर देखती क्या हूँ कि ये घोड़ोंके साथ साथ दौड रहे हैं। एक लठ मारकर इन्होंने कोचवानको जमीनपर गिरा दिया। उसके गिरते ही घोडे अपने आप खड़े हो गए। तब तो उस बदमाशने तलवार निकाल ली और इनको मारनेकी धमकी दी, लेकिन इन्होंने लठ चलाकर उसकी तलवारके टुकडे टुकडे कर डाले, और लगभग चालीस पचास गज तक ये उसके पीछे पीछे दौडे गए, पर वह भाग गया। कोचवान भी भागा चाहता था, पर इन्होंने कहा, कि जहासे लाए हो वहीं इसे ले चलो, नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे। आखिर उसे चलना पडा। लठ लगनेसे उसको बडी चोट लगी थी। रास्ते भर वह दर्दकी शिकायत करता रहा। इससे इनको उसपर रहम आया और इन्होंने, मेरे कहनेसे, बीचमें एक अड्डेपरसे दूसरा कोचवान ले लिया।"

मैंने कहा—"पण्डितजी, हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं। हम इस समय आपकी कुछ खातिर नहीं कर सकते, पर हमारा चित्त आपके अहसानसे भर गया है। हम बहुत ग़रीब हैं। आपको इस भलाईका कुछ बदला नहीं दे सकते।"

फिर मैंने पासकी एक दूकानसे खानेको मँगवाया। लड़कीको अब तक कामिनीकी मुसीबतकी खबर न थी, पर अब मुझसे कहे बिना न रहा गया। मैंने सब हाल कहकर लड़केको भी खानेको बुलवाया। जगमोहन सहाय भी बुलाए गए। मदनमोहनने लड़केका नाम पूछा। इतनेमें ही वह खुद आगया। मैंने उससे कहा—"देखो, इन्होंने तुम्हारी बहनको बचाया है। इनके हम बड़े अहसानमन्द हैं।"

मदनमोहनको देख लड़का बहुत देरतक चुपचाप रहा और उसकी ओर देखा किया। फिर मदन-मोहन कुछ कहनेको था, कि एक नौकरने आकर कहा—

"जो महाशय अभी यहा पधारे हैं, उनसे मिलनेके लिए बाहर एक रईस गाड़ीमें आए हैं। उन्होंने पूछा है, कि कब सेवामें हाजिर हों।"

मदनमोहनने कहा—"उनसे कहो जरा ठहरें।" फिर लड़केसे कहा—

"मुझे मालूम होता है, कि तुमने फिर वही कसूर किया है जिसके कारण तुमको एक बार सजा मिल चुकी थी।"

मैंने कहा—"अफ़सोस! इसे माफ करो। इसने जो कुछ किया अपनी मांके कहनेसे किया। यह देखो इसकी माँ की चिट्ठी।"

मदनमोहनने चिट्ठी लेकर पढ़ी, और कहा—"अच्छा, खैर, मैंने इसे माफ किया। कामिनी! मुझे यहा देखकर तुम्हें आश्चर्य क्यों होता है? मैं तो अकसर जेलखाना देखने आया करता हूं। मैं देखने आया हू कि, इस भलेमानसके साथ इन्साफ हुआ या नहीं। बहुत दिनसे छुपकर मैं तुम्हारे बापकी हालत देख रहा हूं। मैंने लक्ष्मीकान्तको बुलवाया था। वही बाहर आगया है। पर, विना उसका कसूर सावित हुए, मैं उसे सजा नहीं दूंगा, क्योंकि कमलाकान्तने अबतक बे फायदे किसीको सजा नहीं दी।"

अब हमें मालूम हुआ, कि जिसके साथ हम रोज

बात-चीत किया करते थे वे पण्डित कमलाकान्त हैं। मदनमोहन नामधारी कमलाकान्तके गुण कौन नहीं जानता। सब लोग उनका नाम सुनकर चौंक उठे। तारा गडबडा कर बोली—

"महाराज, आपसे क्षमाभिक्षा तो धृष्टता है। जसा मैंने पिछली बार आपका निरादर किया और आपके साथ परिहास किया उसे आप कभी क्षमा नहीं कर सकते।"

कमलाकान्त बोले—"अगर तुमने परिहास किया, तो मैंने भी तुम्हें जवाब दिया। जैसा तुम्हारा परिहास होता था वैसाही मेरा जवाब होता था। मैं तुममेंसे किसीसे नाराज नहीं। हां, बेशक उससे नाराज ज़रूर हू जिसने तुम्हारी बेटीको दु ख दिया। अच्छा, सुवा, तुम उसे पहचानती हो?"

"ठीक ठीक तो नहीं पहचानती पर उसकी भौंह के पास एक निशान है।"

जगमोहन सहायने पूछा—"तो क्या उसके बाल लाल थे?"

"हा।"

फिर जगमोहन सहायने कमलाकान्तसे कहा—"क्या उसके पैर लम्बे थे ?"

उन्होंने कहा—"पैरोंकी लम्बाईका तो मैंने खयाल नहीं किया, पर वह बहुत तेजीसे चलता था।"

जगमोहन सहायने कहा—"तो वही होगा जिसने सीतानाथ पहलवानको हराया है। वह बडा भागनेवाला है। उसका नाम मुरारी है। मैं उसे खूब जानता हू। अगर आप दो आदमी मेरे साथ करदे, तो मैं उसे पकड लाऊ।"

कमलाकान्तने जेलके दारोगाको बुलाकर कहा—

"क्या तुम मुझे पहचानते हो ?"

"महाराज, भला आपको कौन नही पहचानता"।

"तो तुम कृपाकर जगमोहन सहायको दो नौकरों के साथ, मेरे कहनेसे जाने दो। मैं इनकी जमानत करताहू।"

"आप इन्हें चाहे जहा भेजदे।"

फिर जगमोहन सहाय दो नोकरोंको साथ लेकर चल दिया। इतनेमेंही बालसरुप आकर कमला-कान्तके कन्धेपर चढ बैठा। तारा उसे पीटाही

चाहती थी कि, उन्होंने बचाकर अपनी गोदमें बैठा लिया। उसे और दिगम्बरको उन्होंने रेवड़िया दीं, जिन्हें बच्चोंने बड़े मजेसे खाया, क्योंकि सुबह इन्हें खानेको बहुत कम मिला था।

अब सब लोग खानेको बैठे। पर, मेरी बाँहमें बड़ा दर्द था। इसलिए पहले कमलाकान्तने कुछ दवा पासके अत्तारकी दुकानसे मँगाकर उसमें लगा दी। उससे मुझे बहुत आराम मालूम हुआ। हम भोजन समाप्त करने ही को थे, कि लक्ष्मीकान्तके नौकरने आकर कहा—

"सरकार आपके पास आया चाहते हैं।"

कमलाकान्तने कहा—"भेजदो।"



उन्नीसवां अध्याय ।



लक्ष्मीकान्त मुसकुराता हुआ भीतर आया। कमलाकान्त उससे बहुत नाराज होकर कहने लगे—

"मुझे तुम्हारे बुरे चाल-चलनके बहुतसे सबूत मिल गए हैं। पहले तो तुमने इस भलेमानसके साथ मित्रताकी, और फिर इसे इतना दुःख दिया। इसकी मिहमानदारीके बदलेमें तुम इसकी लडकी-को भगा ले गए और इसे जेलमें भिजवाया।"

लक्ष्मीकान्त बोला—"जिस कामके लिए आपने मुझे मना कर दिया था उसे मैं दुबारा कैसे कर सकता था? मैंने कोई खराब काम नहीं किया। इसने मुझपर वृथा शक किया। जब मैं इसे समझाने गया तब यह मुझसे गाली-गलौज करने लगा। और, इसके जेलखानेमें आनेका हाल तो मेरे आम-मुख्त्यारोंको मालूम होगा। मुझे इससे कुछ मतलब नहीं। अगर यह रुपया नहीं चुका सकता, तो इससे

चाहती थी कि, उन्होंने बचाकर अपनी गोदमें बैठा लिया। उसे और दिगम्बरको उन्होंने रेवडियां दीं, जिन्हें बच्चोंने बड़े मजेसे खाया, क्योंकि सुबह इन्हें खानेको बहुत कम मिला था।

अब सब लोग खानेको बैठे। पर, मेरी बाँहमें बड़ा दर्द था। इसलिए पहले कमलाकान्तने कुछ दवा पासके अत्तारकी दुकानसे मँगाकर उसमे लगा दी। उससे मुझे बहुत आराम मालूम हुआ। हम भोजन समाप्त करने ही को थे, कि लक्ष्मीकान्तके नौकरने आकर कहा—

"सरकार आपके पास आया चाहते हैं।"

कमलाकान्तने कहा—"भेजदो।"

———



उन्नीसवां अध्याय ।



लक्ष्मीकान्त मुसकुराता हुआ भीतर आया। कमलाकान्त उससे बहुत नाराज होकर कहने लगे—

"मुझे तुम्हारे बुरे चाल-चलनके बहुतसे सबूत मिल गए हैं। पहले तो तुमने इस भलेमानसके साथ मित्रताकी, और फिर इसे इतना दुःख दिया। इसकी मिहमानदारीके बदलेमें तुम इसकी लड़की-को भगा ले गए और इसे जेलमें भिजवाया।"

लक्ष्मीकान्त बोला—"जिस कामके लिए आपने मुझे मना कर दिया था उसे मैं दुबारा कैसे कर सकता था? मैंने कोई खराब काम नहीं किया। इसने मुझपर वृथा शक किया। जब मैं इसे समझाने गया तब यह मुझसे गाली-गलौज करने लगा। और, इसके जेलखानेमें आनेका हाल तो मेरे आम-मुख्त्यारोंको मालूम होगा। मुझे इससे कुछ मतलब नहीं। अगर यह रुपया नहीं चुका सकता, तो इससे

वसूल करना उनका काम है। जैसे वे चाहें वसूल करें। इसमें मुझे ज़रा भी अन्याय नहीं दीखता।"

"अगर यह बात है, तो तुम्हारा कुछ क़सूर नहीं; पर तुम चाहते तो इसे जेलखाने भेजनेसे बचा सकते थे।"

"मैं कहता हूं, अगर यह मेरी एक बात भी झूठी साबित कर दे, तो मैं इसको कुछ इनाम दूं। जो कुछ मैंने कहा है उसके बहुतसे गवाह मौजूद हैं। यह तो मेरे आचरणकी बात हुई। पर इसने जो जो बुराइयां मेरे साथ की हैं उन्हें यदि मैं आपके कहनेसे माफ़ करदूं, तोभी इसने जो आपसे मेरी शिकायतकी और आपकी निगाहमें मुझे गिराने की कोशिश की, इस बातको मैं कभी माफ नहीं कर सकता। इसके लड़केने मुझे मार डालनेकी धमकी दी और मेरे एक नौकरको खूब पीटा भी।"

ताराने कहा—"अरे बदमाश, तुझे अभी सजा नहीं मिली इसीलिए तू बक रहा है। अच्छा पंडित कमलाकान्तजी हमारी रक्षा करेंगे।"

कमलाकान्त बोले—"मुझे तुमारी रक्षाकी तुम

से कम चिन्ता नहीं है। पर तुम्हारे लडकेका अप-राध तो स्पष्ट है। अगर मेरा भतीजा—" बात समाप्त होनेके पहले ही जगमोहन सहायके और जेलके दो नौकरोंके आनेसे हमारा ध्यान उधर चला गया। वे एक लंबे आदमीको साथ लेकर भीतर आए। जगमोहन सहायने उसे दिखाकर कहा—

"लीजिए, महाराज, हम इसे पकड लाए। अगर कोई फासीके लायक है तो यह है।"

उसे और जगमोहन सहायको देखते ही लक्ष्मी-कान्त डरके मारे काँपने लगा उसके चहरेका रङ्ग बदल गया। जगमोहन सहायने उससे कहा—

"हैं, क्या आप अपने पुराने मित्र जगमोहन सहायको और मुरारीको नही पहचानते ? क्या इसी तरह बडे आदमी अपने मित्रोंको भूल जाया करते हैं ? हम तो आपको कभी न भूलेंगे। (कमलाकात की ओर इशारा करके) महाराज, इस मुरारीने सब कबूल दिया है। इसके बडी चोट आई है। यह कहता है कि लक्ष्मीकान्तने मुझे भेजा था। ये कपडे, जिनसे यह भलामानस लग रहा है, इसे लक्ष्मीकात ने ही दिए हैं दोनोंमें आपसमें यह ते हो गया था,

कि मुरारी हमारे गुसाईंजी की लडकीको किसी हिफाजतकी जगह लेजोकर धमकावे और डरावे। वहा लक्ष्मीकान्त अचानक आकर उसकी रक्षा करे। फिर मुरारी लक्ष्मीकांतसे कुछ देर तक झगड कर भाग जाय। इस प्रकार लडकीकी रक्षा करनेसे लक्ष्मीकातको उसे अपने वशमें करनेका अच्छा अवसर मिल जायगा।"

जब कमलाकातने लक्ष्मीकांतके कपडे पहचान लिए और मुरारीने सब बाते साफ साफ कहदीं, तब उन्होंने कहा—

"यह तो आस्तीनका सांप निकला! तिसपर भी इन्साफ चाहता है। अच्छा, इन्साफ ही होगा"

यह सुन लक्ष्मीकात बडी नम्रतासे कहने लगा—

"ऐसे बदमाशोंकी गवाही मेरे खिलाफ नहीं लेनी चाहिए, मेरे नौकरोंसे क्यों न पूछा जाय?

कमलाकातने कहा—"तुमारे नौकर! बदमाश उनको अपना मत बतला—अच्छा, हम सुनें तो सही वे क्या कहते हैं पहले बट्टेलालको बुलाओ"

बट्टेलाल बुलाया गया। उसने लक्ष्मीकातके

चहरेसे ही पहचान लिया कि अब उसकी नहीं चलेगी। कमलाकान्तने पूछा—

"क्या तुम मुरारीको जानते हो? क्या तुमने इसे कभी अपने मालिकके साथ, उसीके कपडे पहने, देखा है।"

वट्टेलालने कहा—"हा, महाराज, मैं इसे खूब जानता हू। मैंने हजारों वार इसे अपने मालिकके साथ देखा है। यह मेरे मालिककी बुरे कामोंमें मदद किया करता था।"

लक्ष्मीकान्तने कहा— "हैं, मेरे सामने ऐसी बात कहते हो!"

वट्टेलालने कहा—"हर एक आदमीके सामने कह सकता हू। सच बात तो यह है, कि न तो मुझे आपके काम अच्छे लगते थे, और न मेरे दिलमें आपके लिए इज्जत थी।"

जगमोहन सहायने कहा—अच्छा, यह भी वतलाओ, मेरी बाबत तुम क्या जानते हो।"

वट्टेलालने कहा—"तुम्हारी बाबत भी मैंने कुछ अच्छी बातें नहीं सुनीं। तुम भी हमारे मालिकके सहायक थे।"

कमलाकान्तने (लक्ष्मीकान्तसे) कहा—

"वाह, तुम अपना बेकसूर होना साबित करनेको अच्छा गवाह लाए हो! अरे कुल-कलङ्क, ऐसे ऐसे बदमाशोंके साथ रहता है! अच्छा, बट्टेलाल, तुम बतलाओ, क्या इसने गुसाईंजीकी लडकीको भगालेजानेके लिए मुरारीको भेजा था?"

बट्टेलालने कहा—"हां महाराज।"

कमलकान्तने कहा—"तब तो इसका कसूर साबित हो गया। अच्छा, दारोगाजी, मेरे कहनेसे इस लडके कामिनीकी हथकडी खोल दो। इसका मैं जिम्मेदार हू। जिस हाकिमके हुक्मसे यह यहां लाया गया है उसे मैं सच्चा हाल समझा दूंगा। और वह लडकी कहा है? उसे तो बुलाओ। उससे भी तो पूछें, कि इसने उसे कैसे बहकाया।"

इतने ही में अकस्मात् नारायणदास वहां आए। कमलाकान्तको तथा और सबको वहां देखकर उन्हें बडा आश्चर्य हुआ। पीछे मालूम हुआ, कि नारायणदास घरसे लाडलीप्रसादके यहा जा रहे थे। रास्तेमें जेलखानेके पास ही सरायमें ठहरे। वहा खिडकीसे उन्होंने मेरे एक बच्चेको सडकपर खेलते

देख लिया और नौकर भेजकर उसको बुलवाया। उससे उन्हें हमारी मुसीबतोंका हाल तो मालूम हो गया था, पर लक्ष्मीकान्तके आनेका कुछ हाल मालूम नहीं हुआ था। यहा जब उन्होंने सब हाल सुना, तब लक्ष्मीकान्तके साथ ललिताका व्याह करनेसे इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा—

"हम अच्छे बचे, नहीं तो हमारी लडकीको जन्मभर मुसीबत भुगतनी पडती। अब तो हम कामिनीके साथ ही उसका व्याह करेंगे।"

इन सब बातोंसे लक्ष्मीकान्तकी आशापर पानी फिर गया। उसने कहा—

"नारायण जी, अब आप सगाई नहीं छोड सकते। जो रुपया आपने उसके लिए मेरे नाम लिख दिया है, उसका मालिक तो मैं हो चुका।"

नारायणदासने कहा—"रुपएकी कुछ परवाह नहीं। मैं तुम्हारे साथ व्याह नहीं करूंगा। प्रेमजी, अगर आप यह वादा करें, कि जब आपके पास रुपया होगा, तब पाचसौ रुपए आप मेरी लडकीके नामसे जमा करादेंगे, तो मैं अभी आपके लडकेके साथ व्याह पक्का कर दूं।"

मैं इस वातपर राजी हो गया। लक्ष्मीकान्तने कहा— "चूल्हेमें जाने दो, मुझे रुपया तो मिला।"

जगमोहन सहायने कहा—"नहीं, कभी नहीं मिल सकता। क्यों, महाराजा कमलाकान्तजी, क्या वह रुपया इसे ही मिलेगा ?"

कमलाकान्तने कहा—"नहीं कभी नहीं।"

जगमोहनसहायने कहा—"महाराज, एक ब्याह तो यह कर चुका है। अब वेदिप छिपाकर एक और किया चाहता है।"

लक्ष्मीकान्तने कहा—"नहीं, चाचाजी, यह झूठ बोलता है। मैंने ब्याह नहीं किया।"

जगमोहन सहायने कहा—"महाराज, जब हमने देखा, कि प्रेमजीका किसी प्रकार छुटकारा नहीं, तब हमने इनसे तो कह दिया, कि प्रभा मर गई, पर इनकी स्त्रीकी सलाहसे हमने उसके मामाके यहां भेजकर लक्ष्मीकान्तके साथ चुप चाप उसका ब्याह करा दिया। क्यों जनाब लक्ष्मीकान्त जी ?"

यह सुन लक्ष्मीकान्त बड़ा शरमिन्दा हुआ और कमलाकान्तके पैरोंमें गिरकर माफी मांगने लगा। कमलाकान्तने कहा—"तू बड़ा पापी है। तू कस-

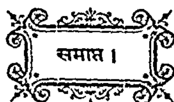
णाके लायक नहीं। अच्छा, तुझे सिर्फ खाने और कपड़ेके लायक खर्च मिलेगा, और तेरी जायदादका तिहाई हिस्सा तेरी स्त्रीके नाम होगा।"

लड़कीके जीने और जायदाद मिलनेका हाल सुनकर हम फूले न समाए, खुशीके मारे लोट पोट हो गए। लक्ष्मीकान्त शरमिन्दा होकर और कमलाकान्तजीसे इजाजत लेकर चला गया। फिर कमलाकान्तने जगमोहन सहायको दस रुपए इनाम दिए, और वल्लभदेवके साथ सुधाका ब्याह तै करा दिया। इस अवसर पर कमलाकान्तने ५०) रुपए और नारायणदासने २५) रुपए कैदियोंको बांटे। मैंने परमेश्वरको लाखों धन्यवाद दिये—और मेरे पास देनेको क्या धरा था?

दूसरे दिन ज्योंही मेरी आँख खुली, मैं क्या देखता हूँ, कि कामिनी मेरे पास बैठा है। उसने कहा—"जिस महाजनके पास हमारा रुपया डूब गया था वह पकड़ा गया है, और उसके पास बहुत माल मिला है।"

वह इतना ही कहने पाया, कि कमलाकान्तजी पधारे। उन्होंने भी कामिनीकी बातका समर्थन किया।

फिर हम अपने घर लौटे और ब्याहकी तैयारियां होने लगीं। फतेचन्द और उसके कुनबेके सब लोगोंको मैंने ब्याहमें शामिल होनेको बुलाया। मेरी रिहाईका हाल सुनकर बहुतसे गांव वाले मुझसे मिलने आए। मेरी सब कामना पूरी हुई, और परमेश्वरको मैंने हृदयसे धन्यवाद दिया।



कपाल कुण्डला।

वङ्गालके अद्वितीय उपन्यास लेखक स्वर्गीय वङ्किम चन्द्र चटर्जीके लिखे हुए उपन्यासोंमें यह उपन्यास सर्वश्रेष्ठ है। संसारके छल-छद्मसे रहित व्यक्तिकी सरलता कैसी लोकोत्तर आनन्द प्रदायिनी होती है, और पाषाण हृदय निष्ठुर व्यक्तिका स्वार्थ पूर्ण हृदय भी प्रेमका वशवर्ती होकर कैसा निस्वार्थ हो जाता है, यदि यह जानना हो, और रस और अलङ्कारके सागरमें गोता लगाना हो, तो इस गद्य-काव्यको अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥≈) डाकव्यय अलग।

भाग्य चक्र।

इसमें पाप और पुण्य, न्याय और अन्यायकी प्रतिद्वन्दिता और उनके परिणामोंका बड़ा ही मनोरम खाका खींचा गया है। भाग्य और पुरुषार्थके द्वन्द युद्धका ऐसा सजीव चित्र और कहीं मिलना असम्भव है। पापके अवश्यम्भावी रोमाञ्चकारी परिणामके दिग्दर्शन द्वारा मनुष्यको पापसे घृणा कराकर पुण्य-पथकी ओर अग्रसर करनेके लिये इसके समान और पुस्तक नहीं। पृष्ट संख्या पौने तीन सौ। मूल्य १) डाकव्यय अलग।
